हिन्दी दैनिक
प्रत्यूष नवबिहार
जोहार
रांची संस्करण
रांची, पटना और दिल्ली से प्रकाशित
www.tezraftarlive.com
Email-navbiharjh@gmail.com
रांची • सोमवार • 22.09.2025 • वर्ष : 16 • अंक : 60 • पृष्ठ : 12 • आमंत्रण मूल्य : ~~3 रुपये~~ 2 रुपये

प्रधानमंत्री ने राष्ट्र के नाम संदेश में कहा-

'नागरिक देवो भव': मोदी

भारतीयों के बचेंगे ढाई लाख करोड़ रुपये

एजेंसी

नई दिल्ली : प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने रविवार को नवरात्रों की शुरूआत के एक दिन पहले राष्ट्र के नाम संबोधन में जीएसटी रिफॉर्म को 'बचत उत्सव' की संज्ञा दी। उन्होंने कहा कि पिछले एक साल में 'नागरिक देवो भवः' की सोच के साथ सरकार की ओर से किए गए टैक्स रिफॉर्म से नागरिकों के ढाई लाख करोड़ रुपए बचे हैं। राष्ट्र के नाम अपने संबोधन में प्रधानमंत्री ने कहा कि जीएसटी रिफॉर्म से रोजमर्रा की ज्यादातर जरूरत की वस्तुएं सस्ती हो जाएंगी। उन्होंने कहा कि ज्यादातर सामान अब 5 प्रतिशत के टैक्स दायरे में आएगा। इससे खाना-पीना और यहां तक कि घूमना-फिरना भी सस्ता हो जाएगा। इस दौरान उन्होंने एक बार फिर स्वदेशी वस्तुओं की अपील करते हुए कहा कि देश के लोग भारत में बनी वस्तुओं को प्राथमिकता दें। उन्होंने कहा कि विकसित भारत के लिए आत्मनिर्भर भारत बेहद जरूरी है। उन्होंने कहा कि देश की स्वतंत्रता को स्वदेशी के मंत्र से ताकत मिली। वैसे ही देश की समृद्धि को भी स्वदेशी के मंत्र से ही शक्ति मिलेगी। प्रधानमंत्री ने आत्मनिर्भर भारत की दिशा में छोटे, मझौल एवं लघु उद्योगों (एमएसएमई) की भूमिका को रेखांकित किया और उन्हें देश की आवश्यकताओं की पूर्ति के साथ-साथ ही वैश्विक स्तर पर गुणवत्तापूर्ण सामग्री उपलब्ध कराने की दिशा में काम करने के लिए प्रेरित किया। उन्होंने कहा कि भारत के स्वर्णिम काल में भी इन्हीं उद्योगों ने भारत की साख बनाई थी। उन्हें भारत का वही गौरव वापस लौटना है। प्रधानमंत्री ने बताया कि किस तरह से जीएसटी आने से पहले देश में एक स्थान से दूसरे स्थान तक सामान भेजना महंगा और कठिन होता था। बेंगलुरु से हैदराबाद सामग्री भेजने की बजाय बेंगलुरु से यूरोप और यूरोप से हैदराबाद भेजना ज्यादा आसान होता था। कई तरह के टैक्स जंजाल थे, जिसकी कीमत आखिरकार ग्राहक को उठानी पड़ती थी। उनकी सरकार ने आते ही सभी हितधारकों से बातचीत कर जीएसटी लाए और इसमें लगातार रिफॉर्म जारी है। उन्होंने राज्य सरकारों से आग्रह किया कि वे अपने-अपने राज्यों में विनिर्माण गतिविधियों में तेजी लाकर आत्मनिर्भर भारत पहल और स्वदेशी कार्यक्रम का सक्रिय समर्थन करें। निवेश आकर्षित करने के लिए अनुकूल वातावरण बनाने पर ध्यान केंद्रित करें।

कलश स्थापना के साथ आज से नवरात्रि का शुभारंभ

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

रांची : आज से पूरे देशभर में नवरात्रि की शुरूआत हो गई है। इस अवसर पर कलश स्थापना के साथ माता दुर्गा की आराधना का सिलसिला शुरू हुआ। नवरात्रि हिंदू धर्म का एक अत्यंत महत्वपूर्ण पर्व है, जो 9 दिनों तक चलता है और इसमें विशेष रूप से शक्ति की उपासना की जाती है। नवरात्रि के पहले दिन, घरों और मंदिरों में कलश स्थापना की जाती है, जिससे घर-परिवार में सुख, समृद्धि और शांति की कामना की जाती है। इस दौरान लोग व्रत रखते हैं, उपवास करते हैं और माता दुर्गा के विभिन्न रूपों की पूजा करते हैं। हर दिन अलग-अलग रूप में माता की पूजा होती है, जिनमें शैलपुत्री, ब्रह्मचारिणी, चंद्रघंटा, कुष्मांडा, स्कंदमाता, कात्यायनी, कालरात्रि, महागौरी और सिद्धिदात्री शामिल हैं। नवरात्रि का पर्व विशेष रूप से महिलाओं के

लिए बहुत महत्वपूर्ण है और इसे शक्ति, समृद्धि और सामाजिक एकता के प्रतीक के रूप में मनाया जाता है। इस बार, श्रद्धालु मंदिरों में जाकर पूजा अर्चना कर रहे हैं, वहीं घरों में भी विशेष आयोजन किए जा रहे हैं। पूरे देश में इस पर्व को धूमधाम से मनाने की तैयारी पूरी हो चुकी है। कुछ स्थानों पर गरबा, डांडिया और रामलीला जैसे सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन भी होता है। इस पवित्र पर्व के माध्यम से लोग आत्मिक उन्नति और समाज में सकारात्मक ऊर्जा का संचार करने की दिशा में आगे बढ़ते हैं।

एक नजर

चुटूपालू घाटी में पलटी बस, घंटों रहा एनएच-33 जाम

रामगढ़ : रामगढ़ रांची राष्ट्रीय राजमार्ग 33 पर चुटूपालू घाटी में रविवार को एक यात्री बस पलट गई। इस हादसे में एक बाइक सवार की जान बाल बाल बची। इस हादसे के बाद राष्ट्रीय राजमार्ग का दोनों लेन जाम हो गया। घटना की सूचना मिलते ही रामगढ़ पुलिस घटनास्थल पर पहुंची और पलटी हुई बस को हटाने का प्रयास किया। जानकारी के अनुसार झारखंड पर्यटन नामक बस(बीआर 09 पीआर 7720) घाटी में ही ब्रेकडाउन हो गया था। इस वजह से बस पर सवार सभी यात्रियों को उतार कर, उस बस की मरम्मत की जा रही थी। इसी दौरान अचानक गाड़ी में लगा ब्रेक फेल हो गया और वह पीछे की तरफ लुढ़कने लगा। इसी दौरान डिवाइडर से टकराकर बस पलट गई। इस वजह से सड़क जाम हो गया।

भारत में अवैध रूप से रह रहे दो बांग्लादेशी नागारिक गिरफ्तार

नई दिल्ली : दक्षिण पश्चिम जिला पुलिस की स्पेशल स्टाफ की टीम ने भारत में अवैध रूप से रह रहे दो बांग्लादेशी नागरिकों को गिरफ्तार किया है। आरोपी शिशिर ह्यूबर्ट रोजारियो और मोहम्मद तौहीदुर रहमान 2014 में वीजा लेकर भारत आए थे। लेकिन वीजा खत्म होने के बाद वापस नहीं गए और दिल्ली के अलग अलग हिस्सों में रहकर नौकरी करने लगे। फिलहाल पुलिस ने सभी औपचारिकताएं पूरी करने के बाद एफआरआरओ की मदद से आरोपितों को वापस बांग्लादेश भेजने की तैयारी शुरू कर दी है। पुलिस उपायुक्त अमित गोयल ने बताया कि स्पेशल स्टाफ के इंस्पेक्टर विजय बालियान, एसआई विक्रम की टीम को महिपालपुर इलाके में किराए पर घर की तलाश कर रहे कुछ संदिग्धों की सूचना मिली। हेड कांस्टेबल सतपाल और कांस्टेबल संजय को घर की तलाश कर रहे संदिग्धों की पहचान कर उनकी जानकारी जुटाने का काम सौंपा गया। संदिग्धों के बारे में जानकारी जुटाई गई तो पता चला कि संदिग्ध बांग्लादेशी नागरिक हैं और अवैध रूप से भारत में रह रहे हैं। पुलिस टीम ने तुरंत ट्रेप लगाकर आरोपियों को गिरफ्तार कर लिया। संदिग्ध व्यक्तियों पहचान संबंधी दस्तावेज मांगे और गहन पूछताछ की। दोनों वैध दस्तावेज नहीं दिखा सके, जांच में पता चला कि दोनों अवैध रूप से भारत में रह रहे थे।

ईडी व सीबीआई का अधिकारी बनकर ठगे करोड़ों रुपये मामला दर्ज

नई दिल्ली : दक्षिणी दिल्ली के हौजखास इलाके में जालसाजों ने ईडी व सीबीआई का अधिकारी बन पूर्व बैंकर को डिजिटल अरेस्ट कर 23 करोड़ रुपये ठग लिए। जालसाजों ने पीड़ित को मादक पदार्थ की तस्करी में लिप्त बताया। इसके बाद डिजिटल अरेस्ट कर फ्लैट से बाहर निकलने को मना कर दिया। ये सिलसिला एक महीने तक चलता रहा और पीड़ित ने आरोपितों के विभिन्न अकाउंट में रकम ट्रांसफर कर दी। फिलहाल पीड़ित की शिकायत पर दिल्ली पुलिस की आइएफएसओ यूनिट में एफआइआर दर्ज कर ली है। पुलिस ने ठगी के 12.11 करोड़ रुपये को बैंक खाते में फ्रीज करा लिया है और आरोपितों की तलाश में जुटी है।

कोयला व शराब घोटाला मामले में ईओडब्ल्यू ने 10 ठिकानों पर मारा छापा

एजेंसी

रायपुर : छत्तीसगढ़ के कोयला व शराब घोटाला मामले में ईओडब्ल्यू की टीम ने रविवार को बड़ी कार्रवाई करते हुए राजधानी रायपुर, बिलासपुर और दुर्ग में कई शराब कारोबारियों के घर दबिश दी गई है। प्रदेशभर में 10 ठिकानों पर ईओडब्ल्यू का छापा पड़ा है। शराब घोटाला मामले में ईओडब्ल्यू ने प्रदेश के 10 ठिकानों पर छापेमार कार्रवाई की है। रायपुर, दुर्ग और बिलासपुर में शराब कारोबारियों के घर छापा पड़ा है। राजधानी में तीन से चार ठिकानों पर दबिश दी गई है। रायपुरा स्थित शिव विहार कॉलोनी स्थित शराब कारोबारी अवधेश यादव के घर भी ईओडब्ल्यू की टीम पहुंची है, जहां दस्तावेजों की जांच कर रही है। इसी तरह दुर्ग और बिलासपुर में भी टीम ने छापामार की कार्रवाई कर जांच कर रही है। जांजगीर-चांपा जिले के अकलतरा में ईओडब्ल्यू की 12 सदस्यीय टीम ने खनिज अधिकारी के बेटे के ठिकानों पर दबिश दी है। यहां कोयला व्यापारी जयचंद कोसल के अंबेडकर चौक स्थित घर में छापामार की कार्रवाई की गई है। बताया जा रहा है कि जयचंद कोसल के पिता जांजगीर जिला में ही राजस्व विभाग में पदस्थ हैं। ईओडब्ल्यू की इस ताबड़तोड़ छापामार की कार्रवाई से एक बार फिर हड़कंप मचा हुआ है। उल्लेखनीय है कि, छत्तीसगढ़ की पूर्ववर्ती कांग्रेस सरकार में हुए शराब और कोयला घोटाले में पहले ही कई अधिकारी और कारोबारी जेल जा चुके है।

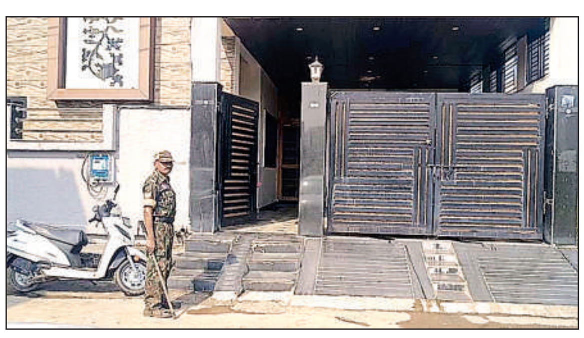

बगराम एयरबेस को लेकर अफगानिस्तान को ट्रंप की धमकी- वापस नहीं किया तो बहुत बुरा होगा

एजेंसी

वॉशिंगटन : अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने अफगानिस्तान के बगराम एयरबेस को लेकर एकबार फिर धमकी देते हुए कहा है कि अगर यह एयरबेस अमेरिका को वापस नहीं किया गया तो इसे नतीजे बहुत बुरे होंगे। हाल ही में अपनी ब्रिटेन यात्रा के दौरान ट्रंप ने कहा था कि उनकी सरकार अफगानिस्तान में बगराम एयरबेस को हासिल करने की कोशिश कर रही है।हालांकि अमेरिकी राष्ट्रपति की इन कोशिशों को चुनौती देते हुए अफगानिस्तान के मौजूदा तालिबान शासन की तरफ से कहा गया कि अफगान धरती ने विदेशी ताकतों को कभी स्वीकार नहीं किया।साल 2021 में अमेरिका ने अप्रत्याशित रूप से अपने सैनिकों को अफगानिस्तान से रातोंरात वापस बुला लिया था जिसके बाद से वहां तालिबान का शासन है। अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने अफगानिस्तान के तालिबान शासन को बगराम एयरबेस वापस नहीं करने पर बुरे नतीजे की धमकी दी है। उन्होंने ट्रुथ सोशल पर लिखा कि अफगानिस्तान बगराम एयरबेस को उसके निमार्ता यानी अमेरिका को वापस नहीं किया गया तो बहुत बुरा होगा। इससे पहले ब्रिटेन दौरे पर ट्रंप ने ब्रिटेन के प्रधानमंत्री कीर स्टार्मर के साथ प्रेस वार्ता में कहा कि अमेरिका बगराम एयरबेस को वापस पाने की कोशिश कर रहा है। ट्रंप का दावा है कि चीन के परमाणु हथियार बनाने वाले इलाके से यह बेस सिर्फ एक घंटे की दूरी पर है इसलिए अमेरिका के लिए रणनीतिक रूप से बहुत अहम है। अफगानिस्तान का सबसे बड़ा सैन्य ठिकाना रहे बगराम एयरबेस का अमेरिका ने बीस साल तक इस्तेमाल किया। साल 2021 में अमेरिकी सेना ने अप्रत्याशित रूप से भारी अफरातफरी के बीच रातोंरात अफगानिस्तान से वापसी की थी। जिसके बाद काबुल एयरपोर्ट पर मची अफरातफरी और आत्मघाती हमले में 13 अमेरिकी सैनिकों समेत 170 लोग मारे गए थे। इस पूरे घटनाक्रम के दौरान दो दशकों के बाद अफगानिस्तान में एकबार फिर तालिबान का शासन वापस लौटा। अमेरिका ने जिस अराजक तरीके से रातोंरात सारा साजो-सामान छोड़कर अपने सैनिकों को अफगानिस्तान से वापस बुलाया, उसकी भारी किरकिरी हुई थी। अब ट्रंप भी अपने पूर्ववर्ती बाइडेन शासन के इस फैसले की आलोचना करते हुए कहते हैं कि वे भी अपने कार्यकाल के दौरान अफगानिस्तान से अपने सैनिकों को निकालने वाले थे लेकिन ताकत और गरिमा के साथ।

क्या ट्रंप के युद्धविराम दावों, एच1बी वीजा और टैरिफ हमलों पर मोदी कुछ बोलेंगे : कांग्रेस

एजेंसी

नई दिल्ली : प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के राष्ट्र के नाम संबोधन से पहले कांग्रेस ने रविवार को उन पर निशाना साधते हुए पूछा कि क्या वह अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप के भारत-पाकिस्तान 'संघर्ष विराम' के दावों और लाखों भारतीय एच1बी वीजा धारकों की चिंताओं पर बात करेंगे या सिर्फ वही दोहराएंगे जो नई जीएसटी दरों पर पहले से ज्ञात है। प्रधानमंत्री मोदी रविवार शाम 5 बजे राष्ट्र को संबोधित करेंगे, उनके कार्यालय ने बताया। हालांकि, प्रधानमंत्री कार्यालय ने शाम को उनके संबोधन के विषय के बारे में कोई संकेत नहीं दिया। उनका संबोधन नवरात्रि की पूर्व संध्या पर होगा, जिस दिन से संशोधित जीएसटी दरें लागू होंगी और बड़ी संख्या में उत्पादों की कीमतें कम हो जाएंगी। कांग्रेस महासचिव (संचार प्रभारी) जयराम रमेश ने एक्स पर एक पोस्ट में कहा, जब प्रधानमंत्री राष्ट्र को संबोधित करने की तैयारी कर रहे हैं, वाशिंगटन डीसी में उनके अच्छे दोस्त ने एक बार फिर उनका मजाक उड़ाया है और दावा किया है - 42वीं बार - कि उन्होंने अमेरिका के साथ व्यापार बढ़ाकर ऑपरेशन सिंदूर को रोक दिया। रमेश ने कहा कि राष्ट्रपति ट्रम्प ने ये दावे न केवल अमेरिका में बल्कि सऊदी अरब, कतर और ब्रिटेन में भी किए हैं। कांग्रेस नेता ने कहा, ₹क्या प्रधानमंत्री इन दावों पर ध्यान देंगे और भारत-अमेरिका के बीच बढ़ते तनावपूर्ण संबंधों पर बात करेंगे? क्या वह लाखों भारतीय एच1बी वीजा धारकों की चिंताओं का समाधान करेंगे? क्या वह उन करोड़ों किसानों और श्रमिकों को कुछ आश्वासन देंगे, जो उनके अच्छे दोस्त के टैरिफ के कारण अपनी आजीविका खोने के कगार पर हैं? या फिर वह सिर्फ वही दोहराएंगे जो हम सभी जानते हैं कि हताशा में नई जीएसटी दरें तैयार की गईं और जो कल से प्रभावी हो जाएंगी? राष्ट्रपति ट्रम्प ने एक अचानक कदम उठाते हुए वार्षिक एच-1बी गैर-आप्रवासी वीजा शुल्क को बढ़ाकर 100,000 अमेरिकी डॉलर करने का आदेश दिया है, जिसका अमेरिका में कुशल भारतीय पेशेवरों पर बहुत अधिक प्रभाव पड़ेगा। हालांकि, ट्रम्प प्रशासन ने स्पष्ट किया है कि एच-1बी वीजा के लिए नया 100,000 अमेरिकी डॉलर का शुल्क एकमुश्त भुगतान है जो केवल नए आवेदनों पर लागू होता है और वर्तमान वीजा धारकों पर लागू नहीं होता है।

जुबीन गर्ग का अंतिम संस्कार 23 सितंबर को होगा : मुख्यमंत्री डॉ सरमा

एजेंसी

गुवाहाटी : असमिया दिलों पर दशकों से राज करने वाले पार्श्व गायक एवं अभिनेता जुबीन गर्ग का अंतिम संस्कार आगामी 23 सितंबर को राजधानी गुवाहाटी के बाहरी इलाका जोराबाट के दिसांग रिसोर्ट के पास कमारचुकी में 10 बीघा भूमि पर होगा। इसके लिए राज्य सरकार ने पूरी तैयारी कर ली है। इसकी जानकारी आज देर शाम असम लोक सेवा भवन में आयोजित एक संवाददाता सम्मेलन को संबोधित करते हुए मुख्यमंत्री डॉ हिमंत बिस्व सरमा ने दी। मुख्यमंत्री ने बताया कि जुबीन गर्ग की चिता भस्म को जोरहाट में भी ले जाया जाएगा। 23 सितंबर की सुबह 08 बजे से जुबीन गर्ग की अंतिम शव यात्रा निकलेगी। मुख्यमंत्री ने कहा कि 22 सितंबर यानी सोमवार को भी सरुसजाई स्टेडियम में जुबीन का पार्थिव शरीर प्रशंसकों के दर्शनार्थ मौजूद रहेगा। बीते कल भी लोग अपने प्रिय जुबीन का दर्शन कर उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित कर सकेंगे। ज्ञात हो कि राज्यभर से लोग जुबीन को श्रद्धांजलि अर्पित करने के लिए गुवाहाटी पहुंच रहे हैं। संवाददाता सम्मेलन में वीआईपी सिस्मट को लेकर मुख्यमंत्री ने अपनी नाराजगी व्यक्त की। उन्होंने कहा कि स्टेडियम के पिछले गेट को खोलकर मंत्री एवं वरिष्ठ अधिकारी सीधे पहुंच रहे थे। मौके पर वीआईपी लाउंज भी बनाया गया था। इसको देखने के बाद मुख्यमंत्री नाराज हो गये। उन्होंने जिलाधिकारी को तुरंत आदेश देकर स्टेडियम के पिछले गेट को बंद कराने के साथ ही वीआईपी लाउंज को भी हटवा दिया। अब सिर्फ एक ही गेट से सभी को आना-जाना पड़ रहा है। उल्लेखनीय है कि जुबीन का सिंगापुर में 19 सितंबर को आकस्मिक निधन हो गया था। सिंगापुर में ही पोस्टमार्टम करने के बाद उनके पार्थिव शव को बीती रात दिल्ली लाया गया, जहां से आज सुबह गुवाहाटी लाया गया।

जीएसटी की नई दरें आज से होंगी लागू

एजेंसी

नई दिल्ली : देश में वस्तु एवं सेवा कर (जीएसटी) की नई दरें नवरात्रि के पहले दिन सोमवार को यानी 22 सितंबर से लागू होंगी। ग्राहकों को जीएसटी सुधारों का फायदा देने के लिए कंपनियां लगातार अपने-अपने उत्पादों की कीमतें घटा रही हैं। ऐसे में आइए जानते हैं कि अब तक किन-किन कंपनियों ने जीएसटी सुधारों का लाभ ग्राहकों को देने का ऐलान किया है।

रसोई के सामान से लेकर दवाइयां, गाड़ियां तक होंगी सस्ती

जीएसटी की नई दरें लागू होने के बाद रसोई में इस्तेमाल होने वाले सामान से लेकर इलेक्ट्रॉनिक्स, दवाइयां और उपकरणों और वाहन तक लगभग 375 वस्तुएं 22 सितंबर से सस्ती हो जाएंगी। नवरात्रि के पहले दिन से लागू होने वाली जीएसटी दरों में मुख्य रूप से अब पांच और 18 फीसदी की दो कैटेगरी होंगी। हालांकि, लग्जरी और विलासितापूर्ण वाली वस्तुओं पर अलग से 40 फीसदी कर लगाया जाएगा। तंबाकू और संबंधित उत्पाद 28 फीसदी से अधिक उपकर की श्रेणी में बने रहेंगे। सरकार का निर्देश है कि नई दरें लागू होने के बाद व्यापार और उद्योग जगत इसका पूरा लाभ ग्राहकों तक पहुंचाएं।

टीवी के दाम 2,500 से 85 हजार रुपये तक घटेंगे

जीएसटी दरों में कटौती के बाद टेलीविजन (टीवी) निमार्ता कीमतों में 2,500 रुपये से 85 हजार रुपये तक की कमी करने जा रहे हैं। इससे उपभोक्ताओं को जीएसटी में कटौती का पूरा लाभ मिल सकेगा। साथ ही टीवी विनिमार्ताओं को सोमवार से शुरू होने वाले त्योहारी सीजन में अच्छी बिक्री की उम्मीद है। टेलीविजन और एसी, वॉशिंग मशीन जैसे कई उत्पादों की कीमतें कम हो गई हैं। 32 इंच से अधिक स्क्रीन साइज वाले टीवी सेट पर जीएसटी शुल्क मौजूदा 28 फीसदी से घटकर 18 फीसदी हो जाएगा।

अमूल ने दूध समेत अपने 700 उत्पादों के दाम घटाये

अमूल कंपनी ने 700 से ज्यादा उत्पादों की कीमतों में कटौती की है। इनमें घी, मक्खन, बेकरी एवं अन्य उत्पाद शामिल हैं। 610 रुपये किलो वाला घी अब 40 रुपये सस्ता होगा। 100 ग्राम मक्खन 62 रुपये के बजाय 58 रुपये व 200 ग्राम पनीर 99 रुपये के बजाय 95 रुपये में मिलेगा। टेट्रा पैकेज्ड दूध दो से तीन रुपये सस्ता होगा। इससे पूर्व मदर डेयरी भी दाम में जीएसटी कटौती की घोषणा कर चुकी है।

सस्ती हो जाएंगी कारें, दोपहिया के दाम भी घटेंगे

देश की प्रमुख वाहन कंपनियों मारुति सुजुकी, टाटा मोटर्स और हुंडई मोटर इंडिया सोमवार से अपनी कारों की कीमतें कम करने जा रही हैं। लक्जरी कार विनिमार्ता मर्सिडीज-बेंज और बीएमडब्ल्यू के साथ-साथ दोपहिया वाहन कंपनियां 22 सितंबर से लागू नए माल एवं सेवा कर (जीएसटी) के साथ कीमतें कम करने जा रही हैं। देश की सबसे बड़ी कार कंपनी मारुति सुजुकी ने अपनी कारों की कीमतों में 1.29 लाख रुपये तक की कटौती की है।

ई-गवर्नेंस पर 28वां राष्ट्रीय सम्मेलन आज से

एजेंसी

नई दिल्ली : ई-गवर्नेंस पर 28वां राष्ट्रीय सम्मेलन 22 से 23 सितंबर तक आंध्र प्रदेश के विशाखापत्तनम में होगा। दो दिन के इस सम्मेलन का उद्घाटन आंध्र प्रदेश के मुख्यमंत्री एन. चंद्रबाबू नायडू और केंद्रीय मंत्री डॉ. जितेंद्र सिंह करेंगे। इस बार सम्मेलन का मुख्य विषय विकसित भारतः सिविल सेवा और डिजिटल परिवर्तन है। कार्यक्रम के उद्घाटन सत्र में राज्य के उपमुख्यमंत्री पवन कल्याण और आईटी एवं मानव संसाधन विकास मंत्री एन. लोकेश भी मौजूद रहेंगे। सम्मेलन में इस बार 19 उत्कृष्ट पहलों को राष्ट्रीय ई-गवर्नेंस पुरस्कार दिए जाएंगे। इनमें 10 स्वर्ण, 6 रजत और 3 जूरी पुरस्कार शामिल हैं। ये पुरस्कार केंद्र और राज्य सरकारों, जिला प्रशासन, ग्राम पंचायतों और शैक्षणिक संस्थानों को मिलेंगे। दो दिन के कार्यक्रम में छह पूर्ण सत्र और छह ब्रेकआउट सत्र होंगे। इसमें लगभग 70 वक्ता हिस्सा लेंगे, जो ई-गवर्नेंस और डिजिटल परिवर्तन से जुड़े मुद्दों पर विचार साझा करेंगे। चर्चाओं में आईटी हब के रूप में विशाखापत्तनम, कृत्रिम बुद्धिमत्ता, साइबर सुरक्षा, सेवा वितरण, एग्री स्टैक, पंचायत स्तर के नवाचार और अंतरराष्ट्रीय समुद्री ई-गवर्नेंस जैसे विषय शामिल होंगे।

डोभा में डूबने से दो बच्चों की मौत, गांव में पसरा मातम

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

बरही : बरही थाना क्षेत्र अंतर्गत दुलमहा पंचायत के सिंहपुर में रविवार को मनरेगा योजना से बना डोभा में डूबने से दो बच्चों की दर्दनाक मौत हो गई। मृतक दोनों बच्चे आपस में चचेरे भाई थे। मृतक की पहचान कुश कुमार उम्र करीब 7 वर्ष पिता संजय यादव एवं सूर्यांश कुमार पिता सुरेंद्र यादव के रूप में हुई है। प्राप्त जानकारी के अनुसार मृतक कुश एवं सूर्यांश अपने दो दोस्त आदित्य कुमार एवं सौरव कुमार के साथ सुबह 10 बजे दुमुंहवा जंगल की और घूमने के लिए गए था। जहां प्रायः जानवर चराने के लिए लोग जाते है। वहीं आदित्य

एवं सौरव शौच के लिए चले गए। जबकि कुश और सूर्यांश नहाने के लिए डोभा में उतर गए। नहाने के दौरान दोनों डूबने लगे। दोनों को डूबता देख आदित्य और सौरभ गांव पहुंचकर इस बात की सूचना गांव के लोगों को दिया। बिना देर किए दर्जनों लोग उक्त डोभा के पास पहुंचे जहां से कुश और सूर्यांश को निकालकर बरही अनुमंडलीय अस्पताल ले जाया गया। जहां डॉक्टरों ने दोनों को मृत घोषित कर दिया। घटना की सूचना पाकर विधायक मनोज कुमार यादव, भाजपा जिला उपाध्यक्ष रमेश ठाकुर, जिप प्रतिनिधि गुरुदेव गुप्ता एवं मुखिया मनोज कुमार बरही अनुमंडलीय अस्पताल पहुंचे, जहां पहुंचकर उन्होंने परिजनों से भेंट कर हिम्मत बंधाया।

कुश कक्षा वन और सूर्यांश एलकेजी में करता था पढ़ाई

दुलमहा पंचायत के चंदननगर स्थित लुसेंट्स कॉन्वेंट स्कूल में दोनों पढ़ाई करते थे। कुश कक्षा वन का छात्र था जबकि सूर्यांश एलकेजी में पढ़ाई करता था। इधर घटना की सूचना पाकर विद्यालय के निदेशक चंद्रदेव पंडित ने बताया कि दोनों काफी होनहार छात्र थे। उन्होंने दोनों के निधन पर शोक व्यक्त किया है।

गांव में पसरा मातम

एक ही परिवार के दो छोटे बच्चों की असामयिक मौत ने पूरे गांव को गमगीन कर दिया है। हर किसी की आंखों में आंसू है और गांव का माहौल बेहद दुःखद बना हुआ है। ग्रामीणों का मानना है कि डोभा या अन्य गड्ढों में अगर सुरक्षा घेराबंदी की जाती तो शायद यह हादसा टल सकता था।

प्रशासन ने पोस्टमार्टम के बाद परिजनों को सौंपा मासूमों का शव

घटना के बाद बरही पुलिस ने दोनों मासूमों के शव को अपने कब्जे में लेकर कागजी प्रक्रिया पूरी कर, शव को पोस्टमार्टम के लिए बरही अनुमंडलीय अस्पताल भेज दिया। जहां से पोस्टमार्टम के बाद शव को उनके परिजनों को सौंप दिया गया।

एक नजर

बरही के चंदन नगर में संदिग्ध अवस्था में मिला अधेड़ का शव

बरही : बरही थाना क्षेत्र अंतर्गत दुल्महा पंचायत के चंदन नगर में चंदन नगर निवासी परमेश्वर पंडित का शव संदिग्ध अवस्था में मिला। इसकी सूचना बरही पुलिस को दी गई। पुलिस मौके पर पहुंचकर शव को अपने कब्जे में कर पोस्टमार्टम के लिए बरही अनुमंडलीय अस्पताल ले आई। पोस्टमार्टम के बाद शव को परिजनों को सौंप दिया गया। पुलिस एवं परिजन मामले की जांच कर रही है।

चौपारण में बढ़ी टीवीएस बाइकों की डिमांड, ग्राहकों की लगी भीड़

चौपारण : आगामी सोमवार से लागू होने वाले जीएसटी 2.0 का असर अब वाहन बाजार पर साफ दिखने लगा है। नए प्रावधान के तहत टैक्स दर 28 प्रतिशत से घटकर 18 प्रतिशत होने जा रही है। इससे दोपहिया वाहनों की कीमतों में उल्लेखनीय गिरावट आएगी। इस संबंध में जानकारी देते हुए चौपारण स्थित टीवीएस शोरूम (राइडर्स प्वाइंट) के संचालक मुकेश कुमार सिंह ने बताया कि जीएसटी 2.0 लागू होने के बाद टीवीएस अपाचे 160 सीसी की गाड़ियां लगभग 10 हजार रुपये तक सस्ती हो जाएंगी। वहीं रायडर, रेडियोन, स्टार सिटी, रोनिन जैसी लोकप्रिय बाइकों की दरों में भी भारी कटौती होगी। सस्ते दामों की उम्मीद से ग्राहकों की भारी भीड़ शोरूम में उमड़ पड़ी है। नवरात्रि से लेकर धनतेरस, दिवाली और छठ पूजा तक की डिलीवरी सुनिश्चित करने के लिए लोग पहले ही बुकिंग करवा रहे हैं। शोरूम संचालक के मुताबिक, अब तक लगभग 200 बाइकों की एडवांस बुकिंग हो चुकी है और मांग लगातार बढ़ रही है।मुकेश कुमार सिंह ने बताया कि त्यौहारी सीजन को देखते हुए ग्राहक यह सुनिश्चित करना चाहते हैं कि उन्हें समय पर बाइक की डिलीवरी मिल जाए।

पकरी बरवाडीह मेगालिथ स्थल से सूर्य दक्षिणायन होते दिखेगा, कल होगी दिन रात बराबर

बड़कागांव : हजारीबाग जिले के बड़कागांव स्थित पंकरी बरवाडीह मेगालिथ स्थल से कल 23 सितंबर को सूर्योदय का दो पत्थरों के बीच सूर्य का ,करवट बदलते खूबसूरत नजारा देखा जाएगा। 23 सितंबर के दिन सूर्य शून्य डिग्री पर होगा और दिन व रात की अवधि समान होगी। बड़कागांव के पंकरी बरवाडीह से 23 सितंबर की सुबह लगभग 6:10 बजे इक्वोनोक्स (समदिवारात्रि) के खूबसूरत सूर्योदय का नजारा खगोलप्रेमी उठा पाएंगे। खगोल प्रेमी यह मना रहे हैं कि बस आसमान में किसी प्रकार कोई बादल न हो ताकि दो पत्थरों के बीच से सूर्य का करवट बदलते खूबसूरत नजारा देखा जा सके।

बरही के डुमरडीह गांव में 100 केवीए न्यू ट्रांसफार्मर का विधायक ने किया उद्घाटन

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

बरही : बरही प्रखंड अंतर्गत ग्राम डुमरडीह में रविवार को ग्रामीणों की लंबे समय से चली आ रही बिजली समस्या का समाधान करते हुए 100 केवीए का नया ट्रांसफार्मर का उद्घाटन विधायक मनोज कुमार यादव ने किया । उद्घाटन अवसर पर विधायक मनोज यादव ने कहा कि सरकार ग्रामीण क्षेत्रों में बिजली आपूर्ति को सुचारू बनाने के लिए लगातार प्रयासरत है। उन्होंने कहा कि ट्रांसफार्मर लगने से डुमरडीह और आसपास के गांवों में बिजली आपूर्ति दुरुस्त होगी और लोगों को अंधेरे से राहत मिलेगी। विधायक ने आश्वासन दिया कि आगे भी हर ग्राम में मूलभूत सुविधाएं उपलब्ध कराने के लिए वे लगातार कार्य करेंगे। इस मौके पर लक्ष्मण यादव, शंकर चंद्रवंशी, जनरदान चंद्रवंशी, नंदलाल सिंह, नरेश चन्द्रवंशी, अजय चंद्रवंशी, दिलीप सिंह, प्रवीण सिंह, रामधीन चंद्रवंशी, अर्जुन पाण्डेय, मुरली राम, प्रभु राम, विदेशी रविदास, अरविन्द कुमार समेत अन्य ग्रामीण मौजूद रहे। ग्रामीणों ने विधायक का आभार व्यक्त करते हुए कहा कि ट्रांसफार्मर लगने से अब उनके गांव की बिजली समस्या काफी हद तक दूर हो जाएगी।

प्रखंड के कुशवाहा खेल मैदान शिवाडीह में नमो फुटबॉल टूर्नामेंट का भव्य शुभारंभ

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

बड़कागांव : सांसद खेल महोत्सव के तहत नमो फुटबॉल टूनामेंट का शुभारंभ प्रखंड के कुशवाहा खेल मैदान शिवाडीह में मुख्य अतिथि सांसद मनीष जायसवाल, विशिष्ट अतिथि विधायक रोशन लाल चौधरी, पूर्व विधायक लोकनाथ महतो ने खिलाड़ियों से परिचय प्राप्त कर एवं फुटबॉल किक मारकर उद्घाटन किया। उद्घाटन के पूर्व सांसद विधायक एवं अन्य अतिथियों को गाजे बाजे के साथ झूमर टीम ने नाचते गाते हुए फुटबॉल मैदान तक लाने का काम किया जहां पर अतिथियों ने दीप प्रज्वलित एवं खिलाड़ियों से परिचय प्राप्त करते हुए नशा मुक्त भारत को लेकर शपथ दिलाई गई एवं राष्ट्रगान के साथ टूनामेंट का शुभारंभ किया। सांसद मनीष जायसवाल ने अपने संबोधन में

कहा कि नमोः फुटबॉल टूनामेंट का उद्देश्य क्षेत्र के युवाओं में छुपी प्रतिभा को निखारना है साथ ही साथ एक बेहतर प्लेटफार्म उपलब्ध कराना एवं शारीरिक रूप से स्वस्थ होने के साथ-साथ नशा से दूरी बनाना है वही आज के दौर में बच्चों का मोबाइल आदि से ज्यादा संबंध हो गया है जिसका एकमात्र उपाय खेल है जिसके माध्यम से दूर किया जा सकता है आगे उन्होंने कहा कि शिवाडीह में अवस्थित कुशवाहा फुटबॉल मैदान के जीर्णोद्धार हेतु डीएमएफटी से कार्य प्रगति पर है बहुत जल्द शिलान्यास होगा और अगले नमो टूनामेंट तक उम्मीद है कि कार्य पूरा हो जाएगा। श्री जायसवाल ने नमो फुटबॉल टूनामेंट के संबंध में विशेष जानकारी देते हुए कहा कि यह इस वर्ष का टूनामेंट 19 वा है टोटल 22 टूनामेंट खेला जाना है आगे बताया कि नमो फुटबॉल टूनामेंट का शुभारंभ 2016 में कटकम दाग से की गई थी।

दुर्गा पूजा को लेकर शांति समिति की हुई बैठक

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

बरही (हजारीबाग) : रविवार को दुर्गा पूजा को लेकर बरही थाना परिसर में शांति समिति की बैठक आयोजित की गई। बैठक की अध्यक्षता डीएसपी अजीत कुमार विमल एवं संचालन थाना प्रभारी सह इंस्पेक्टर विनोद कुमार ने किया। बैठक में मुख्य रूप से कोबरा असिस्टेंट कमांडेंट अविनाश कुमार, सीओ चंद्रशेखर कुणाल सहित कई प्रशासनिक पदाधिकारी के साथ विभिन्न पूजा समितियों के अध्यक्ष, सचिव, सदस्य, गणमान्य नागरिक एवं स्थानीय लोग भी बड़ी संख्या में उपस्थित हुए। बैठक के दौरान दुर्गा पूजा महोत्सव को शांतिपूर्ण, सुरक्षित और भव्य रूप से संपन्न कराने को लेकर विभिन्न बिंदुओं पर गहन चर्चा हुई। इसमें विधि-व्यवस्था बनाए रखने, साफ-सफाई की समुचित व्यवस्था, सड़कों की मरम्मत, बिजली आपूर्ति सुचारू रखने, चिकित्सा सुविधा उपलब्ध कराने

और भीड़-भाड़ वाले इलाकों में सुरक्षा बल की तैनाती जैसे अहम मुद्दों को उठाया गया। एसडीपीओ अजीत कुमार बिमल ने कहा कि दुर्गा पूजा के दौरान प्रशासन की पूरी टीम तैनात रहेगी। सभी पूजा समिति के पदाधिकारी और स्थानीय लोग प्रशासन के साथ सहयोग करें ताकि पूजा शांतिपूर्ण और सुचारू रूप से संपन्न हो सके । उन्होंने कहा किसी भी प्रकार का अफवाह फैलाने वालों पर प्रशासन की पैनी नजर रहेगी। किसी भी प्रकार की असुविधा या समस्या होने पर तुरंत पुलिस प्रशासन को सूचित किया जाए। उन्होंने लोगों से अफवाहों पर ध्यान न देने तथा किसी भी समस्या की सूचना तुरंत पुलिस या प्रशासन को देने की अपील की। पूरे आयोजन के दौरान अधिकारियों ने भरोसा दिलाया कि प्रशासन की ओर से हरसंभव सहयोग दिया जाएगा और जनता की सुविधा तथा सुरक्षा सर्वोच्च प्राथमिकता होगी। इंस्पेक्टर सह थाना प्रभारी बिनोद कुमार ने सभी पूजा पंडालों को सख्त निर्देश देते हुए कहा कि सभी पंडाल सीसीटीवी से लैस रखें ताकि पुलिस को मदद मिले। साथ ही पंडाल में महिला व पुरूष का प्रवेश द्वार अलग अलग बनाएं। बैठक में भाजपा जिला उपाध्यक्ष रमेश ठाकुर, छोटी राम, रिजवान अली, मो तौकीर रजा, कामेश्वर रविदास, पंकज बर्णवाल, सहित अन्य लोग उपस्थित रहें।

मार्शल आर्ट व सेल्फ डिफेंस प्रशिक्षण शिविर का शुभारंभ आज

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

हजारीबाग : सात दिवसीय सशक्त बेटियां सुरक्षित परिवार महिला सशक्तिकरण को लेकर गांधी मैदान दुर्गा पंडाल मटवारी हजारीबाग मे उमाजागृति फाउंडेशन के द्वारा मार्शल आर्ट, सेल्फ डिफेन्स, लाठी और तलवारबाजी का निशुल्क प्रशिक्षण शिविर लगाया जा रहा है जो 22 सितम्बर से 28 सितम्बर तक चलेगा। कार्यक्रम का शुभारम्भ 22 सितम्बर दोपहर 2 बजे से नवरात्रि के प्रथम दिवस पर होगी एवं समापण एवं पुरस्कार वितरण 28 सितम्बर को दोपहर 2 बजे से होगा। उद्घाटन समारोह मे मुख्य अतिथि महिला थाना प्रभारी हजारीबाग विंध्यवासिनी कुमारी सिन्हा जी, विशिष्ट अतिथि कोर्रा थाना प्रभारी अजित कुमार, गुरुकुल कोचिंग संचालक एवं कोचिंग संचालक एसोसिएशन अध्यक्ष JP जैन जी, पाणिनि AIS

अकेडमी के संचालक एवं कोचिंग एसोसिएशन सचिव प्रकाश कुमार जी, Dav स्कूल प्राचार्य अशोक कुमार, डायमंड इंग्लिश अकेडमी के संचालक मनोहर कुमार, बड़ा अखाड़ा महंत विजयानन्द दास जी, श्याम प्रभु जी, एडवोकेट रीना वर्मा जी, तापस चक्रवर्ती,Rankers Academy के संचालक शैलेश सिंह जी, रामलाल केमिस्ट्री क्लासेज के संचालक रामलाल शर्मा जी, नागपुरी फिल्म जगत की एक्ट्रेस वर्षा FY तू जी शामिल होंगे। सभी अतिथियों का स्वागत उमाजागृति फाउंडेशन के चेयरमैन एवं फाउंडर धर्मेंद्र ठाकुर के द्वारा किया जायेगा।

122 विद्यालय में नवसाक्षरो की मूल्यांकन परीक्षा आयोजित, 2000 नवसाक्षरो ने लिया हिस्सा

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

चौपारण : शिक्षा के प्रसार और निरक्षरता उन्मूलन के उद्देश्य से उल्लास नवभारत साक्षरता कार्यक्रम के तहत चौपारण प्रखंड के 122 विद्यालयों में नवसाक्षरों के लिए मूल्यांकन परीक्षा आयोजित की गई। परीक्षा में कुल 2000 नवसाक्षरों ने भाग लिया, जिसमें महिला और पुरुष दोनों की उल्लेखनीय भागीदारी रही। बीपीएम मोहम्मद आरिफ और बीआरसी मोहम्मद शोएब ने बताया कि परीक्षा पूरी तरह शांतिपूर्ण माहौल में संपन्न हुई। प्रतिभागियों में एससी वर्ग से 966, एसटी वर्ग से 55, अल्पसंख्यक वर्ग से 236, ओबीसी वर्ग से 661 और सामान्य वर्ग से 82 शामिल थे। कुल 372 महिलाओं और 1628 पुरुषों ने भाग लिया। बीपीएम मोहम्मद आरिफ ने बताया कि यह परीक्षा महज मूल्यांकन नहीं बल्कि समाज में शिक्षा के प्रति एक नई

जागरूकता का प्रतीक है। बड़ी संख्या में लोगों की भागीदारी ग्रामीण क्षेत्रों में भी शिक्षा के प्रति बढ़ती रुचि और जागरूकता को स्पष्ट रूप से दर्शाती है। उन्होंने विश्वास व्यक्त किया कि यह प्रयास भविष्य में निरक्षरता उन्मूलन और समाज को सशक्त बनाने में मील का पत्थर साबित होगा। रविवार को अवकाश होने के बावजूद, लेखाकार विष्णु कुमार, बीआरसी कर्मचारी शशि कुमार, एमआईएस पवन कुमार, यशवंत राणा और अन्य परीक्षा पर्यवेक्षकों ने परीक्षा को सफल बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

सीबीएसई एवं जैक परीक्षा में जिला स्तर पर अव्वल रहे छात्र-छात्राओं को उपायुक्त ने किया सम्मानित

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

हजारीबाग : उपायुक्त शशि प्रकाश सिंह की अध्यक्षता में रविवार को मुख्यमंत्री उत्कृष्ट विद्यालय, जिला स्कूल, हजारीबाग प्रांगण में उच्च विद्यालयों के प्रधानाध्यापकों एवं प्रभारी प्राचार्यों के साथ एक दिवसीय अभिमुखीकरण कार्यक्रम सह बैठक आयोजित की गई। इस अवसर पर झारखंड एजुकेशन प्रोजेक्ट द्वारा माध्यमिक एवं उच्च माध्यमिक परीक्षा के पाठ्यक्रम कवरेज की प्रस्तुति दी गई। साथ ही, सीबीएसई एवं जैक परीक्षा में जिला स्तर पर अव्वल रहे कुल नौ छात्र-छात्राओं एवं उनके परिजनों को उपायुक्त के हाथों सम्मानित किया गया। इन छात्र-छात्राओं को 2 लाख एवं 1 लाख रुपए का चेक, लैपटॉप, मोबाइल, बैग एवं प्रशस्ति पत्र देकर पुरस्कृत किया

गया। जो बच्चे इस कार्यक्रम में शामिल नहीं हो सके उनके माता पिता ने यह सम्मान ग्रहण किया।

सम्मानित हुए छात्र-छात्राएँ

जैक बोर्ड

इंदिरा गांधी बालिका उच्च विद्यालय, हजारीबाग (कक्षा 10वीं) रितु कुमारी, अमृता गुप्ता, पूजा कुमारी एवं शिवानी कुमारी आर.एन. प्लस टू हाई स्कूल, पदमा (कक्षा 12वीं कला संकाय) प्रेरणा कुमारी प्लस टू हाई स्कूल, बड़कागांव (कक्षा 12वीं) - किशोर कुमार विष्णुगढ़ इंटर कॉलेज (कक्षा 12वीं विज्ञान संकाय) हिमांशु कुमार

सीबीएसई बोर्ड

संत जेवियर स्कूल, हजारीबाग (कक्षा 10वीं) - दिव्य प्रकाश डीएवी पब्लिक स्कूल, एनटीएस बरकाकाना (कक्षा 12वीं) - तान्या महतो। उपायुक्त ने कहा कि शिक्षा की गुणवत्ता सुधारना हम सभी की साझा जिम्मेदारी है। प्रधानाध्यापक और शिक्षक अपनी भूमिका को केवल नौकरी न समझें, बल्कि राष्ट्र निर्माण के अहम हिस्से के रूप में देखें और विद्यार्थियों को सफल बनाने हेतु अपनी पूरी जिम्मेदारी निभाएं।

संक्षिप्त खबरें

ग्राम सलगा में दुर्गा पूजा के पंडाल कई लाखों का बनाया जा रहा

केरेडारी : केरेडारी प्रखण्ड अंतर्गत ग्राम पंचायत सलगा पिछले वर्ष कि भांति इस भी धूमधाम से दुर्गा पूजा का पंडाल भव्य से रूप से तैयार किया जा रहा है जो प्रखंड में पहला स्थान रहेगा सलगा के दुर्गा पूजा के पंडाल जो कि यह पंडाल सुंदर आकर्षण देखने को मिलेगा। पिछले चार साल से जो पंडाल बना था इस में से यह पंडाल पांचवा साल में अलग तजुरबा से बनाया जा रहा है इस पंडाल सलगा पंचायत ग्राम कुठान के प्रकाश साव का है पंडाल में इतनी सुंदर ढांचा से तैयार किया गया है कि जिसे लाइट से पूरे पंडाल जगमगाता नजर आएगा पूजा पंडाल में आसमान कि तरह सितारों नजारा देखने को मिलेगा, क्या दुर्गा पूजा इस बार पांचवा साल पूर्ण हो रहा है जो लगातार पांच वर्षों से सीसीटीवी कैमरा से पूजा पंडाल एवं पूरे मेला का दृश्य देखने के लिए मिलता है। इस दुर्गा पूजा के अध्यक्ष कुंवर प्रसाद साहू सचिव राजेंद्र महतो कोषाध्यक्ष बलराम साव ,उपाध्यक्ष विनोद कुमार राम सह उपाध्यक्ष प्रमोद कुमार साव संरक्षक मुखिया पार्वती देवी यह दुर्गा पूजा कमेटी के ओर से निर्विरोध चयनित किया गया है और लगातार यह छ व्यक्ति तीन वर्ष से अच्छा कार्य किए है इस लिए दुर्गा पूजा के समिति के तरफ अच्छा सराहनीय दिए हैं पूजा समिति की ओर से पुरजोर कोशिश किया जा रहा है इस वर्ष दुर्गा पूजा भव्य तरीके से मेला का भी बड़ा आयोजन किया जा रहा है। इस मेला में कई प्रखंड एवं गांव से दूर-दूर से माता बहनों बुजुर्ग मेला के आनंद लेने के लिए आते हैं जो की केरेडारी प्रखंड के अंतर्गत हजारीबाग जिला में सलगा पंचायत का दुर्गा पूजा एवं मेला का नाम जिला में पहला स्थान बताया जाता है दुर्गा पूजा शांतिपूर्वक मानने को लेकर कमिटी का गठन किया गया है। इस मेला का उद्घाटन सलगा पूजा समिति एवं के अध्यक्ष सचिव कोषाध्यक्ष एवं पूजा के सभी सदस्यगण के सहयोग से केरेडारी प्रखण्ड से कई वरिष्ठ पदाधिकारी गण मिलकर फीता काट कर उद्घाटन किया जाएगा। दशमी के दिन रावण दहन का भी आयोजन किया जाता है जो की मेला समापन शाम में किया जाता है इसके बाद रावण दहन धूमधाम से दुर्गा पूजा समिति की ओर से किया जाता है ।

चौपारण में 7 अक्टूबर को शहीद-ए-आजम भगत सिंह की जयंती धूमधाम से मनाई जाएगी

चौपारण : हर साल की तरह इस साल भी शहीद-ए-आजम भगत सिंह की जयंती और जिला परिषद सदस्य रविशंकर अकेला के पुत्र भगत सिंह का जन्मदिन 7 अक्टूबर, 2025 को बड़े ही उत्साह और गरिमा के साथ मनाया जाएगा। भव्य और सफल आयोजन के लिए समर्थकों की एक बैठक आयोजित की गई। बैठक की अध्यक्षता पूर्व विधायक उमाशंकर अकेला ने की। उन्होंने कहा कि शहीद-ए-आजम भगत सिंह देश के स्वतंत्रता संग्राम के अमर योद्धा थे, जिन्होंने युवाओं को देशभक्ति का अमूल्य संदेश देने के लिए अपने प्राणों की आहुति दे दी। उनके विचार और बलिदान आज भी समाज को प्रेरणा देते हैं। यह सौभाग्य की बात है कि मेरे पोते भगत सिंह का जन्मदिन भी उसी दिन पड़ता है। बैठक में निर्णय लिया गया कि समारोह के दौरान पुष्पांजलि समारोह और युवाओं के लिए प्रेरणादायक भाषण आयोजित किए जाएँगे। समाज के सभी वर्गों की भागीदारी सुनिश्चित करने पर भी जोर दिया गया। समर्थकों ने कहा कि यह अवसर न केवल श्रद्धांजलि देने का होगा, बल्कि आने वाली पीढ़ियों को भगत सिंह के विचारों से अवगत कराने का भी होगा। बैठक में उपस्थित लोगों ने सर्वसम्मति से संकल्प लिया कि इस आयोजन को यादगार और सफल बनाने में कोई कसर नहीं छोड़ी जाएगी। इस अवसर पर पूर्व विधायक उमाशंकर अकेला सहित कई समर्थक और गणमान्य लोग उपस्थित थे।

सतबहिया बिरहोरों के बीच धोती, लूंगी का किया गया वितरण

बड़कागांव : बड़कागांव प्रखंड के सुदूर ग्रामीण क्षेत्र सतबहिया बिरहोर कॉलोनी में झारखंड सरकार द्वारा संचालित सोना सोबरन धोती साड़ी लूंगी वितरण योजना के अंतर्गत ,प्रखंड विकास पदाधिकारी जितेंद्र कुमार मंडल की अध्यक्षता में धोती साड़ी लूंगी का वितरण किया गया। खाद आपूर्ति पदाधिकारी भास्कर राज की अगुवाई में कुल 40 बिरहोर परिवार के बीच वितरण किया गया। इस दौरान प्रखंड विकास पदाधिकारी जितेंद्र कुमार मंडल ने बिरहोर परिवारों की अन्य समस्याओं को भी समझने का प्रयास किया। लोगों से कहा कि किसी प्रकार की कोई परेशानी हो तो समय पर बता दीजिए। ताकि समय रहते आपकी परेशानी को दूर किया जा सके। बीडीओ ने आगे बिरहोर परिवारों से कहा कि स्वच्छता और शिक्षा पर आप लोग विशेष ध्यान दीजिए। नशा से दूर रहिए ताकि आपका संपूर्ण विकास हो सके। मौके पर उपस्थित लोगों में मुख्य रूप से बीटीएम श्याम कृष्ण देव, बुद्धि नाथ साहू के अलावा कई लोग उपस्थित थे।

पिंडारकोन में नदी में डूबने से कक्षा 5 की छात्रा अंकिता की मौत, शोक

बरही : पदमा ओपी क्षेत्र अंतर्गत पिंडारकोन गांव में घटी एक दर्दनाक घटना ने पूरे इलाके को गहरे शोक में डाल दिया है। जानकारी के अनुसार, विनोद साव की नन्ही बेटी और श्रीदस इंटरनेशनल स्कूल की कक्षा 5 वीं की मेधावी छात्रा अंकिता कुमारी की नदी में डूबने से असमय मृत्यु हो गई। मासूम अंकिता की मौत की खबर से गांव में मातमी सन्नाटा छा गया है। ग्रामीण, परिजन और मित्रमंडली परिवार को ढांढस बंधाने पहुंच रहे हैं। स्कूल के शिक्षक और सहपाठी भी गहरे शोक में हैं। श्रीदस इंटरनेशनल स्कूल परिवार ने इस घटना पर गहरी संवेदना व्यक्त की। विद्यालय प्रबंधन ने कहा कि अंकिता पढ़ाई में अत्यंत होशियार, अनुशासित और मधुर स्वभाव की छात्रा थी, जिसने सभी शिक्षकों और सहपाठियों का दिल जीत लिया था।

रांची में पंडरा ओपी प्रभारी पर हमला और तोड़फोड मामले में आठ लोग गिरफ्तार

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

रांची : रांची के पंडरा ओपी में बवाल और तोड़फोड़ करने वाले आठ उपद्रवियों को पुलिस ने गिरफ्तार कर लिया है गिरफ्तार में लिए गए उपद्रवियों में छह पुरुष और दो महिला शामिल हैं। पुलिस सभी आरोपितों के खिलाफ कानूनी कार्रवाई कर रही है। रांची के नगर पुलिस अधीक्षक (सिटी एसपी) पारस राणा ने रविवार को प्रेस वार्ता में बताया कि गिरफ्तार उपद्रवियों चंदन कुमार, महेश साव, दिनेश राय, कुणाल यादव, कुंदन यादव, अनमोल जायसवाल, मीणा देवी और प्रिया कुमारी शामिल है। एसपी के अनुसार 14 सितंबर को पंडरा में एक सड़क हादसे में गुमला जिले का रहने वाला एक व्यक्ति गंभीर रूप से घायल हो गया था। उसका इलाज एक निजी अस्पताल में किया जा रहा था। गत शनिवार को घायल व्यक्ति की मौत हो गई, जिसके बाद मृतक के परिजनों के साथ बड़ी संख्या में लोग सड़क पर आ गए और सड़क को जाम कर दिया। उन्होंने बताया कि सड़क जाम के दौरान लोगों ने टायर जलाकर आवागमन बाधित करने का प्रयास किया। आक्रोशित लोग ट्रेलर चालक की गिरफ्तारी की मांग को लेकर हंगामा करने लगे, इसी दौरान कुछ लोग पंडरा ओपी में घुस गये और वहां रखे अभिलेख, टेबल, कुर्सी, अलमारी, सरकारी वाहन और थाने के दरवाजे को बुरी तरह से क्षतिग्रस्त कर दिया। उपद्रवियों ने ओपी प्रभारी को जान से मारने के नीयत से हमला किया, जिसमें ओपी प्रभारी गंभीर रुप से घायल हो गये। एसपी ने बताया कि घटना की गंभीरता को देखते हुए मौके पर अतिरिक्त पुलिस बल बुलाना पड़ा। इसके बाद लोगों पर काबू पाया जा सका। मामले में 30 नामजद और 500 अज्ञात लोगों के खिलाफ पंडरा ओपी में मामला दर्ज किया गया था। पुलिस ने कार्रवाई करते हुए आज छह पुरुष और दो महिला को गिरफ्तार किया है।

दुर्गा पूजा से पहले कर्मचारियों को वेतन दे एचईसी प्रबंधन : शनि सिंह

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

रांची : रांची में स्थित हेवी इंजीनियरिंग कॉर्पोरेशन लिमिटेड (एचईसी) श्रमिक संघ के अध्यक्ष शनि सिंह ने प्रबंधन से दुर्गा पूजा से पहले कर्मचारियों को वेतन भुगतान की मांग की है। उन्होंने राज्य के मुख्यमंत्री हेमन्त सोरेन से एचईसी का मुद्दा प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के समक्ष उठाने की मांग भी की। शनि सिंह ने रविवार को एक प्रेस विज्ञप्ति जारी कर कहा कि एचईसी के श्रमिक पूरी निष्ठा से काम कर रहे हैं। उत्पादन बढ़ा है और डिस्पैच भी लगातार हो रही है। बावजूद इसके प्रबंधन वेतन देने में देरी कर रही है। 25 महीने से वेतन बकाया रहने के बावजूद कर्मचारी कंपनी हित में मेहनत कर समय पर काम कर रहे हैं, लेकिन प्रबंधन अपनी जिम्मेदारी निभाने में नाकाम है। श्रमिक संघ के अध्यक्ष ने कहा कि नए ऑर्डर और पूंजी जुटाना प्रबंधन की जिम्मेदारी है, मजदूरों का नहीं। प्रबंधन को बार-बार पैसे की कमी का बहाना नहीं बनाना चाहिए। मजदूरों का हक छीनकर और उनकी सुविधाएं काटकर कंपनी को आगे नहीं बढ़ाया जा सकता।

यदि श्रमिक खुश नहीं होंगे, तो कंपनी प्रगति नहीं कर सकती। शनि सिंह ने हाल के दिनों में मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन की ओर से एचईसी का मुद्दा उठाने और कर्मचारियों की पीड़ा समझने के लिए आभार जताया। साथ ही उन्होंने मुख्यमंत्री से प्रधानमंत्री के समक्ष एचईसी का मुद्दा मजबूती से रखने की मांग की। उन्होंने कहा कि यदि केंद्र सरकार मदद नहीं करती, तो झारखंड सरकार को एचईसी का टेकओवर करना चाहिए।

झारखंड के स्वास्थ्य मंत्री पर भाजपा का आरोप निराधार : कांग्रेस

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

रांची : झारखंड प्रदेश कांग्रेस कमेटी ने प्रदेश भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) के नेताओं पर आधी-अधूरी और झूठी कहानियों के सहारे जनता को गुमराह करने का आरोप लगाया है। कांग्रेस के प्रदेश मीडिया प्रभारी राकेश सिन्हा ने रविवार को प्रेस विज्ञप्ति जारी कर कहा कि भाजपा के पास मुद्दों का दिवालियापन साफ नजर आ रहा है। स्वास्थ्य मंत्री डॉ. इरफान अंसारी अल्पसंख्यक समाज से आते हैं, इसलिए भाजपा उन्हें टेंडर घोटाले का आरोप लगाकर जानबूझकर टारगेट कर रही है, जबकि सच्चाई यह है कि मंत्री ने स्वयं शिकायत प्राप्त होते ही विभागीय जांच शुरू कराई और साफ कर दिया कि दोषी पाए जाने वालों पर सख्त कार्रवाई की जाएगी। राकेश सिन्हा ने कहा कि भाजपा के आरोप हास्यास्पद और तथ्यहीन हैं। आधी-अधूरी जानकारी पर प्रेस कॉन्फ्रेंस करना भाजपा की पुरानी आदत है। उन्होंने कहा कि शिकायत सबसे पहले मंत्री को प्राप्त हुई थी और उसी आधार पर विभागीय जांच चल रही है। दोषी पाए जाने पर नियमसंगत कार्रवाई निश्चित की जाएगी। सिन्हा ने कहा कि जिस संवेदक का नाम भाजपा ले रही है, वह पिछले कई वर्षों से विभाग में कार्यरत है। यह मामला भी जांच के अधीन है। मंत्री पद संभालने के बाद डॉ. इरफान अंसारी ने किसी भी संवेदक को अतिरिक्त लाभ या काम नहीं दिया है। उन्होंने कहा कि टेंडर प्रक्रिया पूरी तरह पारदर्शी और निष्पक्ष है। अधिकारियों को नियमों और शर्तों का गहन अध्ययन करने का निर्देश दिया गया है। यदि जरूरी हुआ, तो एनआईटी में संशोधन भी समीक्षा के बाद किया जाएगा।

पहले भर्ती, फिर सृजन, नहीं तो ब्लैकआउट करेंगे विद्युत कर्मी : अजय राय

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

रांची : झारखंड ऊर्जा विकास श्रमिक संघ के केंद्रीय अध्यक्ष अजय राय की अध्यक्षता में रविवार को राज्यस्तरीय बैठक प्रेस क्लब, रांची में आयोजित हुई। बैठक के दौरान सर्वसम्मति से साल 2025-27 के लिए नई कार्यसमिति का गठन हुआ। झारखंड ऊर्जा विकास श्रमिक संघ की नई कार्यसमिति में अजय राय को अध्यक्ष, अमित कुमार कश्यप को प्रधान महासचिव और अमित शुक्ला व कुणाल कुमार सिंह को महामंत्री चुना गया। अध्यक्ष अजय राय ने इस अवसर पर कहा कि ऊर्जा विकास निगम जबतक 80 प्रतिशत रिक्त पदों पर नियमित बहाली नहीं करता, तबतक नए पद सृजित नहीं होंगे। अगर मांगें पूरी नहीं हुई तो राज्यभर में विद्युत कर्मी ब्लैकआउट आंदोलन करेंगे। अजय राय ने बताया कि वर्तमान में करीब 7000 मानव दिवस कर्मी एजेंसी के माध्यम से कार्यरत हैं, जो निगम के कुल कर्मचारियों का 80 प्रतिशत हिस्सा हैं। इन्हें नियमित करने को लेकर चार प्रमुख मांगें रखी गई हैं, जिनमें तृतीय एवं चतुर्थ वर्ग के रिक्त पदों पर नियुक्ति, कार्य अनुभव के आधार पर प्राथमिकता और आयु सीमा में छूट के साथ ही 2014 के सर्वे के आधार पर 10 वर्ष से कार्यरत कर्मियों की सीधी नियुक्ति तथा अधिसूचना संख्या-625 को सभी पर लागू करने जैसी महत्वपूर्ण मांगें शामिल हैं। संघ के अन्य वक्ताओं ने कहा कि इन मांगों को पूरा करना मानव दिवस कर्मियों के न्याय और अधिकार की रक्षा के लिए जरूरी है। कार्यसमिति में विभिन्न क्षेत्रों से प्रतिनिधियों समेत सभी एरिया बोर्ड और ट्रांसमिशन जोन के प्रतिनिधि शामिल हुए।

धुर्वा में दो पक्षों में मारपीट के बाद युवक को मारी गोली, जांच में जुटी पुलिस

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

रांची : धुर्वा थाना क्षेत्र में मथुरा खटाल के पास शनिवार की देर रात एक युवक रोशन कुमार को गोली मार दी गई। रोशन कुमार के हाथ में गोली लगी है। उसे इलाज के लिए धुर्वा स्थित एक निजी अस्पताल में भर्ती कराया गया है। मिली जानकारी के अनुसार किसी विवाद को लेकर दो पक्ष आमने-सामने आ गये और देखते ही देखते एक पक्ष ने फायरिंग कर दी। इस दौरान लगभग 12 गाड़ियों में तोड़फोड़ की गयी। इसी दौरान रोशन के हाथ में गोली लग गयी। घटना के बाद उसके परिजन और समर्थक धुर्वा थाना पहुंचे और कार्रवाई की मांग की। मौके पर धुर्वा थाना प्रभारी तैनाती के कारण नहीं पहुंच सके। क्योंकि वे मुरी में रेल रोको आंदोलन के लिए ड्यूटी पर थे। मामले की गंभीरता को देखते हुए हटिया डीएसपी पीके मिश्रा के नेतृत्व में पुलिस घटनास्थल पर पहुंची और छानबीन शुरू कर दी। पुलिस ने बताया कि विवाद की पृष्ठभूमि और गोलीबारी में शामिल लोगों की पहचान की जा रही है। गोली मारने के बाद युवक फरार हो गए। इस घटना में मनीष कुमार, मनीष यादव, सन्नी सहित कई के नाम सामने आए है। जिनकी तलाश पुलिस कर रही है।

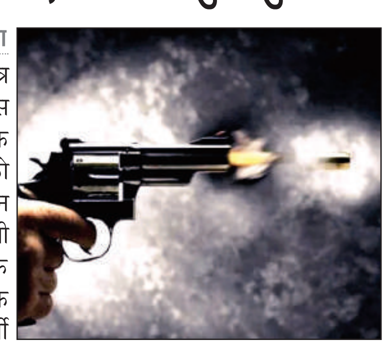

केंद्रीय रक्षा राज्य मंत्री के नेतृत्व में साइक्लोथॉन के साथ शुरू हुआ सांसद खेल महोत्सव

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

रांची : झारखंड की राजधानी रांची के मोरहाबादी मैदान से रविवार को सांसद खेल महोत्सव-2025 का शुभारंभ हुआ। हजारों युवाओं और खेल प्रेमियों की भागीदारी के बीच आयोजित इस भव्य कार्यक्रम की शुरुआत साइक्लोथॉन से हुई। आयोजन का नेतृत्व केंद्रीय रक्षा राज्य मंत्री सह सांसद संजय सेठ ने किया। सांसद खेल महोत्सव-2025 की शुरुआत केंद्रीय रक्षा राज्यमंत्री संजय सेठ और झारखंड के पूर्व मुख्यमंत्री रघुवर दास ने संयुक्त रूप से झंडी दिखाकर किया। इस मौके पर संजय सेठ ने कहा कि खेल न केवल शरीर को तंदुरुस्त रखता है, बल्कि समाज को अनुशासन और ऊर्जा भी देता है। उन्होंने युवाओं को संदेश दिया कि यदि देश को विकसित बनाना है, तो पहले फिटनेस और स्वास्थ्य पर जोर देना होगा। महोत्सव का मुख्य उद्देश्य भी 'स्वस्थ युवा फॉर विकसित भारत' अभियान को जन-जन तक पहुंचाना है। संजय सेठ ने कहा कि यह महोत्सव सिर्फ एक खेल का आयोजन नहीं, बल्कि एक आंदोलन है। स्वस्थ भारत के बिना विकसित भारत की कल्पना अधूरी है। यह महोत्सव हर नागरिक को यह संदेश देता है कि फिटनेस सिर्फ व्यक्तिगत नहीं, बल्कि राष्ट्रीय जिम्मेदारी भी है। पूर्व मुख्यमंत्री रघुवर दास ने कहा कि साइक्लोथॉन जैसे आयोजन युवाओं को नशे से दूर रखने और समाज में सकारात्मक ऊर्जा पैदा करने का माध्यम हैं। खेल से बेहतर कोई साधन नहीं है, जो युवाओं को एकजुट कर सके और उन्हें जीवन में सकारात्मक ऊर्जा दे सके। उन्होंने उम्मीद जताई कि सांसद खेल महोत्सव आने वाले वर्षों में और बड़े स्तर पर आयोजित होगा और यह झारखंड की पहचान बनेगा। साइक्लोथॉन में भारतीय नौसेना की रिटायर्ड अधिकारी और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर कई पदक जीत चुकीं कमांडर गौरी मिश्रा भी मौजूद थीं। वह विश्व साइक्लिंग चैंपियनशिप में भारत का नाम रोशन करने वाली पहली महिला अधिकारी रही हैं। गौरी मिश्रा ने इस मौके पर पत्रकारों से बातचीत में कहा कि मेरा सपना है कि हर घर में एक साइकिल हो। यदि बच्चे और युवा रोजाना साइकिल चलाएंगे, तो फिट इंडिया का सपना जल्द ही साकार होगा। साइक्लोथॉन में न केवल कॉलेज और स्कूलों के छात्र-छात्राएं शामिल हुए, बल्कि विभिन्न खेल संगठनों, स्वयंसेवी संस्थाओं के सदस्यों के साथ ही आम लोगों ने भी बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया। सड़कों पर जगह-जगह लोगों ने साइकिल चालकों का उत्साह बढ़ाने के लिए तालियां बजाईं। लोगों ने उनके लिए पानी की व्यवस्था भी की थी। साइक्लोथॉन के दौरान साइकिल चालकों ने मोराहाबादी से उपायुक्त आवास होकर राजभवन होते हुए, जस्टिस शहदेव चौक, कांके रोड, सिदो-कान्हू पार्क, रांची कॉलेज, ऑक्सीजन पार्क से वापस मोरहाबादी पहुंचे। प्रतिभागियों ने इस दौरान लगभग 3.30 किलोमीटर साइकिल चलाई।

एक नजर

श्याम महोत्सव को लेकर मंडल की हुई समीक्षा सभा

रांची : श्री श्याम मण्डल, रांची की ओर से सम्पन्न हुए चार दिवसीय श्री श्याम मोहत्सव के उपलक्ष्य में रविवार को मन्दिर के सभागार में समीक्षा सभा आयोजित की गई। सबसे पहले श्री श्याम वंदना के साथ बैठक शुरू की गई। इसके बाद मण्डल के अध्यक्ष चन्द्र प्रकाश बागला ने सभी सदस्यों का स्वागत किया। मण्डल के कोषाध्यक्ष राजेश सारस्वत ने श्री श्याम मोहत्सव का आय - व्यय का ब्यौरा प्रस्तुत किया जिसे सर्वसम्मति से पारित किया गया। मण्डल के सदस्यों ने मण्डल की भावी प्रगति के लिए अपने सुझाव रखे और मण्डल के मंत्री धीरज बंका ने मण्डल की ओर से किए जा रहे धार्मिक और सामाजिक कार्यों का विवरण की जानकारी सभा को दी। सभा में रोहित साबू, अरुण धनुका, राजेश सारस्वत, अजय साबू, नितेश केजरीवाल, विकास पाडिया, ज्ञान प्रकाश बागला, प्रियांश पोद्दार, ज्योति पोद्दार, अभिषेक डालमिया, प्रदीप अग्रवा, सज्जन सराफ, विक्रम परसरामपुरिया, राज कुमार जलान सहित श्याम मंडल के अन्य सदस्य उपस्थित थे।

नशा मुक्त रांची थीम पर मैराथन दौड़ का हुआ आयोजन

रांची : प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के जन्मदिन के उपलक्ष्य में सेवा पखवाड़ा के तहत भारतीय जनता युवा मोर्चा (भाजयुमो) रांची महानगर ने नशा मुक्त रांची थीम पर मैराथन दौड़ का आयोजन किया। इस कार्यक्रम का नेतृत्व युवा मोर्चा रांची महानगर अध्यक्ष रोमित नारायण सिंह ने किया। रोमित नारायण सिंह ने बताया कि दौड़ का उद्देश्य प्रधानमंत्री के स्वस्थ मुक्त भारत और समृद्ध भारत के संकल्प के प्रति युवाओं में जागरूक करना था। कार्यक्रम की शुरूआत केंद्रीय रक्षा राज्य मंत्री संजय सेठ, राज्य के पूर्व मुख्यमंत्री रघुवर दास और भाजपा संगठन महामंत्री कर्मवीर सिंह ने संयुक्त रूप से की। भाजपा के संगठन महामंत्री कर्मवीर सिंह ने इस मौके पर कहा कि युवाओं को नशे से दूर रहकर अपने जीवन को स्वस्थ और सशक्त बनाना होगा। नशा केवल व्यक्ति को नहीं, बल्कि पूरे समाज को कमजोर करता है। आज यह मैराथन इस संकल्प का प्रतीक है कि हम रांची और भारत को नशा मुक्त बनाएंगे। उन्होंने कहा कि युवा ही समाज का आधार हैं और उनकी भागीदारी हमें एक मजबूत और जागरूक भारत की ओर ले जाएगी। राज्य के पूर्व मुख्यमंत्री रघुवर दास ने कहा कि नशा मुक्त समाज हमारी सबसे बड़ी जरूरत है। युवाओं की ऊर्जा और जोश को सही दिशा में लगाना जरूरी है। आज रांची में युवाओं ने जोश और उत्साह से यह मैराथन दौड़ पूरी की, वह यह दर्शाता है कि हमारी आने वाली पीढ़ी स्वस्थ और जागरूक बनकर नशे के खिलाफ अभियान में आगे आएगी। प्रधानमंत्री मोदी का संदेश हमें प्रेरित करता है कि हर युवा नशा मुक्त जीवन अपनाए और समाज के लिए प्रेरणा बने।

झारखंड के अलग-अलग इलाकों में इस माह होगी छिटपुट बारिश

रांची : झारखंड में दक्षिणी पश्चिमी मानसून विदाई की ओर है लेकिन सितंबर माह के अंतिम हफ्ते में भी राज्य के विभिन्न इलाकों में बारिश होने की संभावना है। इन इलाकों में हल्के से मध्यम दर्जे की बारिश हो सकती है। इसे लेकर मौसम विभाग ने रविवार को येलो अलर्ट जारी किया है। साथ ही इस दौरान 30 से 40 किलोमीटर प्रति घंटे की रफ्तार से तेज हवा चलने और आकाशीय बिजली गिरने की भी आशंका है। पिछले 24 घंटे के दौरान राज्य में सबसे अधिक बारिश 71.8 मिलीमीटर जामताड़ा में रिकॉर्ड की गई। इस दौरान राज्य में सबसे अधिक तापमान 36.2 डिग्री सेल्सियस सरायकेला में और सबसे कम तापमान लातेहार में 21 .1 डिग्री सेल्सियस रिकार्ड किया गया।

संक्षिप्त खबरें

नवयुवकों को जोड़कर कार्यसमिति का होगा विस्तार : अरुण गुप्ता

रांची : रांची झारखंड प्रदेश शौंडिक संघ समन्वय समिति की बैठक समिति के संरक्षक अरुण गुप्ता जी के अध्यक्षता में रांची स्थित आवास में अपराह्न 2 बजे से शुरू हुई, बैठक में उपस्थित सभी सदस्यों ने संगठन की गति विधियों पर चर्चा करते हुए आगामी 14 दिसंबर को दिल्ली में होने वाले अंतराष्ट्रीय सुंडी शौंडिक महासम्मेलन में आयोजक दिल्ली सुंडी समाज, छत्तीसगढ़ प्रदेश शौंडिक समाज, अखिल भारतीय शौंडिक संघ के साथ ही झारखंड प्रदेश शौंडिक संघ को भी मेजमानी का मौका देकर संयुक्त आयोजक मंडली में शामिल करने पर झारखंड प्रदेश शौंडिक संघ ने अंतराष्ट्रीय सुंडी शौंडिक महासम्मेलन के पदाधिकारियों के प्रति आभार व्यक्त किया है। बैठक में प्रदेश समन्वय समिति के सदस्यों ने दिल्ली में अंतराष्ट्रीय सुंडी शौंडिक महासम्मेलन कार्यक्रम के 14 दिसंबर 2025 को संपन्न होने के बाद ही रॉंची में वार्षिक समारोह मनाने का विचार किया है,जिसकी तारीख की घोषणा समन्वय समिति के सदस्यों द्वारा बाद में करेगी। अपनी अध्यक्षीय भाषण में अरुण गुप्ता जी ने कहा कि प्रदेश शौंडिक संघ में नव युवकों को जोड़कर जल्द कार्यसमिति का विस्तार किया जाएगा। आज की समन्वय समिति की बैठक में मुख्य रूप से मिथिलेश साहु, मयंक गुप्ता, अरुणदेव कुमार, विद्याधर प्रसाद, कुणाल कुमार बंटी, उदय साहु एवं बीरेंद्र साहु उपस्थित थे।

सरकार कन्फ्यूज्ड बिहार चुनाव एजेंडा : पंकज मिश्र

रांची : जयप्रकाश जनता दल के राष्ट्रीय सचिव पंकज मिश्र ने कहा कि केंद्र सरकार पूरी तरह कन्फ्यूज्ड है। जीएसटी में बदलाव लाना बिहार चुनाव को एजेंडा के रूप में शामिल रखकर किया गया है। फाइनेंशियल रिफॉर्म सरकारें करती हैं और करनी भी होनी चाहिए लांग टर्म सोच के तहत रिफॉर्म की जाती है। मगर सरकार हर कुछ महीनों में बदलाव करती रहती। दिल्ली विधानसभा के समय आयकर में बदलाव किया गया। उसी तरह बिहार चुनाव को सामने देखकर एक महीने के भीतर ही दूसरी बार जीएसटी में बदलाव किया जा रहा. सरकार को यह भी बताना चाहिए कि वर्षों तक जो जीएसटी जनता से वसूले गये वह किस सोच के तहत किया गया था। जयप्रकाश जनता दल वन नेशन , वन टैक्स, की सोच रखती है और हमेशा आवाज बुलंद करती रही है। हम समरस समाज की स्थापना के लिए प्रतिबद्ध है। सरकार लोकहित के लिए होनी चाहिए।

सेल सैटेलाइट दुर्गा पूजा में प्रतिदिन होंगे आकर्षक अनुष्ठान

रांची : सेल सैटेलाइट टाउनशिपमें श्री दुर्गा पूजा आयोजन समिति द्वारा इस वर्ष 34 वे दुर्गा पूजा महोत्सव का भव्य आयोजन आगामी 28 सितंबर से 2 अक्टूबर 2025 तक किया जा रहा है। इस दौरान प्रतिदिन विभिन्न अनुष्ठान संपन्न होंगे, जिनमें प्रात:कालीन और सायंकालीन पूजा, आरती एवं भोग वितरण प्रमुख रहेंगे। इस बार देवी का आगमन हाथी पर और गमन पालकी में होगा। पूजा का प्रारंभ महाषष्ठी तिथि को प्रात: 9 बजे कल्पारम्भ से होगा। नवपत्रिका प्रवेश, महाभोग, पुष्पांजलि, चंडी पाठ, संध्या आरती जैसे दैनिक अनुष्ठान निर्धारित समय पर संपन्न होंगे। संधि पूजा 30 सितंबर को अपराह्न 1:21 बजे से होगी। विजयदशमी2 अक्टूबर को पूजा, सिंदूर दान, मूर्ति विसर्जन और शांति जल के साथ धूमधाम से मनाई जाएगी। कार्यक्रम स्थल को सुंदर फूलों और आकर्षक दीप सज्जा से सजाया जाएगा। शुभारंभ दिवस पर 28 सितंबर को सांझ 6:30 से उद्घाटन एवं सांस्कृतिक कार्यक्रम होंगे। सामी को बच्चों की चित्रांकन प्रतियोगिता और महिलाओं की अल्पना प्रतियोगिता होगी, जबकि शाम को ग्रुप डांस एवं पुरस्कार वितरण होंगे। अष्टमी को एथनिक ड्रेस प्रतियोगिता, ग्रुप डांस तथा महिलाओं के लिए खेल आयोजित होंगे। नवमी को फैंसी ड्रेस, धुनुची नृत्य और भजन संध्या का आयोजन है। कार्यक्रम स्थल रंग-बिरंगी रोशनी और सजावट से सुसज्जित रहेगा। सभी प्रतिभागियों को पुरस्कार प्रदान किए जाएंगे। इस वर्ष की दुर्गा पूजा कमेटी के अध्यक्ष अनिल कुमार मिस्त्री, महासचिव आनंद त्रिवेदी एवं मिथिलेश कुमार सिंह तथा कोषाध्यक्ष बसंत साहू हैं। इन के अलावा कमेटी मेंसोमनाथ कुमार, बबलू घोष, मजूमदार जी, अवधेश प्रसाद, आलोक मिश्रा, मनोज कुमार सिंह, अभिषेक कुमार,अनिकेत आनंद,राम किशन, मिलिंद वर्मा, प्रवीण कुमार, मनीष माधव, माणिक लोहारअजय प्रसाद, संजीव कुमार,बिष्णु कुमार दास, सचिन कुमार, सुशील कुमार, राम रंजन चौधरी, अमित मिश्रा,सिबाशीष मुखर्जी, प्रकाश एवं रविंद्र प्रसाद दुबे की भी विशेष भागीदारी है। विभिन्न प्रकार की आकृतियां सुसज्जित पूजा पंडाल को रंगीन कपड़ों के माध्यम से आकर्षकस्वरूपदिया जा रहा है कपूजा पंडाल की ऊंचाई 40फुट एवं चौड़ाई 55फुट है। गोलाकार प्रवेश द्वार पर सभी ओर नक्काशीदार सजावट की जा रही है कमुख्य द्वार केऊपर माँ दुर्गा का मनमोहक स्वरूप आगंतुकों को आशीर्वाद देने के साथ आध्यात्मिकता का एहसास कराएगा कगर्भगृह में माँ दुर्गा की 14 फीट विशाल प्रतिमा के अनुरूप विभिन्न चित्रों एवं रंगों से साज–सज्जा का काम जोर शोर से चल रहा है। ब्रह्मा, विष्णु, महेश की त्रिमूर्ति के साथमाता अपने भक्तों को त्रिलोक में दर्शन देंगीकचांची के प्रसिद्ध मूर्तिकार अजय कुमार पाल द्वारा विशिष्ट उडी प्रिटिंग विधि से माँ दुर्गा की मूर्ति बनाई जा रही है।

मनमानी पर उतर आया है प्रबंधन, मजदूरों की समस्याओं पर करेंगे बड़ा आंदोलन : भवन सिंह

रांची : हटिया मजदूर यूनियन (सीटू) ने एचईसी मजदूरों की समस्याओं को लेकर संघर्ष तेज करने का ऐलान किया है। यूनियन के अध्यक्ष भवन सिंह ने रविवार को प्रेस विज्ञप्ति जारी कर कहा कि एचईसी प्रबंधन सप्लाई और स्थायी कर्मियों के बीच भेदभाव कर मनमानी पर उतरा है, जिसे रोकने और मजदूरों की मजबूत एकता के लिए यूनियन ठोस कदम उठाएगी। उन्होंने बताया कि अगले सप्ताह स्थायी कर्मचारियों की मांगों पर भी पर्चा जारी किया जाएगा और फिर सप्लाई एवं स्थायी दोनों मजदूरों की संयुक्त बैठक कर साझा कार्यक्रम तय किया जाएगा। यूनियन ने प्रबंधन से सभी सप्लाई मजदूरों का नियमित भुगतान सुनिश्चित करने की मांग की और चेतावनी दी कि लापरवाही जारी रही तो कार्यक्षमता प्रभावित होगी। उन्होंने कहा कि फिलहाल सप्लाई मजदूरों की समस्याओं को लेकर पर्चा दिया जा रहा है। इनमें सप्लाई मजदूरों का स्थायीकरण, 2010–11 से लागू यूनियन समझौतों की पुनर्स्थापना, वेतन कटौती और 26–30 दिन के बदले भुगतान पर रोक, पुरानी छुट्टियों का संरक्षण तथा लंबित ग्रेडेशन की बहाली शामिल है। भवन सिंह ने कहा कि सीधे रेगुलराइजेशन का केस हाईकोर्ट में करना मजदूरों के हित में नहीं होगा, क्योंकि एक बार फैसला प्रतिकूल आने पर स्थायीकरण की संभावना कमजोर हो जाएगी। उन्होंने मजदूरों और नेताओं से अपील की कि गलतियों से सबक लें और कानूनी दायरे को समझकर ही संघर्ष करें।

देश के महानायक नरेंद्र मोदी का जीवन प्रेरणादायक है : अन्नपूर्णा देवी

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

कोडरमा : भाजपा द्वारा आयोजित सेवा पखवाड़ा के अंतर्गत आज कोडरमा रेलवे परिसर के नजदीक माननीय प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के जीवन एवं कार्यकलापों की एक प्रदर्शनी आयोजित की गई है । इस कार्यक्रम का उद्घाटन कोडरमा सांसद सह भारत सरकार महिला एवं बाल विकास मंत्री अन्नपूर्णा देवी ने की। इस कार्यक्रम में उनके साथ कोडरमा विधायक डॉ नीरा यादव एवं बरकट्ठा विधायक अमित यादव मुख्य रूप से उपस्थित रहे। कार्यक्रम का संचालन कार्यक्रम संयोजक व पूर्व जिला अध्यक्ष नितेश चंद्रवंशी ने किया। प्रदर्शनी उद्घाटन करते हुए अन्नपूर्णा देवी ने कहा प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का जीवन हम सबके लिए प्रेरणादाई है इनके जीवन से हम सबको बहुत कुछ सीखने को मिलता है ।बचपन से लेकर आज तक इनके जीवन के हर पहलू को इस प्रदर्शनी के माध्यम से दिखलाने का एक छोटा सा प्रयास है और यह प्रदर्शनी आपके शहर में कम से कम एक सप्ताह लगा रहेगा आप अपने बच्चों पड़ोसियों और बुद्धिजीवियों को अवश्य दिखाएं। प्रधानमंत्री का जीवन सेवा ही संकल्प है ,राष्ट्र प्रथम की प्रेरणा उनके साथ जीवन में जुड़ा हुआ है। प्रधानमंत्री की देशभक्ति और सेवा हम सब से छिपा हुआ नहीं है । अपने जीवन में कठोरतम फैसला से देश को आगे बढ़ाने के लिए हर संभव प्रयास किया है ।चाहे राम मंदिर का मुद्दा हो ,धारा 370 का मुद्दा हो, स्वच्छ भारत का विषय हो ,चंद्रयान से गगनयान तक निरंतर देश कैसे आगे बढ़े मोदी जी सतत प्रयत्नशील रहे हैं। इसके लिए हम सब मोदी जी के ऋणी है । डॉ नीरा यादव ने कहा हम सब को इस बात के लिए फक्र है कि हमें नरेंद्र मोदी जैसा देश में प्रधानमंत्री मिला है ,उनके कार्यकाल में देश उन्नति कर रहा है। देश आत्मनिर्भर हुआ है और अभी नवरात्रि के शुभ अवसर पर जीएसटी में जो सुधार हुई है इससे आम नागरिकों को बहुत सुविधा मिलने वाली है। नरेंद्र मोदी जी ने अनगिनत ऐसे कार्य किए हैं जो गिनते गिनते देशवासी थक जाएंगे पर वह गिनती पूरी नहीं होगी। महिलाओं का सम्मान ,स्वास्थ्य और सशक्तिकरण के लिए हर संभव अधिकतम प्रयास किया है। विधायक अमित यादव ने कहा कि युवाओं महिलाओं और किसानों के हित में ढेर सारे कार्य किए गए हैं । आम जन के हित में देश डिजिटल शक्ति से आगे बढ़ रहा है सभी के घर में जल और स्वास्थ्य की चिंता की जा रही है। सपनों का घर मिल रहा है देश स्वस्थ हो रहा है नई-नई टेक्नोलॉजी के साथ देश एक नया भारत बन रहा है । कार्यक्रम संयोजक नितेश चंद्रवंशी ने कहा माननीय प्रधानमंत्री इस देश के राष्ट्रीय पुरुष हैं इनके नेतृत्व में देश आत्मनिर्भर बनते हुए विकसित बनने की ओर बढ़ा रहा है बहुत जल्द देश तीसरी अर्थव्यवस्था बनेगा यह नरेंद्र मोदी जी और उनके नेतृत्व का ही कमाल है । हम सब नरेंद्र मोदी जी के जन्मदिन की बहुत-बहुत बधाई देते हैं और ईश्वर से प्रार्थना करते हैं कि मोदी जी दीघार्यु हो। कार्यक्रम को प्रदर्शनी को देखने के लिए भाजपा के सभी वरिष्ठ कार्यकर्ता एवं आमजन भागीदार बने।

एक नजर

अटल जागृति मंच की तीसरी बैठक भोजपुर कॉलोनी में संपन्न

चास : अटल जागृति मंच की तीसरी बैठक रविवार को चास भोजपुर कॉलोनी स्थित हनुमान मंदिर प्रांगण में संपन्न हुई। बैठक की अध्यक्षता प्रदीप कुमार शर्मा ने की जबकि संचालन प्रवीण कुमार ने किया। बैठक में मुख्य रूप से संगठन विस्तार पर विचार-विमर्श किया गया। इस क्रम में सर्वसम्मति से जयशंकर सिंह को मंच का संयोजक चुना गया। साथ ही संयोजक मंडल में पांच सदस्यों को मनोनीत किया गया, जिनमें राकेश कुमार मधु, परवीन कुमार, टुनटुन मिश्रा, सुनील कुमार और अजीत कुमार ठाकुर शामिल हैं। बैठक में मंच को मजबूत बनाने और सामाजिक सरोकारों के प्रति सक्रिय भूमिका निभाने पर बल दिया गया। आयोजन के दौरान उपस्थित सदस्यों ने समाज हित में ठोस कदम उठाने की प्रतिबद्धता जताई। इस अवसर पर उपस्थित प्रमुख सदस्यों में सुनील कुमार, अजीत ठाकुर, प्रदीप कुमार शर्मा, प्रवीण कुमार, जय भूषण त्रिपाठी, सियाराम सिंह, जयशंकर सिंह, कुंदन कुमार सिंह, राकेश कुमार मधु, टुनटुन मिश्रा, शैलेन्द्र सिंह, अरुण शर्मा और अमित कुमार शामिल रहे।

जरीडीह थाना में शांति समिति की हुई बैठक

बोकारो : रविवार को जरीडीह थाना में दुर्गा पूजा, दीपावली , काली और छठ पूजा उत्सव शांति पुर्वक मनाने के लिए बैठक हुई। सीओ प्रणव ऋतुराज ने कहा कि साल में एक बार आने वाले इन त्योहारों को आपस में मिल कर मनाएं। आमजन से लेकर सभी पूजा कमिटी यह तय करें कि पूजा करने वाले श्रद्धालु मेला देखने वालों को सुरक्षा व्यवस्था उपलब्ध कराई जाय। किसी अफवाह में नहीं बहके। पुलिस , प्रशासन आपके सेवा में ततपर रहेगी। मौके पर थाना प्रभारी बिपिन महतो , मुखिया शांति देवी , मुखिया गिरीन्द्र मिश्रा , अनिल दिगार,निवारण दिगार, राजेश सिंह, बलराम तिवारी, बिनोद महतो,विक्की सरदार, मनोज सिंह , किष्टो भगत , अर्जुन सिंह ,टार्जन अंसारी, मनोज दास आदि मौजूद रहे।

ईश्वर ने हमें जितनी शक्तियां दी है उतनी जवाबदेही भी स्वामिनी संयुक्तानंद

बोकारो : चिन्मय विद्यालय बोकारो में आयोजित हो रहे पांच दिवसीय हरि सेवा कैंप के दूसरे दिन भी विद्यार्थियों की अलग - अलग गतिविधियों को सीखने की उत्सुकता देखने को मिली। आज प्रात :कालीन सत्र में चिन्मय मिशन बोकारो की आवासीय आचार्या स्वामिनी संयुक्तनंदा ने सभी विद्यार्थियों से 'मानव जीवन क्यों खास है। विषय पर चर्चा की। उन्होंने बताया कि कैसे भगवान ने हम सभी को जितनी ज्यादा आजादी और शक्तियां दी है, उतनी ही ज्यादा उनके प्रति जवाबदेही भी होती है। इसके बाद ग्रुप 1 के विद्यार्थियों को सदगुरु सदाफलदेव जी महाराज गौशाला ले जाया गया। इस ग्रुप के साथ चिन्मय बोकारो के प्राचार्य सूरज शर्मा, सी.सी.एम.टी.ई.सी की अकादमिक एडमिनिस्ट्रेटर मीना श्रीराम, चिन्मय विद्यालय बोकारो से पुनीत दोषी, संजीव कुमार,शुभम कुमार और प्रिया राजीव भी उपस्थित रहे, जिन्होंने विद्यार्थियों को गाइड किया। इसमें चिन्मय गुवाहाटी , ऊंचाहार, जमशेदपुर, ओडिशा और चिन्मय बोकारो के विद्यार्थी शामिल थे। वहां विद्यार्थियों ने गोवंश के अलग - अलग नस्ल को पहचाना और उसके बारे में जानकारी ली। इसके बाद बच्चों ने गौशाला में सेवा किया और वहां मौजूद गोवंशों को चारा,पुआल खिलाया। साथ ही, गौशाला की सफाई की और सीखा कि कैसे गाय का देखभाल किया जाता है।

मिथिला सांस्कृतिक परिषद्, बोकारो द्वारा मणिपद्म जयंती सह मैथिली कवि सम्मेलन का भव्य आयोजन

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

बोकारो : बोकारो में मैथिली भाषा-भाषियों की लब्ध प्रतिष्ठित संस्था मिथिला सांस्कृतिक परिषद् की ओर से साहित्य अकादेमी पुरस्कार से सम्मानित मैथिली भाषा के प्रसिद्ध साहित्यकार डॉ. ब्रजकिशोर वर्मा 'मणिपद्म' स्मृति जयंती समारोह सह मैथिली कवि सम्मेलन का भव्य आयोजन शनिवार की देर शाम सेक्टर 4 ई स्थित मिथिला एकेडमी पब्लिक स्कूल परिसर के विद्यापति सभागार में हुआ। समारोह का उद्घाटन मुख्य अतिथि मिथिला एकेडमी पब्लिक के अध्यक्ष राजेंद्र कुमार, मिथिला सांस्कृतिक परिषद् के अध्यक्ष जय प्रकाश चौधरी, महासचिव नीरज चौधरी, सांस्कृतिक कार्यक्रम निदेशक अरुण पाठक, वित्त सचिव मिहिर मोहन ठाकुर, मिथिला एकेडमी पब्लिक स्कूल के उपाध्यक्ष बटोही कुमार, आमंत्रित कविगण आदि ने दीप प्रज्ज्वलित कर तथा मणिपद्म की तस्वीर पर माल्यार्पण व पुष्पार्चन कर किया। अपने स्वागत भाषण में परिषद् के महासचिव नीरज चौधरी ने मैथिली साहित्य को समृद्ध बनाने में मणिपद्म जी के अवदानों पर प्रकाश डाला। मुख्य अतिथि राजेंद्र कुमार ने मणिपद्म के उपन्यास नैका बनिजारा के कथानक पर प्रकाश डालते हुए कहा कि उनकी रचनाएं सामाजिक सरोकार से ओतप्रोत हैं।

बोकारो में विस्थापन का दर्द, 26 हजार एकड़ जमीन के बदले अब तक मिला सिर्फ आश्वासन

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

बोकारो : स्टील सिटी बोकारो एक बार फिर विस्थापितों की समस्याओं को लेकर सुर्खियों में है। स्वतंत्रता सेनानी अलवतिया देवी की धरती पर बने बोकारो स्टील प्लांट और कोयला खदानों के नाम पर हजारों परिवारों की जमीन ली गई थी, लेकिन आज दशकों बाद भी ये परिवार अपने अधिकारों से वंचित बने हुए हैं। जिला कांग्रेस के महासचिव एवं अधिवक्ता घनश्याम नारायण ने एक प्रेस रिलीज जारी कर केंद्र सरकार और सेल प्रबंधन पर गंभीर आरोप लगाए। उन्होंने कहा कि विस्थापितों से कुल 26,908.565 एकड़ जमीन अधिग्रहित की गई थी।

उस समय वादा किया गया था कि प्रभावित परिवारों को स्टील प्लांट सहित विभिन्न औद्योगिक इकाइयों में रोजगार दिया जाएगा और उन्हें उचित मुआवजा एवं पुनर्वास भी मिलेगा। लेकिन जमीनी हकीकत इसके उलट है।

विस्थापितों की प्रमुख समस्याएं

रोजगार का अभावः स्थायी नियोजन का अब तक इंतजाम नहीं किया गया, मुआवजा व पुनर्वास में देरीः पर्याप्त मुआवजा और संपूर्ण पुनर्वास की प्रक्रिया अधूरी, बुनियादी सुविधाओं की कमीः विस्थापित गांवों में शिक्षा, स्वास्थ्य और मूलभूत सुविधाओं का घोर अभाव।

आंदोलन की चेतावनी

घनश्याम नारायण ने कहा कि विस्थापित दशकों से आवाज उठा रहे हैं। कई बार आंदोलन और बैठकें हुईं लेकिन हर बार केवल आश्वासन ही मिला। आज स्थिति इतनी खराब है कि विस्थापित परिवार रोटी, कपड़ा और मकान जैसी मूलभूत जरूरतों को भी तरस रहे हैं। उन्होंने सरकार और सेल प्रबंधन से तत्काल रोजगार, मुआवजा व समुचित पुनर्वास की मांग की है।

मोटर दुर्घटना मुआवना से संबंधित एक दिवसीय जिला स्तरीय कार्यशाला का किया गया आयोजन

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

कोडरमा : झारखण्ड राज्य विधिक सेवा प्राधिकार, रांची के निर्देश के आलोक में आज रविवार को जिला विधिक सेवा प्राधिकार कोडरमा के तत्वावधान में व्यवहार न्यायालय परिसर के सभागार में मोटर दुर्घटना मुआवना से सम्बंधित एक दिवसीय जिला स्तरीय कार्यशाला का आयोजन किया गया कमौके पर मुख्य अतिथि के रूप में प्रधान जिला एवं सत्र न्यायाधीश सह अध्यक्ष जिला विधिक सेवा प्राधिकार बाल कृष्ण तिवारी सहित अन्य अतिथियों ने संयुक्त रूप से दीप प्रज्ज्वलित कर कार्यशाला का विधिवत उद्घाटन किया ककार्यशाला में उपस्थित व्यवहार न्यायालय कोडरमा के न्यायिक पदाधिकारी, पुलिस पदाधिकारी व अधिवक्तागण मोटर दुर्घटना मुआवजा अधिनियम से सम्बंधित कई महत्वपूर्ण जानकारी प्राप्त किये कअतिथियों को पुष्प गुच्छ देकर सम्मानित किया गया कमौके पर प्रधान जिला जज बाल कृष्ण तिवारी ने कहा कि मानवता की सेवा ही पुलिस का सबसे पहला धर्म है जिसका पालन पुलिस पदाधिकारियों को पूरी निष्ठा एवं ईमानदारी पूर्वक करना चाहिए क उन्होंने पुलिस पदाधिकारियों को निर्देशित करते हुए कहा कि मोटर दुर्घटना मुआवजा अधिनियम से सम्बंधित अद्यतन जानकारी प्राप्त कर पीडितो को लाभ दिलाने की दिशा में सतत प्रयत्नशील रहे प्राधिकार उन्हें हर संभव सहायता देने के लिए कृत संकल्पित है ककार्यशाला को संबोधित करते हुए जिला जज तृतीय राकेश चंद्रा ने कहा कि दुर्घटना के शिकार व्यक्तियों को मदद करने में पुलिस का दायित्व सबसे अधिक महत्वपूर्ण है क पुलिस अपनी जिम्मेदारी का निर्वहन पूरी निष्ठा के साथ करें कमुख्य न्यायिक दंडाधिकारी अमित कुमार वैश ने हिट एंड रन सहित मोटर दुर्घटना एवं रोड सेफ्टी से सम्बंधित कई महत्वपूर्ण जानकारी देते हुए कहा कि हिट एंड रन के तहत पीड़ित व्यक्ति अथवा उनके आश्रितों को 2 लाख रूपए मुआवजा एवं दुर्घटना के शिकार व्यक्तियों की मदद करने वाले को केंद्र एवं राज्य सरकार द्वारा प्रोत्साहन राशि दिए जाने के प्रावधान है कअधिवक्ता संघ के अध्यक्ष जगदीश सलूजा ने कहा कि यह कार्यशाला अधिवक्ताओ एवं पुलिस पदाधिकारियों के लिए मील का पत्थर साबित होगा कउन्होंने इस कार्यशाला के आयोजन के लिए प्राधिकार को बधाई दी।

जनता की आवाज बने सांसद प्रतिनिधि धनंजय कुमार पुटूस

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

रामगढ़ : रामगढ़ की जनता की आवाज और समस्याओं को सीधा सुनने के लिए भाजपा नेता एवं सांसद प्रतिनिधि धनंजय कुमार पुटूस ने अपने कार्यालय में 28 वा जनता दरबार आयोजित किया।

जनता दरबार में सुबह 11 बजे से ही लोगों की भीड़ उमड़ पड़ी। जनता दरबार में जिन प्रमुख मुद्दों को जनता ने उठाया, उनमें– नौकरी के नाम पर चल रही ठगी और दलाली बिजली कटौती व अत्यधिक बिल नगर परिषद से जुड़ी समस्याएं, थाना स्तर की समस्याएं राशन कार्ड से जुड़ी गंभीर दिक्कतें शामिल थीं। धनंजय कुमार पुटूस ने हर शिकायत को गंभीरता से सुनते हुए कहा जनता की समस्या मेरा निजी मुद्दा है। किसी भी विभाग की लापरवाही बर्दाश्त नहीं की जाएगी। जनता की लड़ाई जनता के बीच से ही लडूँगा और हर समस्या को हल कराना मेरी

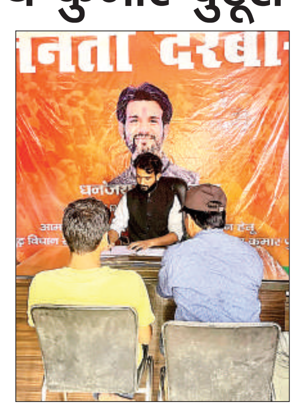

जिम्मेदारी है। उन्होंने मौके पर ही कई शिकायतों पर संबंधित अधिकारियों को फोन कर त्वरित समाधान कराया। साथ ही जनता को भरोसा दिलाया कि किसी भी व्यक्ति को न्याय दिलाने में कोई ढिलाई नहीं बरती जाएगी। उन्होंने कहा कि भाजपा का संकल्प सिर्फ चुनाव जीतना नहीं बल्कि जनता के बीच रहकर उनके हक की लड़ाई लड़ना है। आगे भी हर सप्ताह जनता दरबार आयोजित कर जनता से सीधा संवाद जारी रहेगा।

राधा गोविंद विश्वविद्यालय में हिंदी सप्ताह 2025 का भव्य समापन एवं पुरस्कार वितरण समारोह

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

रामगढ़ : राधा गोविंद विश्वविद्यालय के हिंदी विभाग द्वारा हिंदी दिवस के उपलक्ष्य में आयोजित हिंदी सप्ताह 2025 का समापन सह पुरस्कार वितरण समारोह बड़े हर्षोल्लास और गरिमामय वातावरण में संपन्न हुआ। कार्यक्रम का शुभारंभ विद्यार्थियों ने विश्वविद्यालय की कुलाधिपति बी एन साह, सचिव प्रियंका कुमारी, कुलपति प्रो. (डॉ.) रश्मि, कुलसचिव प्रो. (डॉ.) निर्मल कुमार मंडल , वित्त एवं लेखा पदाधिकारी डॉ संजय कुमार, परीक्षा नियंत्रक प्रो. (डॉ.) अशोक कुमार, प्रबंध समिति सदस्य अजय कुमार के लिए स्वागत गीत गाकर किया। तत्पश्चात सभी विशिष्ट अतिथियों को पौधा देकर सम्मानित किया गया। हिंदी विभागाध्यक्ष डॉ. मनमीत कौर ने स्वागत भाषण देते हुए सप्ताह भर चले विभिन्न आयोजनों–कविता-पाठ, निबंध-लेखन, वाद-विवाद, भाषण –की रूपरेखा प्रस्तुत की। उन्होंने कहा कि हृहिंदी सप्ताह छात्रों के लिए भाषा को समझने, आत्मसात करने और सृजनात्मकता प्रदर्शित करने का सशक्त मंच है। विश्वविद्यालय के कुलाधिपति बी एन साह ने अपने शुभकामना संदेश में कहा–हिंदी साहित्य समाज की नब्ज को पहचानने और उसे शब्द देने की क्षमता रखता है। आज की युवा पीढ़ी को चाहिए कि वे हिंदी में लेखन की परंपरा को और समृद्ध करें। वहीं सचिव प्रियंका कुमारी ने कहा–आज हिंदी वैश्विक स्तर पर अपनी पहचान बना रही है। तकनीकी और डिजिटल युग में हिंदी की संभावनाएँ अनंत हैं, विद्यार्थियों को इसका अधिकतम उपयोग करना चाहिए। इस अवसर पर कुलपति प्रो. (डॉ.) रश्मि ने कहा–हिंदी हमारी अस्मिता और संस्कृति की धड़कन है। मातृभाषा का सम्मान करना हमारी नैतिक जिम्मेदारी है। जब हम हिंदी में सोचते और लिखते हैं, तब हमारी अभिव्यक्ति सबसे सशक्त होती है। कुलसचिव प्रो. (डॉ) निर्मल कुमार मंडल ने अपने वक्तव्य में कहा–हिंदी हमारी आत्मा की भाषा है। यह केवल साहित्य की नहीं, बल्कि विज्ञान और तकनीक की भी भाषा बनने की क्षमता रखती है। युवाओं को चाहिए कि वे हिंदी को आत्मविश्वास के साथ व्यवहार और शोध की भाषा बनाएं। परीक्षा नियंत्रक प्रो. डॉ. अशोक कुमार ने अपने संबोधन में कहा–हिंदी दिवस और हिंदी सप्ताह केवल औपचारिकता नहीं, बल्कि भाषा-संवर्धन का संकल्प है। छात्र-छात्राओं को इसे रोजमर्रा की भाषा बनाने की आवश्यकता है। प्रतियोगिताओं के विजेताओं को स्मृति-चिह्न एवं प्रमाण पत्र प्रदान किए गए। कविता-पाठ में सुधा कुमारी प्रथम रहीं, वाद-विवाद प्रतियोगिता में सुधा कुमारी और अंजली कुमारी यादव क्रमशः प्रथम एवं द्वितीय स्थान पर रहीं, वहीं निबंध-लेखन में गीता कुमारी ने प्रथम स्थान प्राप्त किया। भाषण प्रतियोगिता में अंजली कुमारी यादव विजेता रही।

संक्षिप्त खबरें

दुर्गा पुजा को लेकर थाना परिसर मे शांति समिति की हुई बैठक

मरकच्चो : आगामी दुर्गा पुजा को लेकर नवलशाही थाना परिसर में शांति समिति की बैठक की गई। बैठक की अध्यक्षता कोडरमा एस डी पी ओ अनिल सिंह ने किया की। इस मौके पर प्रखंड विकास पदाधिकारी भोला कुमार पांडेय, अंचलाधिकारी रवींद्र पांडेय, अवर निरीक्षक विनोद कुमार,कोडरमा थाना प्रभारी विकाश पासवान मौजूद रहे। वही नवलशाही थाना प्रभारी शशिभूषण कुमार ने कहा कि दुर्गा पुजा आस्था और सांस्कृति का प्रतिक है,जिससे शांति पूर्ण तरीके से मानना सबकी जिम्मेदारी है। बैठक के दौरान विधि व्यवस्था, पंडालो में सुरक्षा प्रबंधन,यातायात नियंत्रण, अवैध शराब बिक्री पर रोक, पेट्रोलिंग बढ़ाने सहित शोभा यात्रा के मार्ग पर विशेष ध्यान देने, पुजा में अशांति फैलाने वाले को बक्शा नही जायेगा, और पंडालो एवं मेला में सीसीटीवी कैमरा लगाने सहित अन्य कई निर्देश दिया गया। मौके पर नवलशाही बच्छेडीह दुर्गा पुजा समिति के अध्यक्ष किशोर यादव, कोषाअध्यक्ष विनय दास, सचिव प्रकाश राणा, समाजसेवी शंकर साव, बीरेंद्र यादव,शिवम कुमार सिन्हा, एवं कई पुजा समिति का कार्यकर्त्ता मौजूद थे ।

दुर्गा पूजा को लेकर डोमचांच थाना परिसर में शांति समिति की बैठक संपन्न

डोमचांच (कोडरमा) : थाना में रविवार को हुई शांति समिति की बैठक में दुर्गा पूजा शांतिपूर्ण तरीके से मनाने का निर्णय लिया गया। बैठक में उपस्थित प्रबुद्धजनों एवं पूजा समिति के लोगों ने बारी-बारी से जानकारी दी एवं अपनी समस्याओं को प्रशासन के समक्ष साझा किया। पूजा समिति के लोगों को प्रशासन ने हर संभव मदद करने का भरोसा दिया। बैठक में बोलते हुये एसडीपीओ ने कहा कि दुर्गा पूजा न केवल धार्मिक उत्सव है, बल्कि यह समाज में एकता और भाईचारे का प्रतीक भी है। उन्होंने उपस्थित लोगों से आपसी भाईचारे के साथ शांतिपूर्ण तरीके से पर्व मनाने की अपील की साथ ही कहा कि मेला आने के दौरान बच्चों के पैकेट मे नाम एड्रेस और मोबाइल नंबर लिख कर जरूर लिख कर डाल दें ताकि कोई बच्चा खो जाता है तो उसे आसानी से खोजा जा सके। उन्होंने कहा की दुर्गा पूजा के अवसर पर किसी तरह का सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन करने वाली कमेटी अश्लीलता पर विशेष ध्यान रखें अन्यथा प्रशासन द्वारा कड़ी कानूनी कार्रवाई की जायेगी। थाना प्रभारी ओम प्रकाश ने कहा कि पूजा के दौरान डीजे पर पूर्ण रूप से प्रतिबंध रहेगी और सोशल मीडिया पर अफवाह फैलाने वाले लोगों पर विशेष नजर रहेगी। लोगों को सतर्कता बरतने की जरूरत है, अफवाह फैलाने वाले की सूचना प्रशासन को तत्काल दें ताकि दोषी के विरुद्ध कड़ी कार्रवाई की जा सके। उन्होंने कहा कि शरारती एवं उपद्रवि तत्वों पर प्रशासन की पैनी नजर रहेगी। एसडीपीओ ने कहा कि दुर्गा पूजा को देखते हुये पुलिस की गश्ती बढ़ाई जायेगी और अवैध शराब के कारोबारियों के खिलाफ छापेमारी अभियान चलाया जायेगा। उन्होंने कहा कि पूजा समिति अपने-अपने पूजा पंडाल में सीसीटीवी कैमरा एवं एम्बुलेंस, अग्निशमन, पुलिस प्रशासन, थाना प्रभारी का मोबाईल नंबर अवश्य लगाएं। जिससे सुरक्षा के पुख्ता इंतजाम पूजा पंडाल में हो सकेगा। साथ ही मूर्ति विसर्जन के दिन वीडियोग्राफी कराना अनिवार्य है। किसी प्रकार के अप्रियघटना होने पर कमेटी के ऊपर कार्रवाई की जायेगी। उन्होंने उपस्थित लोगों से पुलिस प्रशासन को सहयोग करने की अपील की है। डोमचांच प्रखंड विकास पदाधिकारी भोला पाण्डेय ने वालंटियर को समय पर और जगह पर रहने को कहा गया है। मौके पर सीओ रविंद्र पाण्डेय, भाजपा नेता महेंद्र वर्मा, निवर्तमान पप्पू मेहता, बगड़ो मुखिया प्रतिनिधि राजेंद्र यादव, नावाडीह मुखिया प्रतिनिधि शंकर दास, कांग्रेस नेता प्रदीप सिंह, एसआई पाठक सहित कई जनप्रतिनिधि मौजूद थे।

दक्षिण पूर्व रेलवे महिला कल्याण संगठन द्वारा चित्रांकन प्रतियोगिता का हुआ आयोजन

बोकारो : दक्षिण पूर्व रेलवे महिला कल्याण संगठन, आद्रा मंडल की ओर से रविवार को दक्षिण पूर्व रेलवे संस्थान, बोकारो में चित्रांकन प्रतियोगिता का सफल आयोजन किया गया। इस प्रतियोगिता का उद्देश्य बच्चों की रचनात्मकता को प्रोत्साहन देना था। लगभग 100 बच्चों ने बड़े उत्साह से इसमें भाग लिया और अपनी कलाकृतियों के जरिए रंगों की दुनिया में कल्पनाओं को साकार किया। प्रतियोगिता के वर्ग और विषय प्रतियोगिता को उम्र के आधार पर तीन वर्गों में विभाजित किया गया था। प्रथम वर्ग (6 से 9 वर्ष) : परिवार के साथ बाहर जाना, मेरा पसंदीदा जानवर द्वितीय वर्ग (9 से 12 वर्ष) : मेरा सुपर हीरो, अंतरिक्ष यान/अंतरिक्ष यात्री तृतीय वर्ग (13 से 15 वर्ष) : मेरी पसंद का त्योहार, जानवरों के साथ जंगल का दृश्य बच्चों की चित्रकृतियों में जहां सामाजिक और सांस्कृतिक चेतना झलकी, वहीं उनकी कल्पनाशक्ति और कलात्मक दृष्टिकोण ने सभी को प्रभावित किया। आयोजन में महिला संगठन की उपाध्यक्ष श्रीमती मौसम कांत और सचिव श्रीमती सुषमा शर्मा ने विशेष भूमिका निभाई। इसके अलावा संस्थान के कई पदाधिकारी इस अवसर पर मौजूद रहे, जिनमें शामिल हैं : नवपदस्थापित सचिव श्री सुब्रतो साहा,पूर्व सचिव श्री असीत बनर्जी,उपसचिव श्री संजय मुखर्जी, कार्यकारी सदस्य श्री बिप्लब सरकार समारोह में सभी अतिथियों ने बच्चों का उत्साहवर्धन किया और उनकी प्रतिभा की सराहना करते हुए उज्ज्वल भविष्य की शुभकामनाएँ दीं। इस सफल आयोजन के लिए दक्षिण पूर्व रेलवे महिला कल्याण संगठन, आद्रा मंडल एवं संस्थान के पदाधिकारियों, अभिभावकों और बच्चों को हार्दिक बधाई एवं धन्यवाद प्रेषित किया गया।

एक नजर

सिल्ली को अंधेर नगरी, काना राजा कह कर कोसते हैं लोग

मुरी : त्यौहारी मौसम में बिजली की आंख मिचौली और लौ वोल्टेज से बिजली उपभोक्ता काफी परेशान है। बिजली की लचर व्यवस्था के कारण दुकान एवं प्रतिष्ठान जल्द ही शाम को बंद कर दिए जाते है। बिजली आपूर्ति की कमी के कारण मोबाइल फोन डिस्चार्ज हो जाता है जिससे आपसी संपर्क करने में असुविधा होती है। सिल्ली मुरी के लोग त्यौहार में मेहमानों को नहीं बुला पाते क्योंकि बिजली नहीं रहने पर लोगों को मेहमानों के सामने लज्जित व अपमानित होना पड़ता है। पड़ोसी राज्य पश्चिम बंगाल से आने वाले मेहमान सिल्ली को अंधेर नगरी काना राजा कहते हैं।

बोकारो में विवाहिता की संदेहास्पद मौत, दहेज उत्पीड़न और हत्या का आरोप

बोकारो : बोकारो में एक बार फिर विवाहिता की संदेहजनक मौत का मामला सामने आया है। मृतका की पहचान पूनम मिश्रा के रूप में हुई है, जिसकी शादी करीब सात वर्ष पूर्व बालीडीह थाना क्षेत्र के राजेंद्र नगर निवासी मृत्युंजय शर्मा से वैदिक रीति-रिवाजों के साथ हुई थी। परिजनों का आरोप है कि शादी के बाद से ही पूनम को दहेज के लिए उत्पीड़ित किया जा रहा था। मायकेवालों के मुताबिक आए दिन उसके साथ मारपीट की जाती थी। मृतका के भाई और पिता ने बताया कि दो अवसरों पर ससुरालवालों की मारपीट से हालात इतने बिगड़े कि पूनम को मायके भेज दिया गया था। करीब छह महीने तक पूनम अपने मायके में रही, इसके बाद उसका भाई उसे ससुराल छोड़ आया। इस बीच दो दिन पहले जब भाई पूनम से मिलने मिठाई लेकर ससुराल पहुंचा तो उसकी सास ने उसे खरी-खोटी सुनाई, जिसके बाद वह लौट आया। अब पूनम की मौत ने परिजनों को झकझोर दिया है। वे इसे हत्या बताते हुए दहेज उत्पीड़न का गंभीर आरोप लगा रहे

अभियुक्त गिरफ्तार भेजा गया जेल

मरकच्चो : आगामी दुर्गा पूजा पर्व को देखते हुए विधि-व्यवस्था बनाये रखने एवं चोरी जैसे आपराधिक घटनाओं पर अंकुश लगाने के उद्देश्य से पुलिस अधीक्षक अनुदिप सिंह के द्वारा जिले के सभी थाना प्रभारियों को थाना क्षेत्र में विशेष गश्ती बढ़ाने एवं अपराधियों की गतिविधियों पर कड़ी नजर रखने का निर्देश दिया गया था। इसी दौरान 20 सितम्बर की रात्रि को मरकच्चो थाना क्षेत्र के ग्राम ब्रहमटोली के आसपास पुलिस बल द्वारा रात्रि गश्ती की जा रही थी । गश्ती दल जब ग्राम ब्रहमटोली स्थित दक्षिणी पंचायत भवन के पास पहुँचा तो पुलिस कोल्ड रूम के अंदर प्रवेश किया तो पुलिस को देखकर एक संदिग्ध व्यक्ति वहाँ छिपने का प्रयास करते हुए दिखाई दिया। गशती टीम द्वारा तत्परता दिखाते हुए संदिग्ध व्यक्ति को कब्जे में लिया गया तथा पंचायत भवन के कोल्ड रूम में स्थित जरनेटर में लगा हुए काले रंग का मोटर को बरामद किया गया । वही मरकच्चो थाना कांड संख्या 70/25 दर्ज करते हुए गिरफ्तार अभियुक्त सीताराम तिवारी उम्र 33 वर्ष पिता स्व विश्वनाथ तिवारी साकिन भगवतीडीह,थाना मरकच्चो जिला कोडरमा जेल भेज दिया एवं काला रंग का मोटर 02, टीभीएस कंपनी का काले रंग का लुना मोटरसाइकिल संख्या जेएच 11डब्लू 7365 जब्त किया।

भाजयुमो ने नमो युवा रन का किया आयोजन

▶ नशा मुक्त जमशेदपुर के लिए दौड़े हजारों युवा, पूर्व मुख्यमंत्री चंपाई सोरेन, सांसद विद्युत महतो ने दिखाई हरी झंडी

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

जमशेदपुर : प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के 75वें जन्मदिवस पर 17 सितंबर से 2 अक्टूबर तक भारतीय जनता पार्टी द्वारा चलाए जा रहे सेवा पखवाड़ा अभियान के तहत रविवार को भाजयुमो जमशेदपुर महानगर की ओर से ह्लनमो युवा रनह्व मैराथन दौड़ का भव्य आयोजन किया गया। सैक्रेड हार्ट कॉन्वेंट स्कूल के समीप आयोजित इस मैराथन में युवाओं ने नशा मुक्त एवं अपराध मुक्त जमशेदपुर का संकल्प लिया। भाजयुमो जिलाध्यक्ष नीतीश कुशवाहा के नेतृत्व में आयोजित इस कार्यक्रम का शुभारंभ भाजपा के वरिष्ठ नेताओं द्वारा हरी झंडी दिखाकर किया गया। इसमें राज्य के पूर्व मुख्यमंत्री चंपाई सोरेन, जमशेदपुर के सांसद विद्युत वरण महतो, भाजपा के पूर्व प्रदेश अध्यक्ष डॉ. दिनेशानंद गोस्वामी, प्रदेश मंत्री नंदजी प्रसाद एवं महानगर अध्यक्ष सुधांशु ओझा सहित कई प्रमुख नेता मौजूद रहे। करीब 5 किलोमीटर लंबी इस मैराथन दौड़ की शुरूआत कॉन्वेंट स्कूल से हुई, जो सीएच एरिया और साईं मंदिर होकर पुनः कॉन्वेंट स्कूल पर समाप्त हुई। इस मैराथन में शहर के हजारों छात्र एवं युवाओं ने जोश और उत्साह के साथ भाग लिया। पुरुष एवं महिला वर्ग में आयोजित दौड़ के विजेताओं को नकद पुरस्कार और ट्रॉफी प्रदान की गई। जिसमें प्रथम स्थान पर आने वाले प्रतिभागियों को 11 हजार रुपये, द्वितीय स्थान पर 75 सौ रुपये और तृतीय स्थान पर 51 सौ रुपये की पुरस्कार राशि भेंट की गई। महिला वर्ग में निशा कुमारी साह प्रथम, चैना कुमारी द्वितीय और नंदिनी तृतीय रहीं। वहीं पुरुष वर्ग में अर्जुन टुडू ने पहला, बबलू टुडू ने दूसरा और अनुपम महतो ने तीसरा स्थान प्राप्त किया। मैराथन के दौरान भाजपा कार्यकताओं एवं सामाजिक संगठनों द्वारा पूरे मार्ग में सेवा शिविर लगाए गए। प्रतिभागियों के लिए पानी, नाश्ता एवं प्राथमिक उपचार की व्यवस्था की गई। साथ ही सभी धावकों को पहचान स्वरूप टी-शर्ट प्रदान किए गए। आयोजन को लेकर युवा मोर्चा के सैकड़ों कार्यकर्ता पूरी तरह सक्रिय दिखे।

इस अवसर पर मुख्यरूप से उपस्थित राज्य के पूर्व मुख्यमंत्री चंपाई सोरेन ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के 'युवा फिट तो देश हिट' की भावना का साकार रूप 'नमो युवा रन' है। नमो युवा रन सिर्फ एक दौड़ नहीं, बल्कि युवाओं के उत्साह, देशभक्ति और स्वस्थ भारत के सपने को साकार करने की पहल है। पीएम नरेंद्र मोदी का लक्ष्य है देशवासी स्वस्थ्य हों, इसीलिए उन्होंने फिट इंडिया मूवमेंट की शुरूआत की है। प्रधानमंत्री का यह स्पष्ट संदेश है कि 'युवा ही भारत का भविष्य हैं।' जब युवा स्वस्थ, ऊजार्वान और अनुशासित रहेंगे, तभी भारत सशक्त और समृद्ध बनेगा। नशा मुक्त एवं अपराध मुक्त जमशेदपुर के संकल्प के साथ नमो युवा रन इसी विचार को धरातल पर उतारने का एक माध्यम है। उन्होंने इस आयोजन को सफल बनाने के लिए भाजयुमो जिलाध्यक्ष नीतीश कुशवाहा समेत सभी कार्यकताओं को बधाई दी। वहीं, सांसद विद्युत बरण महतो ने कहा कि यह मैराथन युवाओं को फिटनेस और स्वस्थ रहने के लिए प्रेरित करता है। यह पहल फिट इंडिया मूवमेंट और खेलेगा इंडिया, जीतेगा इंडिया जैसे अभियानों को गति देगा। आज की पीढ़ी, जो मोबाइल और सोशल मीडिया की दुनिया में उलझी रहती है, उनमें यह दौड़ नशे से दूर रहने और खेलों की ओर बढ़ने का संदेश देती है।

आरवाईए का तीसरा जिला सम्मेलन संपन्न, 59 सदस्यीय जिला कमेटी गठित

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

सरिया : रविवार को रेलवे फाटक के समीप अक्षय झील कोठी में रिवोल्यूशनरी यूथ एसोसिएशन का तीसरा जिला सम्मेलन उत्साह और जोश के साथ संपन्न हुआ। सम्मेलन में सर्वसम्मति से 59 सदस्यीय जिला कमिटी का गठन किया गया, जिसमें कॉ. कामेश्वर यादव को जिला अध्यक्ष और कॉ. अशोक मिस्त्री को जिला सचिव चुना गया। इसके अलावा मो. एकराम, दिनेश सोरेन, संतोष यादव, असगर अली, कुलदीप राय को उपाध्यक्ष, और राजकिशोर बैठा, जिम्मी चौरसिया, भोला महतो, आनंदी यादव, बनीता दीप, छोटू यादव को संयुक्त सचिव के रूप में 13 सदस्यीय ऑफिस बेयरर कमिटी गठित की गई। सम्मेलन की शुरूआत शहीद साथियों की याद में आर वाई ए राष्ट्रीय महासचिव कॉ. नीरज कुमार द्वारा ध्वजारोहण और मौन धारण के साथ हुई। उद्घाटन सत्र को संबोधित करते हुए भाकपा-माले पोलित ब्यूरो सदस्य व बगोदर के पूर्व विधायक कॉ. विनोद कुमार सिंह ने कहा कि देश में रोजगार, शिक्षा और प्रवासी मजदूरों के मुद्दे सबसे गंभीर हैं, लेकिन केंद्र सरकार इस पर उदासीन है। उन्होंने गिरिडीह के पांच प्रवासी मजदूरों के नाइजर में लापता होने का जिक्र करते हुए कहा कि जिस कंपनी में वे काम करते थे, उसने मोदी सरकार को चुनावी बांड के जरिए करोड़ों का चंदा दिया, फिर भी मजदूरों की सुरक्षा की अनदेखी की गई।

पंचायत भवन में पौध वितरण कार्यक्रम 150 से अधिक प्रतिभागियों ने लिया हिस्सा

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

चांडिल : GRSE, कोलकाता एवं टीआरसीएससी, जमशेदपुर के संयुक्त तत्वावधान में शनिवार को मरिधान पंचायत भवन, तमाड़ में पौध वितरण कार्यक्रम का शुभारंभ किया गया। कार्यक्रम में मरिधान, उलीडीह एवं जारगो पंचायत के 150 से अधिक प्रतिभागियों ने हिस्सा लिया। यह पहल GRSE के सीएसआर के तहत सीमांत एवं वंचित किसानों की आजीविका सुदृढ़ करने और पर्यावरण संरक्षण को बढ़ावा देने के उद्देश्य से की गई। इसके तहत तीनों पंचायतों के 500 किसानों को 10-10 फलदार पौधे उपलब्ध कराए जाएंगे। कार्यक्रम का शुभारंभ टीआरसीएससी संस्था के डॉ. सुरेश प्रसाद के स्वागत भाषण से हुई। इसके बाद मुख्य अतिथि GRSE के पदाधिकारी संतोष मिश्रा एवं रवि साह का शॉल ओढ़ाकर और पौधा भेंटकर स्वागत किया गया। मुख्य अतिथियों ने अपने संबोधन में कहा कि बदलते जलवायु परिदृश्य में फलदार वृक्षारोपण पर्यावरण संतुलन, स्वच्छ वायु, फल-फूल और अतिरिक्त संसाधन उपलब्ध कराने का महत्वपूर्ण साधन है। उन्होंने किसानों से अधिक से अधिक पेड़ लगाने का आह्वान किया। इस अवसर पर टीआरसीएससी के अध्यक्ष डॉ. तापस पाइक ने संस्था की गतिविधियों की जानकारी दी, वहीं श्री मानस कुमार दास ने परियोजना के उद्देश्यों पर प्रकाश डाला।कार्यक्रम में तीनों पंचायतों के मुखिया, जनप्रतिनिधि और बड़ी संख्या में किसान उपस्थित थे। पौध वितरण के साथ कार्यक्रम का समापन हुआ।

गिरिडीह मंडल कारा में जेल अदालत-सह-विधिक जागरूकता एवं स्वास्थ्य शिविर का हुआ आयोजन

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

सरिया : माननीय झालसा, रांची के निदेर्शानुसार और माननीय प्रधान जिला एवं सत्र न्यायाधीश सह अध्यक्ष, जिला विधिक सेवा प्राधिकार, गिरिडीह के मार्गदर्शन में आज मंडल कारा, गिरिडीह में जेल अदालत-सह-विधिक जागरूकता शिविर और स्वास्थ्य शिविर का आयोजन किया गया। कार्यक्रम को संबोधित करते हुए लीगल एंड डिफेंडिंग काउंसिल के चीफ श्री नजमुल हसन ने बताया कि माननीय नालसा, नई दिल्ली और झालसा, रांची के तहत काराधीन बंदियों के लिए समय-समय पर विभिन्न कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं, जिनके माध्यम से उन्हें उचित विधिक सहायता प्रदान की जाती है। इस कड़ी में प्रत्येक माह जेल अदालत का आयोजन किया जाता है। जिला विधिक सेवा प्राधिकार, गिरिडीह द्वारा बंदियों को निरंतर विधिक सहायता उपलब्ध कराने के लिए पारा लीगल वॉलिंटियर्स की नियुक्ति की गई है, जो बंदियों की समस्याओं को कारा प्रशासन के माध्यम से प्राधिकार तक पहुंचाते हैं। प्राधिकार द्वारा त्वरित कार्रवाई कर इन समस्याओं का समाधान किया जाता है। श्री हसन ने बंदियों को आवेदन देकर निःशुल्क अधिवक्ता सुविधा का लाभ उठाने की जानकारी दी। उन्होंने बताया कि जो बंदी स्वयं के खर्च पर अधिवक्ता रखने में असमर्थ हैं, उनके लिए माननीय सर्वोच्च न्यायालय के निदेर्शानुसार लीगल एड डिफेंस काउंसिल के तहत अधिवक्ताओं की नियुक्ति की गई है, जो उनके केस में निरंतर पैरवी करते हैं। जिला विधिक सेवा प्राधिकार द्वारा बंदियों के मामलों की नियमित मॉनिटरिंग भी की जाती है। पारा लीगल वॉलिंटियर्स को आम बंदियों के बीच जागरूकता कार्यक्रम चलाने और यह सुनिश्चित करने का निर्देश दिया गया कि कोई भी बंदी अपने कानूनी अधिकारों से वंचित न रहे।

सिरका में एक दिवसीय फुटबॉल टूनामेंट का हुआ आयोजन

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

अनगड़ा : सिरका महेशपूर स्कूल मैदान में एक भव्य एकदिवसीय फुटबॉल टूनामेंट का आयोजन किया गया, जिसने स्थानीय समुदाय में उत्साह और जोश का संचार किया। टूनामेंट का शुभारंभ प्रमुख प्रतिनिधि प्रेम उरांव ने फुटबॉल को किक मारकर किया, जिससे खिलाड़ियों और दर्शकों में नई ऊर्जा का संचार हुआ।फाइनल मुकाबला नायक ब्रदर्स गेतलसूद और हुसैन 11 महेशपूर के बीच खेला गया। रोमांचक मुकाबले में हुसैन 11 महेशपूर ने पेनाल्टी शूटआउट में 3-2 से जीत हासिल की। गोलकीपर अनीस खान को उनकी शानदार गोलकीपिंग के लिए मैन ऑफ द मैच चुना गया। विजेता और उपविजेता टीमों को नकद राशि, ट्रॉफी और मेडल से सम्मानित किया गया। मंच संचालन समाजसेवी परनव महतो ने किया, जबकि नौशद खान और धर्मवीर नायक ने रेफरी की भूमिका निभाई। पंचायत अध्यक्ष समीम खान के योगदान से आयोजन सुव्यवस्थित रहा। जकिर खान, अनवर खान, जाकिर खान, परवेज खान, बाशिर खान, रफिक खान, जावेद उर्फ सोनू खान, हुसैन खान, बिट्ठू खान, दशरत पहान, पप्पू खान सहित कई गणमान्य व्यक्तियों ने आयोजन को सफल बनाया।

स्टेडियम में आदिवासी एकता मंच की हुई बैठक, मांझी हडाम को सुविधा से वंचित होने पर धरना का निर्णय

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

सरिया : आदिवासी एकता मंच सरिया प्रखंड की एक महत्वपूर्ण बैठक रविवार को सरिया स्टेडियम में आयोजित की गई। बैठक की अध्यक्षता राम जी मुर्मू ने की, जबकि संचालन उपेंद्र ने किया। अपने अध्यक्षीय भाषण में राम जी मुर्मू ने समाज में एकता को मजबूत करने और सरकारी योजनाओं का लाभ लेने के लिए जागरूकता पर जोर दिया। उन्होंने कहा कि एकजुट और जागरूक समाज ही अपने हक और अधिकार प्राप्त करने में सक्षम होगा। बैठक में बताया गया कि आदिवासी समाज के सामाजिक, आर्थिक और शैक्षणिक उत्थान के लिए प्रत्येक आदिवासी बाहुल्य गांव में पांच प्रकार के प्रतिनिधियों–मांझी हडाम, जोग मांझी, पराणिक, नायके और कुडम नायके–का चयन किया गया है। ये प्रतिनिधि समाज को मार्गदर्शन देते हैं और सरकार द्वारा इन्हें कल्याण कोष से प्रति माह 1000 रुपये प्रदान किए जाते हैं। हालांकि, गिरिडीह जिले के 13 प्रखंडों में से 12 प्रखंडों के मांझी हडाम को यह सुविधा मिल रही है, लेकिन सरिया प्रखंड के 17 गांवों के आदिवासी मांझी हडाम इससे वंचित हैं। इस मुद्दे पर गहन चर्चा के बाद निर्णय लिया गया कि सरिया के मांझी हडाम को यह सुविधा दिलाने के लिए उपायुक्त गिरिडीह और प्रखंड विकास पदाधिकारी सरिया के समक्ष धरना-प्रदर्शन किया जाएगा। बैठक में कुर्मी-कुड़मी समाज द्वारा आदिवासी श्रेणी में शामिल होने की मांग का भी पुरजोर विरोध किया गया। प्रतिनिधियों ने कहा कि यदि कुर्मी-कुड़मी को आदिवासी का दर्जा दिया गया, तो इससे आदिवासी समाज के हक और अधिकार प्रभावित होंगे। इसके खिलाफ संवैधानिक तरीके से आंदोलन करने का निर्णय लिया गया। बैठक में डकोईया, खैराघाट, कारीपहड़ी, खेसकरी, मोकामो, पंदना, श्रीरामडीह, काला पत्थर, बेहराटांड़, बिरहोर टंडा, तिलबानी, बीच कट्ठी, बरकट्ठी, लुतियानो, लोवाबार, पिपराडीह, मायापुर, भोलपहरी और सिमराबेडा से मांझी हडाम सहित नूनुलाल सोरेन, सुरेंद्र मांझी, सोनाराम मुर्मू, राशि लाल मांझी, ननकू मरांडी, दिनेश टुडू, सोनेलाल मुर्मू, बाबूलाल मरांडी, नीलकंठ टुडू, दुबलाल मांझी, महादेव मांझी, हरिलाल बेसरा और अन्य आदिवासी समाज के लोग उपस्थित थे।

संक्षिप्त खबरें

1998 से दगड़ीगोंडा में हो रही मां दुर्गा की पूजा

पटमदा : पटमदा प्रखंड के कमलपुर थाना क्षेत्र के दगड़ीगोंडा गांव में श्री श्री सार्वजनिक दुर्गा पूजा समिति दगड़ीगोंडा के द्वारा वर्ष 1998 में स्थापना होने के बाद लगातार आस्था और श्रद्धा पूर्वक ग्रामीणों के द्वारा सार्वजनिक रूप से गांव के अंदर स्थापित मंदिर में माता दुर्गा की पूजा होती आ रही हैं। आसपास के सभी गांव से माता के मूर्ति दर्शन के लिए ग्रामीण पहुंचते है। समिति के अध्यक्ष बाबूराम महतो ने बताया कि श्री श्री सार्वजनिक दुर्गा पूजा समिति दगड़ीगोंडा के सभी सदस्य माता दुर्गा के पूजा के दौरान काफी सक्रिय रहते हैं।गांव में बैठक होने के बाद दुर्गा पूजा में होने वाले कार्यक्रम और सांस्कृतिक अनुष्ठान पर चर्चा के बाद सभी के निर्णय से पूजा की रूपरेखा तैयार होती हैं। पूजा समिति संचालन समिति बनाया गया हैं। जिसमे अध्यक्ष बाबूराम महतो, सचिव शक्ति पद महतो,कोषाध्यक्ष हराधन घोषाल सहित गांव के कई गणमान्य व्यक्ति शामिल थे।वही बैठक आयोजित कर विशिष्ट लोगों को आमंत्रित करने का भी काम जारी रखा गया हैं। दर्शकों के लिए छऊ नृत्य का आयोजन किया गया है।

चतरा गांव में पीसीसी पथ निर्माण कार्य का प्रदीप वर्मा ने किया शिलान्यास

अनगड़ा : खिजरी विधानसभा क्षेत्र अंतर्गत अनगड़ा प्रखंड चतरा में रिंग रोड से रामकृष्ण महतो के घर तक पीसीसी पथ का निर्माण कार्य का राज्य सभा सदस्य डॉ प्रदीप कुमार वर्मा के निधि से शिलान्यास किया गया मौके पर भाजपा के वरिष्ठ कार्यकर्ता श्रीदाम सिंह मुंडा के पूर्व विधायक रामकुमार पाहन,पूर्व जिलाध्यक्ष जैलेंद्र कुमार,मंडल अध्यक्ष राजेंद्र महतो,नूतन पाहन,रामकृष्ण महतो,साईनाथ महतो,सिंधु महतो,राजेश मिश्रा,बिगेसर महतो,संतोष महतो,मनीराम महतो,रतनू कुजूर,बसंत महतो,साधु महतो आदि उपस्थिति थेभी के निर्णय से पूजा की रूपरेखा तैयार होती हैं।पूजा समिति संचालन समिति बनाया गया हैं। जिसमे अध्यक्ष बाबूराम महतो, सचिव शक्ति पद महतो,कोषाध्यक्ष हराधन घोषाल सहित गांव के कई गणमान्य व्यक्ति शामिल थे। वही बैठक आयोजित कर विशिष्ट लोगों को आमंत्रित करने का भी काम जारी रखा गया हैं। दर्शकों के लिए छऊ नृत्य का आयोजन किया गया है।

जेडीयू पार्टी का डाक बंगला में हुई बैठक

सिमडेगा : जनता दल यूनाइटेड के नेतृत्व में रविवार को जिला परिषद सिमडेगा के डाकबंगला में बैठक का आयोजन किया गया। जिसमें मुख्य अतिथि जेडीयू के प्रदेश महा सचिव भगवान सिंह जी और सिमडेगा जिला संगठन प्रभारी अजय सोनी जी, आलोक जी, जेडीयू पार्टी के गणमान्य व्यक्ति, और भारी संख्या में जनता उपस्थित थे। जिनके बीच श्रुनिल कुमार नायक को सिमडेगा जिला अध्यक्ष घोषित किया गया। और धनंजय राम को उपाध्यक्ष के रूप में घोषित किया गया और सभी के बीच सम्मानित किया गया। बैठक में पार्टी के अन्य लोग भी उपस्थित रहे।

नशा मुक्त भारत व स्वस्थ भारत के निर्माण के साथ बीरु मे विशालक्षि फाउंडेशन ने किया जगरूकता कार्यक्रम

सिमडेगा : जिले के बीरु निवासी समाज सेवी प्रेम कुमार बीरु पंचायत मे भारत सरकार के निदेर्शानुसार आज जगरूकता कार्यक्रम किया गया। विशालक्षि फाउंडेशन ने बीरु मे कार्यक्रम आयोजित कर बच्चों युवा वुजूर्ग सबको नशे न करने की बात कही। मोदी जी के जन्मदिन के अवसर पर ये कार्यक्रम मे बच्चों के बीच नशे के खिलाफ निबंध प्रतियोगीता का आयोजन भी किया गया था। कार्यक्रम मे मुख्य अतिथि बीरु मुखिया गंगाधर लोहरा, सागर प्रसाद तनिष राज, काजल कुमारी, रिया कुमारी निशु कुमारी व अनेको ग्रामीण मौजूद थे। कार्यक्रम में बीरु मुखिया जी ने सबको शपथ दिलाया की नशा न करेंगे न करने देंगे नशा नाश की जड़ है।

सेक्टर-4 थाना परिसर में शांतिसमिति की हुई बैठक

बोकारो : सेक्टर–4 थाना परिसर में रविवार को पुलिस उपाधीक्षक नगर के नेतृत्व में शांतिसमिति की बैठक आयोजित की गई। बैठक में थाना क्षेत्र के सभी पूजा पंडालों के प्रतिनिधियों के साथ स्थानीय गणमान्य लोग भी बड़ी संख्या में मौजूद रहे। बैठक में आगामी पर्व–त्योहारों को शांतिपूर्ण एवं सौहार्दपूर्ण वातावरण में संपन्न कराने के लिए आपसी सहयोग और समन्वय पर विस्तार से चर्चा की गई। पुलिस प्रशासन ने विधि–व्यवस्था बनाए रखने और हर स्तर पर प्रशासन को सहयोग देने पर जोर दिया। विशेष रूप से विसर्जन जुलूस के दौरान सुरक्षा, यातायात व्यवस्था और निर्धारित मार्ग का पालन सुनिश्चित करने संबंधी दिशा–निर्देश पंडाल समितियों को दिए गए। अधिकारियों ने कहा कि विसर्जन जुलूस केवल तय किए गए मार्ग से ही निकाला जाएगा ताकि किसी प्रकार की अव्यवस्था या जाम की स्थिति न उत्पन्न हो।

नवरात्र का वैज्ञानिक और आध्यात्मिक तादात्म्य

ऐतिहासिक और पौराणिक संदर्भों में आदि शक्ति का इतिहास सनातन है, जहाँ उन्हें परम चेतना, ब्रह्मांड की मूल निमार्ता, द्दष्टा और संहारक शक्ति के स्वरुप में वर्णित किया गया है। इसलिए मार्कण्डेय पुराण के दुर्गा सप्तशती अंश में कहा गया है कि

या देवी सर्वभूतेषु शक्तिरुपेण संस्थिता,
नमस्तस्यै नमस्तस्यै, नमस्तस्यै नमो नमः।

ऋग्वेद के देवी सूक्त में माँ आदिशक्ति स्वयं कहती हैं,

अहं राष्ट्री संगमनी वसूनां,
अहं रूद्राय धनुरा तनोमि।

अर्थात मैं ही राष्ट्र को बांधने और ऐश्वर्य देने वाली शक्ति हूँ, और मैं ही रुद्र के धनुष पर प्रत्यंचा चढ़ाती हूँ। हमारे तत्वदर्शी ऋषि मनीषा का उपरोक्त प्रतिपादन वस्तुतः स्त्री शक्ति की अपरिमितता का प्रतीक है।

नारीशक्ति की सर्वोत्तम व्याख्या भारतीय पुराणैतिहासिक संदर्भों में प्राप्त होती है जो वैज्ञानिक चिंतन पर आधारित है। वर्ष 2018 के सर्वश्रेष्ठ शब्द के रूप में आक्सफोर्ड डिक्शनरी ने नारीशक्ति को चुनकर इस दिशा में और गंभीरता से सोचने के लिए प्रेरित किया है। भारत में नवरात्र आराधना के प्रसंग में ॐ ऐं ह्रीं क्लीं के अंतर्गत ऐं = वाग्बीज (ज्ञानशक्ति), क्लीं =कामराज (क्रिया शक्ति), ह्रीं = मायाबीज (पदार्थ) के माध्यम से सृष्टि निर्माण, स्थिति और ध्वंस की विज्ञान-सम्मत व्याख्या मिलती है। इनसे ही सात्विक, राजसिक और तामसिक प्रवृत्तियों की व्याख्या की मनोवैज्ञानिक एवं वैज्ञानिक द्दष्टि विकसित हुई है।

रात्रि शब्द सिद्धि का प्रतीक माना जाता है, इसलिए भारत में रात्रि का विशेष महत्व है। भारतीय पर्वों के मूल में आध्यात्मिक चेतना के साथ वैज्ञानिकता उसके मूल में निहित है। वैज्ञानिक तथ्य है कि दिन में अन्य तरंगों के कारण ध्वनि तरंगों में अवरोध उत्पन्न होता है इसलिए रात्रि काल में उपासना पर विशेष रूप से भारतीय मनीषियों ने बल दिया है।

नवरात्र दीपावली, महाशिवरात्रि और होली जैंसे अधिकांश पर्व रात्रि में ही मनाए जाते हैं, ताकि ध्वनि की तरंगों का ठीक प्रकार से विस्तार हो। एतदर्थ मंत्र, तंत्र और यंत्र के साथ विभिन्न वाद्य यंत्रों और शंख बजाकर वातावरण को न केवल रोगाणु मुक्त किया जाता है वरन् अपकारी शक्तियों के साथ आसुरी प्रवृत्तियों का भी शमन भलीभाँति होता है। नवरात्र के संबंध में यह सर्वविदित है कि कि एक वर्ष में चार संधि काल होते हैं और इसलिए क्रमशः चार नवरात्र चैत्र, आषाढ़ अश्विन, और माघ में मनाए जाने की विधान है।

भारत में 51 शक्तिपीठों का विशेष महत्व है और इनमें से कई शक्तिपीठ जनजातियों द्वारा पूजित संरक्षित किए गए हैं। चार संधि कालों में सत्व गुण तमोगुण और रजोगुण के मध्य उचित सामंजस्य स्थापित करना ही नवरात्र का मूल आधार है। तन मन को निर्मल और पूर्णतः स्वस्थ रखने के का अनुष्ठान ही नवरात्र है।

वस्तुतः नौ रातों के समूह को नवरात्र कहा जाता है, जो शरीर के अंदर निवास करने वाली जीवनी शक्ति दुर्गा के ही स्वरुप हैं। उपनिषदों में उमा या हेमवती का उल्लेख किया है। भारतीय अवधारणा में हिरण्यगर्भ जिसे पाश्चात्य विज्ञान बिग बैंग के रुप समझता है, तद्नुसार शक्ति या ऊर्जा के आलोक में जड़ - चेतन की व्याख्या करता है। शिव - शक्ति का अद्वैत है।

यजुर्वेद में स्पष्ट है कि 'यद् पिण्डे, तद् ब्रम्हाण्डे'। इसी के परिप्रेक्ष्य में भौतिकी में अल्बर्ट आइंस्टीन ने भी अपने द्रव्य - ऊर्जा समीकरण (एःूे2) के माध्यम से अद्वैत की पुष्टि की है। ऊर्जा से ही सब गतिमान हैं। आंध्र ऊर्जा और आंध्र पदार्थ के संबंध में भी यही अवधारणा है। विज्ञान में ऊर्जा का अध्ययन वास्तव में आदिशक्ति का का ही अन्वेषण है। आदिशक्ति त्रिगुणात्मक है। अपने तीन स्वरूपों क्रमशः ज्ञान शक्ति, इच्छा शक्ति और क्रिया शक्ति से सत्व, रज और तम गुणों को उद्धूत करती है।

सूडोकु नवताल- 7560

★☆☆☆☆ सरल

8	5			3		6	1	
6	7		9		4		2	
2					1			4
	3	9			7			
	6	2		8		4	7	
			6			9	3	
3			5					7
	4		1		6		8	3
	8	5		7			9	6

Jagrutidaur.com, Bangalore

- प्रत्येक पंक्ति में 1 से 9 तक के अंक भरे जाने आवश्यक हैं.
- प्रत्येक आड़ी और खड़ी पंक्ति में एवं 3×3 के वर्ग में किसी भी अंक की पुनरावृत्ति न हो इसका विशेष ध्यान रखें.
- पहले से मौजूद अंकों को आप हटा नहीं सकते .
- पहेली का केवल एक ही हल है.

सूडोकु नवताल -7559 का हल

6	3	7	2	1	5	4	8	9
9	8	4	3	7	6	5	2	1
2	5	1	9	4	8	7	3	6
3	6	8	5	9	7	1	4	2
7	2	9	4	8	1	6	5	3
4	1	5	6	3	2	8	9	7
5	7	6	8	2	9	3	1	4
8	4	2	1	6	3	9	7	5
1	9	3	7	5	4	2	6	8

आदर्श शासन-व्यवस्था और समाजवाद के प्रणेता थे अग्रसेन

ललित गर्ग

महाराजा अग्रसेन भारतीय संस्कृति और इतिहास के उन दिव्य शासकों में गिने जाते हैं जिनकी शासन-कीर्ति किसी एक युग तक सीमित नहीं रही। उनका लोकहितकारी चिन्तन कालजयी हो गया। उन्होंने न केवल जनता बल्कि सभ्यता और संस्कृति को भी समृद्ध और शक्तिशाली बनाया। उनकी विलक्षण एवं आदर्श शासक-प्रणाली और उसकी द्दष्टि में सत्ता का हित सर्वोपरि न होकर समाज एवं मानवता सर्वोच्च था। वे कर्मयोगी लोकनायक तो थे ही, संतुलित एवं आदर्श समाजवादी व्यवस्था के निमार्ता भी थे। उन्होंने अपने जीवन और दर्शन से मानवता को नई दिशा प्रदान की। वे केवल अग्रवाल समाज के ही शासक नहीं थे, बल्कि आदर्श समाज व्यवस्था के प्रणेता, गणतंत्र के संस्थापक, अहिंसा के पुजारी और शांति के दूत भी थे। आज जब हमारा समाज असमानताओं, हिंसा, स्वार्थ और राजनीतिक विघटन एवं विसंगतियों से जूझ रहा है, तब उनके विचारों और सिद्धांतों की प्रासंगिकता और भी बढ़ जाती है।

महाराजा अग्रसेन अग्रवाल जाति के पितामह थे। धार्मिक मान्यतानुसार इनका जन्म मयार्दा पुरुषोतम भगवान श्रीराम की चौंतीसवी पीढ़ी में सूर्यवंशी क्षत्रिय कुल के प्रतापनगर के महाराजा वल्लभ सेन के घर में द्वापर के अन्तिमकाल और कलियुग के प्रारम्भ में आज से लगभग 5150 वर्ष पूर्व हुआ था। अग्रसेन महाराज वल्लभ के ज्येष्ठ पुत्र थे। महाराजा अग्रसेन के जन्म के समय गर्ग ऋषि ने महाराज वल्लभ से कहा था, कि यह बालक बहुत तेजस्वी है और बड़ा राजा बनेगा। इसके राज्य में एक नई शासन व्यवस्था का उदय होगा और हजारों वर्ष बाद भी इनका नाम अमर रहेगा। सचमुच उनका युग रामराज्य की एक साकार संरचना था जिसमें उन्होंने अपने आदर्श जीवन कर्म से, सकल मानव समाज को महानता का जीवन-पथ दशार्या। वे एक प्रकाश स्तंभ थे, अपने समय के सूर्य थे जिनकी जन्म जयन्ती आश्विन शुक्ल पक्ष प्रतिपदा अर्थात नवरात्री के प्रथम दिन यानी इस वर्ष में 22 सितम्बर, 2025 को मनाई जाएगी।

महाराजा अग्रसेन का शासन न्याय, समानता, करुणा और सहअस्तित्व पर आधारित था। वे केवल सम्राट नहीं थे, बल्कि एक दार्शनिक चिंतक और युगद्दष्टा थे। उन्होंने ह्यराजा प्रजा का सेवक हैह्ल जैसी अवधारणा को व्यवहार में उतारा। उनका व्यक्तित्व हमें महावीर, बुद्ध और अशोक जैसे शांति दूतों की याद दिलाता है। उन्होंने हिंसा का त्याग कर अहिंसा, सहयोग और सामूहिकता को समाज की आत्मा माना। अपने क्षेत्र में सच्चे समाजवाद की स्थापना हेतु उन्होंने नियम बनाया कि उनके नगर में बाहर से आकर बसने वाले व्यक्ति की सहायता के लिए नगर का प्रत्येक निवासी उसे एक रुपया व एक ईंट देगा, जिससे आसानी से उसके लिए निवास स्थान व व्यापार का प्रबंध हो जाए। उन्होंने पुनः वैदिक सनातन आर्य संस्कृति की मूल मान्यताओं को लागू कर राज्य के पुनर्गठन में कृषि-व्यापार, उद्योग, गौपालन के विकास के साथ-साथ नैतिक मूल्यों की पुनः प्रतिष्ठा का बीड़ा उठाया। इससे न केवल आर्थिक सहयोग की व्यवस्था बनी, बल्कि समाज में भाईचारे और साझा जिम्मेदारी की भावना भी विकसित हुई। यह सोच आज की आधुनिक ह्यकोऑपरेटिव सोसायटीह्ल और ह्यकॉरपोरेट सोशल रिस्पॉन्सिबिलिटीह्ल की जड़ों में देखी जा सकती है।

अग्रसेनजी का जीवन संदेश था-हिंसा से नहीं, शांति और सहयोग से ही स्थायी सुख संभव है। उन्होंने युद्ध और संघर्ष से दूर रहकर समाज में शांति और समन्वय का वातावरण बनाया। इसीलिए उन्हें शांति का दूत कहा गया। उनकी समाज व्यवस्था में ऊँच-नीच और भेदभाव का कोई स्थान नहीं था। अर्थव्यवस्था में ईमानदारी और पारदर्शिता सर्वोपरि थी और नारी को सम्मान एवं अधिकार प्रदान किए गए थे। आज जब समाज भ्रष्टाचार, हिंसा, असमानता और स्वार्थ की खाई में उलझा है, तब अग्रसेनजी के सिद्धांत हमें नई राह दिखाते हैं। राजनीति में उनका गणतांत्रिक द्दष्टिकोण लोकतंत्र की शुचिता को पुनः स्थापित कर सकता है। वे केवल ऐतिहासिक चरित्र या इतिहास-पुरुष ही नहीं हैं, बल्कि वे आज भी समाज सुधार, शासन व्यवस्था और मानवीय मूल्यों के प्रेरणास्त्रोत हैं। महाराज अग्रसेन ने 108 वर्षों तक राज किया। एक निश्चित आयु प्राप्त करने के बाद कुलदेवी महालक्ष्मी से परामर्श पर वे आग्रेय गणराज्य का शासन अपने ज्येष्ठ पुत्र के हाथों में सौंपकर तपस्या करने चले गए। व्यक्ति, समाज, राष्ट्र तथा जगत की उन्नति मूल रूप से जिन चार स्तंभों पर निर्भर होती हैं, वे हैं- आर्थिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक व सामाजिक। अग्रसेनजी का जीवन-दर्शन चारों स्तंभों को द्दढ़ करके उन्नत विश्व के नवनिर्माण का आधार बना है। लेकिन इसे समय की विडम्बना ही कहा जायेगा कि अगणित विशेषताओं से संपन्न, परम पवित्र, परिपूर्ण, परिशुद्ध, मानव की लोक कल्याणकारी आभा से युक्त महामानव महाराज अग्रसेन की महिमा से अनभिज्ञ अतीत से वर्तमान तक के कालखण्ड ने उन्हें एक समाज विशेष का कुलपुरुष घोषित कर उनके स्वर्णिम इतिहास को हाशिए पर डाल दिया है।

अग्रसेनजी सूर्यवंश में जन्मे। महाभारत के युद्ध के समय वे पन्द्रह वर्ष के थे। युद्ध हेतु सभी मित्र राजाओं को दूतों द्वारा निमंत्रण भेजे गए थे। पांडव दूत ने वृहत्सेन की महाराज पांडु से मित्रता को स्मृत कराते हुए राजा वल्लभसेन से अपनी सेना सहित युद्ध में सम्मिलित होने का निमंत्रण दिया था। महाभारत के इस युद्ध में महाराज वल्लभसेन अपने पुत्र अग्रसेन तथा सेना के साथ पांडवों के पक्ष में लड़ते हुए युद्ध के 10वें दिन भीष्म पितामह के बाणों से बिंधकर वीरगति को प्राप्त हो गए थे। इसके पश्चात अग्रसेनजी ने ही शासन की बागडोर संभाली। उन्होंने बचपन से ही वेद, शास्त्र, अस्त्र-शस्त्र, राजनीति और अर्थ नीति आदि का ज्ञान प्राप्त कर लिया था। उनका विवाह नागों के राजा कुमुद की पुत्री माधवी से हुआ। महाराजा अग्रसेन ने ही अग्रोहा राज्य की स्थापना की थी। उन्होंने अपने जीवन में कई बार कुलदेवी लक्ष्मीजी से यह वरदान प्राप्त किया कि जब तक उनके कुल में लक्ष्मीजी की उपासना होती रहेगी, तब तक अग्रकुल धन व वैभव से सम्पन्न रहेगा। उनके 18 पुत्र हुए, जिनसे 18 गोत्र चले।

समाज व्यवस्था उनके लिए कर्तव्य थी, इसलिए कर्तव्य से कभी पलायन नहीं किया तो धर्म उनकी आत्मनिष्ठा बना, इसलिए उसे कभी नकारा नहीं। महाराजा अग्रसेनजी की इसी विचारधारा का ही प्रभाव है कि आज भी अग्रवाल समाज शाकाहारी, अहिंसक एवं धर्मपरायण के रूप में प्रतिष्ठित है। अग्रसेनजी ने राजनीति का सुरक्षा कवच धर्मनीति को माना। राजनेता के पास शस्त्र है, शक्ति है, सत्ता है, सेना है फिर भी नैतिक बल के अभाव में जीवन मूल्यों के योगक्षेम में वे असफल होते हैं। इसीलिये उन्होंने धर्म को जीवन की सर्वोपरि प्राथमिकता के रूप में प्रतिष्ठापित किया। इसी से नये युग का निर्माण, नये युग का विकास वे कर सके। उनके युग का हर दिन पुरातन के परिष्कार और नए के सृजन में लगा था। एक बार अग्रोहा में बड़ी भीषण आग लगी। उस पर किसी भी तरह काबू ना पाया जा सका। उस अग्निकांड से हजारों लोग बेघरबार हो गये और जीविका की तलाश में भारत के विभिन्न प्रदेशों में जा बसे। पर उन्होंने अपनी पहचान नहीं छोडी। वे सब आज भी अग्रवाल ही कहलवाना पसंद करते हैं और उसी 18 गोत्रों से अपनी पहचान बनाए हुए हैं। आज भी वे सब महाराज अग्रसेन द्वारा निर्देशित मार्ग का अनुसरण कर समाज की सेवा में लगे हुए हैं। एक सर्वे के अनुसार, देश की कुल इनकम टैक्स का 24 प्रतिशत से अधिक हिस्सा अग्रसेन के वंशजों का हैं। कुल सामाजिक एवं धार्मिक दान में 62 प्रतिशत हिस्सा अग्रवंशियों का है। देश की कुल जनसंख्या का मात्र एक प्रतिशत अग्रवंशज है, लेकिन देश के कुल विकास में उनका 25 प्रतिशत सहयोग रहता है। उस महामानव को राष्ट्र की सच्ची श्रद्धांजलि तभी होगी जब देश की बड़ी जन-कल्याणकारी योजनाएं उस महान शासक के नाम पर हो। उनकी जयंती हमें स्मरण कराती है कि यदि हमें एक सुखी, समृद्ध और शांतिपूर्ण समाज का निर्माण करना है तो उनके आदर्शों को अपनाना होगा।

राहुल गांधी का बयान लोकतंत्र में नेता प्रतिपक्ष की जिम्मेदारी से उन्हें मुक्त करता है

डॉ. मयंक चतुर्वेदी

भारतीय लोकतंत्र को लेकर हाल ही में नेता प्रतिपक्ष राहुल गांधी का यह कहना कि लोकतंत्र बचाना मेरा काम नहीं पूरे राजनीतिक विमर्श में हलचल पैदा कर गया है। यह बयान केवल विपक्ष और सत्ता पक्ष के बीच आरोप-प्रत्यारोप तक सीमित रहनेवाला नहीं है, यह आज आम नागरिकों के मन में भी गहरे सवाल छोड़ता है। लोकतंत्र केवल चुनाव लड़ने और सरकार बनाने की प्रक्रिया नहीं है, यह एक सतत जिम्मेदारी है, जिसमें सत्ता और विपक्ष दोनों बराबर भागीदार होते हैं। यदि विपक्ष का सबसे बड़ा चेहरा ही यह कह दे कि लोकतंत्र को बचाना उसका काम नहीं, तो यह न केवल उसकी भूमिका पर प्रश्नचिह्न लगाता है बल्कि पूरे लोकतांत्रिक ढांचे की गंभीरता पर भी संदेह पैदा करता है।

कहना होगा कि विपक्ष का काम केवल सरकार की आलोचना करना या विरोध प्रदर्शन करना भर नहीं है। इसके पीछे संवैधानिक जिम्मेदारी निहित है कि वह जनता की आवाज बने, लोकतांत्रिक संस्थाओं के प्रति सजग रहे और संसद में सरकार के फैसलों पर ठोस बहस करे।

राहुल गांधी ने हालिया कर्नाटक विधानसभा चुनावों के संदर्भ में जब यह आरोप लगाया कि चुनाव आयोग में भेदियों की भरमार है और लोकतंत्र खतरे में है, तब यह अपेक्षा की जाती थी कि वे इस मुद्दे को कानूनी और संवैधानिक रास्तों से उठाएँगे। किंतु न्यायालय या चुनाव आयोग का रुख न अपनाकर उन्होंने यह कहकर पल्ला झाड़ लिया कि लोकतंत्र बचाना उनका काम नहीं है और उनका काम केवल सरकार पर दबाव डालना है। क्या उनका यह द्दष्टिकोण सही है? उन्हें न सही कांग्रेस पार्टी के अन्य नेताओं को भी नहीं लगता कि राहुल की ये सोच राजनीतिक द्दष्टि से संकीर्ण होने के साथ ही संवैधानिक सजगता की कमी भी उजागर करती है?

भारतीय लोकतंत्र के आपातकाल के दौर को देखिए; इंदिरा गांधी की सत्ता के विरुद्ध जयप्रकाश नारायण, अटल बिहारी वाजपेयी और अन्य विपक्षी नेताओं ने लोकतंत्र की रक्षा के लिए जो संघर्ष किया, उसने लोकतांत्रिक व्यवस्था में जनता के विश्वास को और गहरा किया। अटल बिहारी वाजपेयी, सुषमा स्वराज जब विपक्ष में थे, तब वे अपनी तेजतर्रार आलोचना और गंभीर बहसों के लिए जाने जाते थे। वे सत्ता से असहमति रखते हुए भी लोकतंत्र की गरिमा को कभी कम नहीं करते थे। लेकिन आज राहुल गांधी क्या कर रहे हैं। वास्तव में यही अपेक्षा नेता प्रतिपक्ष से है कि वे लोकतंत्र को न केवल भाषणों में बल्कि अपने आचरण से भी मजबूत करें।

राहुल गांधी की राजनीतिक शैली में अक्सर यह देखने को मिला है कि वे संसद से अधिक सड़क पर सक्रिय रहते हैं। वे बेरोजगारी, महंगाई, किसानों और युवाओं के मुद्दों को बार-बार उठाते हैं, लेकिन इन मुद्दों पर वैकल्पिक द्दष्टिकोण या ठोस नीति पेश करने से चूक जाते हैं। जबकि नेता प्रतिपक्ष का पद केवल आलोचना नहीं बल्कि विकल्प प्रस्तुत करने की जिम्मेदारी भी मांगता है। इस पृष्ठभूमि में उनका यह कहना कि लोकतंत्र बचाना उनका काम नहीं, उनकी राजनीतिक गंभीरता को और कमजोर करता है।

क्या उन्हें ये भान नहीं होना चाहिए कि लोकतंत्र कोई स्वतः जीवित रहने वाली व्यवस्था नहीं है? यह निरंतर सजगता, संघर्ष और संस्थागत मजबूती से चलता है। न्यायपालिका, मीडिया और जनता के साथ-साथ विपक्ष इसका अभिन्न हिस्सा है।

जब विपक्ष का सबसे बड़ा नेता यह जिम्मेदारी अपने कंधों से उतार देता है और उसे युवाओं या जनता पर डाल देता है, तो लोकतंत्र के प्रहरी की जगह खाली हो जाती है। राहुल गांधी ने अपने बयान में कहा कि देश के युवा और जनरेशन-जेड लोकतंत्र बचाएँगे। निस्संदेह युवा किसी भी लोकतंत्र की रीढ़ होते हैं, लेकिन क्या केवल युवाओं पर यह जिम्मेदारी डालकर नेता प्रतिपक्ष स्वयं को मुक्त कर सकते हैं? नेता का काम युवाओं को नेतृत्व देना है, उन्हें दिशा दिखाना है, न कि अपनी जिम्मेदारी से पीछे हटकर उन्हें सत्ता से लड़ाने-भिड़ाने के लिए छोड़ देना!

उनके इस बयान के बाद यदि भारतीय जनता पार्टी और सत्ता पक्ष ये कहें कि कांग्रेस देश को अस्थिर करना चाहती है और भारत को नेपाल या बांग्लादेश जैसी स्थिति में ले जाना चाहती है तो वे क्या गलत कह रहे हैं? यह आरोप राजनीतिक बयानबाजी का हिस्सा भर नहीं हैं।

आज आम जनता के मन में भी यह सवाल उठने लगा है कि यदि विपक्ष का सबसे बड़ा चेहरा ही लोकतंत्र की रक्षा को अपना काम नहीं मानता, तो फिर लोकतांत्रिक संतुलन बनाए रखने की जिम्मेदारी किस पर है।

यह सच है कि लोकतंत्र में सत्ता का दायित्व है कि वह नीति बनाए और उसे लागू करे, किंतु इसके साथ विपक्ष का दायित्व भी यहां तक है, वह यह कि सरकार के कामकाज को परखे, गलतियों की ओर ध्यान दिलाए और जनता को सही जानकारी दे। यदि विपक्ष केवल आरोप-प्रत्यारोप की राजनीति तक सीमित हो जाए और रचनात्मक भूमिका न निभाए, तो लोकतंत्र का संतुलन टूटता है। आज राहुल गांधी का हालिया बयान इसी टूटते हुए संतुलन की चिंता को और गहरा कर रहा है।

राहुल गांधी को यह समझना चाहिए कि विपक्ष का नेता होने के नाते उन्हें न केवल सरकार की आलोचना करनी है, बलकि इससे कहीं अधिक देश के विकास से संबंधति ठोस समाधान भी प्रस्तुत करना हैं। क्योंकि लोकतंत्र की रक्षा केवल राजनीतिक नारे तक ही नहीं है, वह संवैधानिक और नैतिक दायित्व है, जिसे टाला नहीं जा सकता। इसलिए लोकतंत्र को बचाना सभी नागरिकों का काम है, लेकिन उसे सही दिशा देना और जनता को यह विश्वास दिलाना कि उसकी आवाज सुनी जा रही है, यह काम सबसे पहले विपक्ष के नेता का ही होता है। राहुल गांधी का हालिया बयान इस जिम्मेदारी से भागने वाला नजर आ रहा है। अब यह उन्हीं पर है कि वे अपने आचरण और द्दष्टिकोण से यह साबित करें कि वे न केवल एक आलोचक हैं बल्कि लोकतंत्र के संरक्षक भी हैं।

नवरात्रि : केवल उत्सव नहीं, आत्मा से जुड़ने का अवसर

गुरुदेव श्री श्री रवि शंकर

हम नौ महीने माँ के गर्भ में रहते हैं। गर्भ के भीतर केवल अंधकार होता है - रात ही रात। नौ महीने बाद जब हम जन्म लेते हैं, तो हमारे सामने एक नई सृष्टि दिखाई देती है। ठीक उसी प्रकार नवरात्रि के ये नौ दिन माँ के स्मरण और अपनी आत्मा से गहराई में जुड़ने के लिए हैं। नवरात्रि हमें तीनों प्रकार के तापों से मुक्त करती है - आधिभौतिक, आध्यात्मिक और आधिदैविक।

हर रात समूची सृष्टि को अपनी गोद में लेकर विश्राम देती है, विविधता, विभिन्नता को दूर करके एकता में लाकर सब को विश्राम देती है। हमारे ऋषियों ने जो भी शब्द गढ़े, उनमें उसकी क्रिया निहित है। रात्रि शब्द सुनते ही हमारे भीतर शांति और विश्राम का अनुभव जाग उठता है।

नव रात्रि में अपने आप में, अपनी आत्मा में, अपनी चेतना में डुबकी लगाओ मगन हो जाओ, भजन करो, कीर्तन करो कम से कम मन को इन नौ दिन किसी और चीजों में मत लगाओ। मित आहार या तो फल वगैरा लेकर उपवास करो। इस तरह से चेतना को भक्ति की लहर में लगाओ। उपवास का असली अर्थ केवल अन्न से दूर रहना नहीं है, बल्कि मन को व्यर्थ विषयों से हटाकर दिव्य ऊर्जा से जोड़ना है। तब क्या होता है सारे असुर दूर हो जाते हैं - महिषासुर, रक्तबीजासुर, मधु- कैटभ।

असुरों का प्रतीकात्मक अर्थ

देवी के द्वारा जिन असुरों का संहार हुआ, वे वास्तव में हमारे भीतर की प्रवृत्तियाँ हैं।

मधु और कैटभ झ्र मधु का अर्थ है राग और कैटभ का अर्थ है द्वेष। देवी सबसे पहले इन्हीं का संहार करती हैं। पुराणों में कहा गया है कि मधु और कैटभ विष्णु जी के कान के मैल से उत्पन्न हुए। सुनने से ही राग और द्वेष जन्म लेते हैं। जो सृष्टि का संचालन करता है,

उसे चारों ओर से अनेक बातें सुननी पड़ती हैं। लेकिन जो संहार करता है, वह किसी की नहीं सुनता इसलिए शिवजी को न राग है, न द्वेष; ब्रह्मा जी को भी न राग है, न द्वेष।

विष्णु जी अपने ही कान के मैल (अर्थात राग-द्वेष) से उत्पन्न इन असुरों से एक हजार वर्षों तक लड़े, पर उन्हें समाप्त नहीं कर पाए। अपने से ही उपजे दोष को स्वयं मिटाना कठिन होता है। तब उन्होंने देवी -चेतना शक्ति को पुकारा। जब चेतना बढ़ जाती है, तो राग-द्वेष दोनों मिट जाते हैं।

देवी ने विष्णु की प्रार्थना स्वीकार कर जल में प्रवेश किया और वहीं मधु- कैटभ का संहार किया। जल प्रतीक है प्रेम का। जब चेतना प्रेममय हो जाती है, तब न राग बचता है न द्वेष,केवल अनुराग ही शेष रह जाता है।

चंड और मुंड झ्र ह्यचंडह्ल का अर्थ केवल सिर (बुद्धि) और ह्यमुंडह्ल का अर्थ केवल धड़ (भावना)। बुद्धि बिना हृदय के व्यक्ति को कठोर बना देती है, और भावना बिना विवेक के जीवन को अव्यवस्थित कर देती है। जब चेतना जगती है, तो इन दोनों का संतुलन स्थापित करती है।

महिषासुर झ्र भैंस के समान जड़ता का प्रतीक। जब जीवन बिना किसी समझ के, केवल बोझिल ढंग से चलता है, वह महिषासुर है। इस जड़ता को समाप्त करना तभी संभव है जब चैतन्य शक्ति जाग जाए सभी देवी-देवताओं ने अपने अस्त्र-शस्त्र मान माँ को दिए अपने सभी कला कौशल प्रदान किये तो देवी माँ ने महिषासुर का वध किया। जड़ता को नष्ट करने के लिए चैतन्य शक्ति की आवश्यकता होती है।

रक्तबीजासुर झ्र यह हमारे डीएनए और संस्कारों का प्रतीक है - रक्त +बीज +असुर। माने आपके डीएनए में जो गुण पड़ा हुआ है उसको भी परिवर्तन करना हो, तो देवी ही कर सकती, चेतना ही कर सकती है। कथा में, जहां एक बूँद खून की गिरी पूरी तरह से वह राक्षस फिर खड़ा हो जाता था। माने अपने जीन्स में जो गुण या स्वभाव घुस गया, वह रक्तबीजासुर है। एक बार जो दोष भीतर जम जाता है, वह बार-बार प्रकट होता है, जैसे रक्तबीज की हर बूंद से नया राक्षस उत्पन्न होता था। किंतु चेतना के जागरण से यानि देवी ने इन सबका संहार कर दिया।कई लोगों की जेनेटिक परेशानियां, जो कई पीढ़ियों से चली आ रही हैं, दैवी शक्ति जाग्रत होने पर ठीक हो जाती हैं। जीन्स में अपने परिवर्तन आ जाता है।

नवरात्रि का सच्चा संदेश

नवरात्रि केवल उत्सव नहीं, बल्कि आत्मचिंतन और साधना का अवसर है। इन दिनों में यदि हम अपनी चेतना को भक्ति और ध्यान में लगाएँ, तो भीतर के असुर–राग-द्वेष, जड़ता और नकारात्मक संस्कार–सब मिट जाते हैं। जब चेतना प्रेम और भक्ति में रच-बस जाती है, तब केवल अनुराग ही शेष रह जाता है। यही नवरात्रि का वास्तविक संदेश है।

दैनिक पंचांग

22 सितम्बर 2025 को सूर्योदय के समय की ग्रह स्थिति

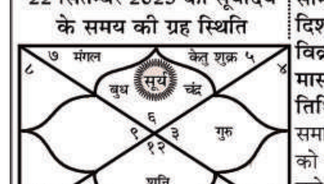

ग्रह स्थिति		लग्नारंभ समय	
सूर्य	कन्या में	कन्या	05.26 बजे से
चंद्र	कन्या में	तुला	07.41 बजे से
मंगल	तुला में	वृश्चिक	09.56 ब.से
बुध	कन्या में	धनु	12.12 बजे से
गुरु	मिथुन में	मकर	14.17 बजे से
शुक्र	सिंह में	कुंभ	16.03 बजे से
शनि	मीन में	मीन	17.36 बजे से
राहु	कुंभ में	मेष	19.07 बजे से
केतु	सिंह में	वृष	20.47 बजे से
राहुकाल	7.30 से 9.00 बजे तक	मिथुन	22.45 बजे से
		कर्क	00.58 बजे से
		सिंह	03.15 बजे से

सोमवार 2025 वर्ष का 265 वा दिन **दिशाशूल** पूर्व **ऋतु** शरद। **विक्रम संवत्** 2082 **शक संवत्** 1947 **मास** आश्विन **पक्ष** शुक्ल **तिथि** प्रतिपदा 02.57 बजे रात्र को समाप्त। **नक्षत्र** उत्तराफाल्गुनी 11.24 बजे को समाप्त। **योग** शुक्ल(शुक्र) 19.59 बजे को समाप्त। **करण** किस्तुघ्न 14.07 बजे तदनन्तर बव 02.57 बजे रात्र को समाप्त। **चन्द्रायु** 0.2 घण्टे **रवि क्रान्ति** उत्तर 00° 18' **सूर्य** उत्तरायन **कलि अहर्गण** 1872475 **जूलियन दिन** 2460940.5 **कलियुग संवत्** 5126 **कल्पारंभ संवत्** 1972949123 **सृष्टि ग्रहारंभ संवत्** 1955885123 **वीरनिर्वाण संवत्** 2551 **हिजरी सन्** 1446 **महीना** रवि उलावल **तारीख** 29 **विशेष** नवरात्रि आरंभ, घटस्थापना, शारदीय विषुव, महाराजा अग्रसेन जयंती।

दिन का चौघड़िया			रात का चौघड़िया		
अमृत	05.53 से	07.22 बजे तक	चर	05.43 से	07.14 बजे तक
काल	07.22 से	08.50 बजे तक	रोग	07.14 से	08.45 बजे तक
शुभ	08.50 से	10.19 बजे तक	काल	08.45 से	10.17 बजे तक
रोग	10.19 से	11.48 बजे तक	लाभ	10.17 से	11.48 बजे तक
उद्वेग	11.48 से	01.17 बजे तक	उद्वेग	11.48 से	01.19 बजे तक
चर	01.17 से	02.45 बजे तक	शुभ	01.19 से	02.51 बजे तक
लाभ	02.45 से	04.14 बजे तक	अमृत	02.51 से	04.2 बजे तक
अमृत	04.14 से	05.43 बजे तक	चर	04.22 से	05.53 बजे तक

चौघड़िया शुभाशुभ- **शुभत्व श्रेष्ठ** शुभ, अमृत व लाभ, **मध्यम** चर, **अशुभ** उद्वेग, रोग व काल। सभी समय भारतीय मानक समय की मध्य रेखा बिन्दु के आधार पर है अत: आप अपने स्थानीय समयानुसार ही देखें। Jagrutidaur.com, Bangalore

एक नजर

सिविल सर्जन ने सदर अस्पताल का किया औचक निरीक्षण

साहिबगंज : सिविल सर्जन डॉ रामदेव पासवान ने रविवार को सदर अस्पताल का औचक निरीक्षण किया। पूरे अस्पताल में घूम घूम कर वहां की व्यवस्था का जायजा लिया। उन्होंने सदर अस्पताल परिसर में पेइंग वार्ड के सभी रुम का निरीक्षण किया। वहीं सभी वार्डों में इलाजरत रोगियों से मिलकर उनकी समस्या जानी। मिल रही सेवाओं की भी जानकारी ली। इस दौरान वेयर हाउज सभागार में सफाई कर्मियों के साथ समीक्षा बैठक की गई। मौके पर उपाधीक्षक डॉक्टर देवेश कुमार, नोडल पदाधिकारी डॉक्टर मुकेश कुमार, मैनेजर अमन कुमार पांडे व अन्य मौजूद थे।

वृक्षारोपण अभियान के साथ "स्वच्छता ही सेवा 2025" मनाया

साहिबगंज : "स्वच्छोत्सव" थीम के साथ चल रहे स्वच्छता ही सेवा – 2025 अभियान के हिस्से के रूप में, पूर्वी रेलवे के मालदा डिवीजन ने राष्ट्रीय पहल "एक पेड़ माँ के नाम" के तहत बड़े पैमाने पर वृक्षारोपण कार्यक्रम का आयोजन किया। रेलवे स्पोर्ट्स कॉम्प्लेक्स में पर्यावरण एवं हाउसकीपिंग प्रबंधन विभाग द्वारा कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस अभियान का नेतृत्व मालदा के मंडल रेल प्रबंधक मनीष कुमार गुप्ता ने शाखा अधिकारियों, ईआरडब्ल्यूडब्ल्यूओ के सदस्यों, रेलवे कर्मचारियों और उनके परिवारों के साथ किया। इस अवसर पर मालदा के मंडल रेल प्रबंधक ने पौधे रोपे। इसी प्रकार का वृक्षारोपण कार्यक्रम मंडल के कई महत्वपूर्ण स्थानों पर भी आयोजित किया गया, जिनमें साहिबगंज में झरना कॉलोनी पार्क शामिल हैं। इन कार्यक्रमों में रेलवे अधिकारियों,कर्मचारियों, परिवारों और स्थानीय संगठनों की उत्साहपूर्ण भागीदारी देखी गई। इस अवसर पर बोलते हुए, डीआरएम/मालदा ने कहा की र'एक पेड़ माँ के नाम' के अंतर्गत यह वृक्षारोपण स्वच्छता ही सेवा–2025 के तहत पर्यावरण संरक्षण में हमारा योगदान है। अधिक पेड़ लगाने का अर्थ है आने वाली पीढ़ियों के लिए खुशी, स्वास्थ्य और आशा का रोपण करना। इस पहल ने भविष्य के लिए स्वच्छ और हरित वातावरण के निर्माण के लिए मालदा डिवीजन की मजबूत प्रतिबद्धता को उजागर किया।

कांग्रेस पार्टी ने नवगठित वार्ड अध्यक्षों एवं नगर कमेटी के साथ बैठक की

साहिबगंज : शहर के बंगाली टोला स्थित जिला कांग्रेस कार्यालय साहेबगंज में नवगठित वार्ड अध्यक्षों एवं नगर कमिटी की पदाधिकारियों की बैठक नगर अध्यक्ष सतीश कुमार पासवान की अध्यक्षता में हुई। बैठक में मुख्य अतिथि के रूप में जिला कांग्रेस कमिटी के अध्यक्ष बरकतुल्लाह खान, नगर पर्यवेक्षक मो कलीमुद्दीन,जिला उपाध्यक्ष बासुकिनाथ यादव उपस्थित हुए। बैठक में जिला अध्यक्ष बरकतुल्लाह खान ने वार्ड अध्यक्षों को सम्बोधित करते हुये विस्तार से बताया की संगठन सृजन 2025 अभियान के तहत सभी वार्ड अध्यक्षों को अपनी 12 सदस्यों की कमिटी एक सप्ताह में बनानी होगी और साथ उस कमिटी में ही अपने वार्ड के अंतर्गत पड़ने वाले बूथ का एक एक बीएलए भी बनाना है।

डीसी ने बाढ़ प्रभावित परिवारों के बीच खाद्य सामग्री किया वितरण

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

साहिबगंज : जिला दंडाधिकारी-सह-डीसी हेमंत सती ने साहेबगंज जिले के गोपालपुर घीसू टोला में बाढ़ प्रभावित परिवारों के बीच खाद्य सामग्री का वितरण किया। इस दौरान डीसी ने ग्रामीणों की समस्याओं और आवश्यकताओं को सुना तथा उनके समाधान हेतु आवश्यक निर्देश दिए। ग्रामीणों ने डीसी को अवगत कराया कि गंगा नदी के कटाव और बाढ़ से लगभग 150 से अधिक घर जलमग्न हो गए हैं। इस आपदा में कई सरकारी परिसंपत्तियाँ जैसे सरकारी चबूतरा, पानी टंकी और विद्यालय भी डूब गए हैं। परिस्थिति ऐसी है कि लोग गांव छोड़कर अन्यत्र शरण लेने के लिए विवश हैं। प्रभावित परिवारों ने अपनी कठिनाइयों को साझा करते हुए बताया कि जहां वे अस्थायी रूप से रह रहे हैं, वहाँ बिजली, तिरपाल, पशु चारा, और अन्य मूलभूत सुविधाओं की भारी कमी है। डीसी हेमंत सती ने इन समस्याओं की गंभीरता को समझते हुए संबंधित पदाधिकारियों को तुरंत कार्रवाई करने का निर्देश दिया। उन्होंने कहा कि बाढ़ पीड़ितों की प्रत्येक आवश्यकता जैसे तिरपाल, लाइट, सोलर लाइट, पशु चारा, और नियमित खाद्यान्न वितरण को शीघ्र सुनिश्चित किया जाए। डीसी ने यह भी स्पष्ट किया कि जिला प्रशासन का प्राथमिक उद्देश्य प्रभावित परिवारों की सुरक्षा और जीवन-यापन की सुविधा सुनिश्चित करना है, जिससे कोई भी हताहत न हो और किसी प्रकार की असुविधा का सामना न करना पड़े। मौके पर उपस्थित अपर समाहर्ता गौतम भगत और अनुमंडल पदाधिकारी अमर जॉन आईन्द ने भी प्रशासनिक दृष्टिकोण से हालात का जायजा लिया और आवश्यक सहयोग का आश्वासन दिया। प्रशासन द्वारा राहत कार्य के इस त्वरित कदम से बाढ़ प्रभावित ग्रामीणों में उम्मीद जगी है कि उनकी समस्याओं का जल्द ही समाधान होगा। जिला प्रशासन लगातार प्रभावित क्षेत्रों की निगरानी कर रहा है और आपदा प्रबंधन को प्राथमिकता के साथ क्रियान्वित कर रहा है।

इतिहास रचती भीड़ और शिव गुरु के प्रति अगाध आस्था का अद्वितीय संगम

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

चतरा : जिला स्थित इटखोरी के पावन भद्रकाली मंदिर परिसर के पीछे मैदान में रविवार को विराट शिव गुरु महोत्सव का भव्य आयोजन अत्यंत श्रद्धा, भक्ति और उत्साह के साथ सम्पन्न हुआ। यह आयोजन केवल एक धार्मिक सभा नहीं, बल्कि आस्था, समर्पण और गुरु भक्ति का ऐतिहासिक संगम बन गया। झारखंड, बिहार, छत्तीसगढ़, दिल्ली, पश्चिम बंगाल, पंजाब और हरियाणा के विभिन्न जिलों से हजारों की संख्या में शिव शिष्य उमड़े, जिनकी उपस्थिति ने इस आयोजन को एक विराट जनसमुदाय का रूप दे दिया। श्रद्धालुओं की आंखों में शिव गुरु के प्रति अटूट प्रेम, चेहरे पर आत्मिक शांति और मन में आध्यात्मिक चेतना की लहरें स्पष्ट झलक रही थीं। कार्यक्रम की शुरूआत शिव चर्चा और भजनों के साथ हुई, जहां आध्यात्मिक वातावरण की निर्मल ऊर्जा पूरे क्षेत्र में व्याप्त हो गई। शिव शिष्य भाई अखिलेश ने अपने ओजस्वी वक्तव्य में कहा, यदि जीवन को सच्चे अर्थों में सफल बनाना है, तो शिव को ही गुरु बनाना होगा। उनके शब्दों ने उपस्थित जनमानस के हृदय को झकझोर दिया और गुरु भक्ति की भावना को और भी प्रगाढ़ कर दिया। वहीं औरंगाबाद से पधारे भाई शिवपूजन सिंह ने साहब श्री हरिंद्रानंद और दीदी नीलम आनंद की जीवन यात्रा, त्याग और तपस्या को विस्तार से प्रस्तुत करते हुए उपस्थित शिव शिष्यों को उनके बताए मार्ग पर चलने की प्रेरणा दी। इस भव्य आयोजन को सफल बनाने में चतरा, औरंगाबाद, गया और अरवल के शिव शिष्यों की अग्रणी भूमिका रही। आयोजन स्थल पर गुरु भाई संतोष ने मंच संचालन की जिम्मेदारी निभाते हुए पूरे कार्यक्रम को अनुशासित और भावपूर्ण रूप से आगे बढ़ाया।

बरहेट भोगनाडीह में सांसद खेल महोत्सव फुटबॉल मैच का हुआ उद्घाटन

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

बरहेट : प्रखंड में भाजपा की ओर से भोगनाडीह मे सांसद खेल महोत्सव फुटबॉल मैच का आयोजन किया गया। इस अवसर पर बतौर मुख्य अतिथि भाजपा प्रदेश अध्यक्ष व पूर्व मुख्यमंत्री बाबूलाल मरांडी, भाजपा राज्य सभा सांसद धीरज साहू, प्रदेश उपाध्यक्ष बालमुकुंद सहाय, पूर्व विधायक लोबिन हेंम्ब्रम, राजमहल पूर्व विधायक अनंत कुमार ओझा, वंशज परिवार के मंडल मुर्मू सहित अन्य अतिथियों की उपस्थिति में फुटबॉल खेल प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। इस अवसर पर कार्यक्रम को संबोधित करते हुए प्रदेश अध्यक्ष बाबूलाल मरांडी ने कहा कि आज वीर शहीद सिद्धो कान्हू के धरती भोगनाडीह मे फुटबॉल मैच का शुभारंभ हो रहा है। उन्होंने कहा कि खेल की सुविधाओं भोगनाडीह में मिले। स्टेडियम का निर्माण हो। जिससे इस क्षेत्र के युवा खिलाड़ी अलग पहचान बन सके। इसके साथ ही राज्यसभा सांसद धीरज साहू ने कहा कि प्रत्येक लोकसभा क्षेत्र में फुटबॉल खेल का आयोजन किया जा रहा है। जहां सांसद नही है वैसे जगह पर राज्य सभा सांसद को जिम्मेवारी दी गई है। जिसमें इस तरह का आयोजन में प्रधानमंत्री मोदी जी का सपना है कि गांव-गांव में रहने वाले संसाधन के अभाव में वैसे खिलाड़ियों की अपनी पहचान हो। इस अवसर ओबीसी मोर्चा केंद्रीय मंत्री कृष्णा महतो, प्रदेश मंत्री दुर्गा मरांडी, गणेश तिवारी, होपना टूडू, एसटी मोर्चा जिलाध्यक्ष चौकीदार हांसदा, होपना टुडू, वंशज परिवार के मंडल मुर्मू, गमालियल हेम्ब्रम, शनि मरांडी सहित अन्य लोग उपस्थित थे।

करणपुरा पंचायत के कालाझोर जाहेर स्थान में बाउंड्रीवॉल में संवेदक के द्वारा की जा रही भारी अनियमितता

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

साहिबगंज : झारखंड सरकार के कल्याण विभाग योजना अंतर्गत तालझारी प्रखंड के कालाझोर जाहेर स्थान में कार्य चल रहा है। ग्रामीणों ने आरोप लगाते हुए कहा की झारखंड सरकार द्वारा कई जनकल्याणकारी योजनाएं चला रही है। लेकिन ठेकेदार बिचोलिया उस योजनाओं को धरातल पर सही तरीका से नहीं उतारते हैं, यहां घटिया किस्म का कार्य कर रहे हैं। जिला प्रशासन का हमेशा खोखला ही बात साबित होता है। जाहेर स्थान में जो घेराबंदी का कार्य किया जा रहा है। जिसका लागत 24 लाख रुपया बताया जा रहा है। इस निर्माण कार्य का शिलान्यास पूर्व बोरियो विधायक लोबीन हेम्ब्रम के द्वारा किया गया था। वर्तमान समय में जिस तरह का कार्य किया जा रहा है। उससे वहां के स्थानीय ग्रामीण नाखुश नजर आ रहे हैं। ग्रामीणों का कहना है की गांव में जाहेर स्थान का घेरा बंदी किया जा रहा है।उसमें एजेंसी के द्वारा घटिया किस्म का मटेरियल का उपयोग किया जा रहा है और उसमें बालू की जगह डस्ट का उपयोग कर उससे बाउंड्री किया जा रहा है। कार्य मे जितना एमएम का छड़ लगना चाहिए उतना एएम का नहीं लगाने का आरोप है। जिसमें घटिया ईट का भी इस्तेमाल किया जा रहा है। हल्की-फुल्की बारिश होने से ही ईट गलने लगता है जब से यहां पर कार्य शुरू हुआ है हम ग्रामीण लोगों के द्वारा कई बार मौखिक सूचना भी दिए लेकिन जेई साहब एक दिन भी निरीक्षण के लिए यहां नहीं पहुंचे। टेंडर एजेंसी लगातार कार्यों को तेजी से खत्म करने में लगे हुए। ग्रामीणों ने जिले के उपायुक्त हेमंत सती से कार्य का निरीक्षण कर जांच कर कार्रवाई करने की मांग की है। जिस निर्माण कार्य को लेकर लगातार काम में लापरवाही बढ़ता रहा है।जैसे तैसे निर्माण कार्य कर रहा है। यदि विभागीय अधिकारी अभिलंब कार्रवाई नहीं करते हैं।तो यह बात भी सोचने वाली है कि ग्रामीणों की मांग कहां तक पूरी होती है यह ग्रामीणों की मांग बनकर ही रह जाएगी। ऐसे में समझने वाली बात यह है की आखिर ग्रामीण क्षेत्र में जिस प्रकार से झारखंड सरकार के मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन और विधायक धनंजय सोरेन के पहल से ग्रामीण क्षेत्र के इलाका मे सरकार की जन कल्याणकारी योजना पहुंच नहीं पाती थी। ऐसे में देखने वाली बात होती है।जबकि इस संदर्भ में जेई मिथिलेश पांडे से मोबाइल से बातचीत करने के दौरान उन्होंने कहा कि आपसे थोड़ी देर के बाद बात करते हैं। अब देखना है की जेई को कब समय मिलता है।

उकरीद बस्ती में निःशुल्क चिकित्सा शिविर का हुआ आयोजन

बोकारो : त्रिया फाउंडेशन एवं आशादीप हॉस्पिटल के संयुक्त प्रयास से रविवार को उकरीद बस्ती स्थित पंचायत भवन में एक दिवसीय निःशुल्क चिकित्सा शिविर आयोजित किया गया। शिविर का उद्घाटन आशादीप हॉस्पिटल के डायरेक्टर कुमार प्रभात रंजन, त्रिया फाउंडेशन की निदेशिका कुसुम भारती एवं रीना कुमारी की उपस्थिति में हुआ। शिविर में बड़ी संख्या में लोगों ने स्वास्थ्य जाँच कराई। डॉक्टरों की टीम द्वारा शुगर, ब्लड प्रेशर एवं पी.एफ.टी. की निःशुल्क जाँच की गई तथा जरूरतमंद मरीजों के बीच दवाइयों का वितरण भी किया गया। कार्यक्रम में जे. पी. राय, दिन बंधु प्रकाश, सी. बी. सिंह, प्रदीप कुमार, निर्मल कुमार, तीया यादव, दिलीप कुमार, दीपशिखा कुमारी, मनोज कुमार सिन्हा, शशि भूषण तिवारी, आकाश कुमार, तबस्सुम परवीन और रैश कौशर सहित अन्य सामाजिक कार्यकर्ता एवं ग्रामीण उपस्थित रहे।

हत्या के दो आरोपी को तीनपहाड़ पुलिस ने गिरफ्तार कर भेजा जेल

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

साहिबगंज : तीनपहाड़ थाना क्षेत्र अंतर्गत हत्या के दो आरोपी को पुलिस ने गिरफ्तार किया है, इसकी जानकारी राजमहल एसडीपीओ विमलेश कुमार त्रिपाठी ने अपने कार्यालय कक्ष राजमहल में प्रेस कॉन्फ्रेंस कर दी। राजमहल एसडीपीओ ने बताया कि दिनांक 20 सितंबर 2025 को सूचना प्राप्त हुआ कि तीनपहाड़ थाना क्षेत्र अंतर्गत तेलोटोक गांव में एक व्यक्ति की पिट-पिट कर निर्मम हत्या कर दी गई है, इस घटना की सूचना वरीय पदाधिकारी को दिया गया। सूचना मिलते ही एसपी अमित कुमार सिंह साहिबगंज के द्वारा सूचना का सत्यापन एवं आवश्यक कार्रवाई हेतु अनुमंडल पुलिस पदाधिकारी राजमहल के नेतृत्व में एक छापामारी दल का गठन किया गया। सत्यापन उपरांत पाया गया कि ग्राम टेलोटोक निवासी के गुहिया पहाड़िया उम्र 60 वर्ष पिता स्वर्ग पहाड़िया को पहले से उनके गांव के प्रधान से आपसी रंजिश थी, गांव के प्रधान की मृत्यु करीब 10 दिन पहले हुई थी और मृतक इसका खुशी मना रहा था। मृतक के द्वारा गांव में बोला जा रहा था कि ठीक हुआ प्रधान मर गया। इसी बात को लेकर प्रधान के परिवार के सदस्यों के द्वारा गुहिया पहाड़िया को लाठी डंडा से पिट-पिट कर गंभीर रूप से घायल कर दिया गया, जिससे उसकी मृत्यु हो गई। पुलिस ने मृतक गुहिया पहाड़िया के शव को पोस्टमार्टम हेतु अनुमंडल अस्पताल राजमहल भेज दिया गया। इस संबंध में मृतक की पत्नी के आवेदन के आधार पर तीनपहाड़ थाना कांड संख्या 132/2025, दिनांक 20 सितंबर 2025, धारा 103(2)/3(5) बी.एन.एस. दर्ज कर अनुसंधान किया गया। छापामारी दल के द्वारा कांड के दो प्राथमिकी अभियुक्त पौलुस मालतो उम्र 25 वर्ष पिता स्वर्ग सूरजा पहाड़िया, सुशील मालतो उर्फ सूरजा पहाड़िया उम्र 19 वर्ष, पिता रामचरण पहाड़िया उर्फ राम पहाड़िया, को पुलिस ने विधिवत गिरफ्तार किया। जहां तीनपहाड़ थाना पुलिस ने कागजी प्रक्रिया पूरी करने के उपरांत दोनों अभियुक्त को न्यायिक हिरासत में जेल भेज दिया है। मौके पर छापामारी दल में पुलिस निरक्षक राजीव रंजन राजमहल प्रभाग, पुअनि मृत्युंजय कुमार पांडे थाना प्रभारी तीनपहाड़, पुअनि महेंद्र कुमार, पुअनि शाहिद अहमद खान, हवलदार संजय कुमार और अन्य सशस्त्र बल शामिल थे।

संक्षिप्त खबरें

लाखों रुपये के 43 एंड्राइड मोबाइल फोन पुलिस ने कि जब्त, स्कूटी छोड़ युवक हुए फरार

साहिबगंज : तालझारी थाना क्षेत्र अंतर्गत पुलिस ने चोरी के लाखों रुपए के एंड्राइड मोबाइल फोन जब्त किया है, इसकी जानकारी राजमहल एसडीपीओ विमलेश कुमार त्रिपाठी ने अपने कार्यालय कक्ष में प्रेस कॉन्फ्रेंस कर दी। एसडीपीओ ने बताया कि 21 सितंबर 2025 को एसपी अमित कुमार सिंह साहिबगंज को गुप्त सूचना मिली कि तालझारी थाना क्षेत्र अंतर्गत डाक बंगला महाराजपुर में कुछ लड़कों का एक गिरोह एक स्कूटी में चोरी का मोबाइल रखकर, टेंपो स्टैंड के आस-पास रहकर स्टेशन से आने-जाने वाले यात्रियों को बहला फुसलाकर चोरी का मोबाइल बेचने का काम करते हैं। उक्त सूचना पर एसपी साहिबगंज के द्वारा एक छापामारी दल का गठन किया गया। उक्त छापामारी दल द्वारा त्वरित कार्रवाई करते हुए सूचना का सत्यापन एवं छापामारी कर एक होंडा कंपनी का लाल रंग का एक्टिभा स्कूटी संख्या (जे.एच18 के2128) बरामद किया गया। पुलिस दलबल को देखकर स्कूटी सवार स्कूटी छोड़कर भाग गए। जांच के क्रम में उक्त स्कूटी के डिक्की से विभिन्न कंपनियों का कुल 43 एंड्राइड मोबाइल फोन बरामद किया गया, जिसकी कीमत लाखों रुपए में है। इस संबंध में तालझारी थाना कांड संख्या 165/25, दिनांक 21 सितंबर 2025, धारा 317(4)/317 (5)/3(5) भा. न्या. सं. के तहत प्राथमिकी दर्ज कर पुलिस आगे की अनुसंधान कर रही है। मौके पर छापामारी दल में, राजीव रंजन पुलिस निरीक्षक राजमहल पर प्रभाग, पुअनि नितेश कुमार पांडे थाना प्रभारी तालझारी, सअनि चंदू कुमार, अन्य सशस्त्र बल शामिल थे।

शहर के ग्रीन होटल मोड से पटेल चौक तक सड़क के दोनों छोर से जिला प्रशासन ने हटाया अतिक्रमण

साहिबगंज : शहर में डीसी के निदेर्शानुसार एसडीओ सदर अमर जॉन आइंद के नेतृत्व में नगर परिषद ने शहर के ग्रीन होटल चौक से स्टेशन व स्टेशन चौक से पटेल चौक तक सड़क के दोनों ओर दुकानदारों की ओर से किए गए अतिक्रमण को हटाया गया। जेसीबी की मदद से कुछ दुकानों को हटाया गया, वही बाकी दुकानदारों ने स्वतः दुकान हटाया। वही सदर एसडीओ ने कहा कि जाम की समस्या बनी रहती है, जाम न लगे इसलिए मुख्य सड़क को अतिक्रमण मुक्त किया गया। वही दुबारा दुकान लगाने पर करवाई की जाएगी। वही दुकानदार सुजीत कुमार, सुमित, चंद्रकांत कुमार, सुभाष, मो फुरकान, करीम, अब्दुल्ला, चन्दन, कुंदन सहित दर्जनों दुकानदारों ने कहा कि पूजा त्योहार में ही अतिक्रमण नजर आता है, उसके बाद नगर परिषद फिर से दुकान लगवाएगी। पूजा त्यौहार के बाद दुकान हटवाता। मौके पर एसडीपीओ किशोर तिर्की, नगर परिषद प्रशासक, नगर थाना प्रभारी अमित गुप्ता, सिटी मैनेजर, शिव हरि सहित अन्य मौजूद थे।

गंगा नदी में मगरमच्छ दिखा, वन विभाग ने जारी किए सुरक्षा निर्देश

साहिबगंज : गदाई दियारा क्षेत्र में गंगा नदी में एक मगरमच्छ के देखे जाने की खबर सामने आई है। वन प्रमंडल साहिबगंज ने आमजन से अपील की है कि वे सावधानी बरतें और सुरक्षा निदेर्शों का पालन करें। वन विभाग ने स्पष्ट किया है कि मगरमच्छ आमतौर पर इंसानों पर हमला नहीं करते और मुख्य रूप से मछलियों का भोजन करते हैं, लेकिन सतर्क रहना आवश्यक है। विभाग ने लोगों से मगरमच्छ से दूरी बनाए रखने, बच्चों और पालतू जानवरों को किनारे से दूर रखने तथा पानी में न उतरने की सलाह दी है। इसके अलावा मगरमच्छ को भोजन न देने और किसी भी प्रकार से हस्तक्षेप न करने की चेतावनी दी गई है। यदि किसी को मगरमच्छ दिखाई दे, तो तुरंत वन विभाग को सूचित करने का आग्रह किया गया है। विभाग ने कहा कि मगरमच्छ की उपस्थिति नदी के पारिस्थितिकी तंत्र के लिए सकारात्मक संकेत है, लेकिन मानव सुरक्षा और वन्यजीव संरक्षण के लिए जनता का सहयोग जरूरी है।

त्योहारों के मद्देनजर खाद्य सुरक्षा टीम द्वारा मिठाई एवं होटल प्रतिष्ठानों का किया गया औचक निरीक्षण

पाकुड़ : ज़िले के उपायुक्त मनीष कुमार के निदेर्शानुसार आगामी त्योहारों को देखते हुए अंबेडकर चौक स्थित मुस्कान होटल, सागर स्वीट्स, अंबा स्वीट्स, अमूल शॉप एवं शुद्ध स्वीट्स सहित विभिन्न प्रतिष्ठानों का खाद्य सुरक्षा टीम द्वारा औचक निरीक्षण किया गया। निरीक्षण के क्रम में सागर स्वीट्स के पनीर की जाँच की गई, जो उपयुक्त पाया गया। सागर स्वीट्स एवं मुस्कान होटल के किचन की स्वच्छता भी संतोषजनक पाई गई। वहीं अंबा स्वीट्स के कलाकंद की जाँच की गई, जो सही पाया गया। इसके अतिरिक्त प्यादपुर स्थित गौतम स्वीट्स के पास 28 बोतल एक्सपायरी कोल्ड ड्रिंक बरामद की गई, जिसे मौके पर ही नष्ट कराया गया। साथ ही लड्डू में अखाद्य रंग मिलने पर लगभग 7 किलोग्राम लड्डू भी तत्काल नष्ट कराए गए। निरीक्षण के दौरान पनीर, कलाकंद, बूंदिया एवं रसकदम के नमूने एकत्रित कर प्रयोगशाला जाँच हेतु भेजे गए हैं। जिला प्रशासन ने स्पष्ट किया है कि आगामी त्योहारों को देखते हुए खाद्य सुरक्षा संबंधी जाँच अभियान लगातार जारी रहेगा। किसी भी प्रकार की मिलावट या खाद्य सुरक्षा मानकों का उल्लंघन पाए जाने पर संबंधित प्रतिष्ठानों के विरुद्ध सख्त कार्रवाई की जाएगी।

पीयूष गोयल की इंडस्ट्री से अपील, टैक्स कटौती का पूरा फायदा ग्राहकों को दें

नई दिल्ली ।

केंद्रीय वाणिज्य और उद्योग मंत्री पीयूष गोयल ने 22 सितंबर से लागू होने वाले नए जीएसटी सुधारों से पहले उद्योगों से अपील की है कि वे टैक्स कटौती का पूरा फायदा ग्राहकों तक पहुंचाएं। नए फ्रेमवर्क के तहत मौजूदा चार टैक्स स्लैब (5, 12, 18, 28 फीसदी) को घटाकर सिर्फ दो स्लैब (5 और 18 फीसदी) किया जाएगा। इस बदलाव से कई वस्तुओं पर टैक्स कम होगा, जिससे आम लोगों को कीमतों में राहत मिलेगी। सरकार ने कई वस्तुओं के टैक्स में भारी कमी की है। इसके अलावा, सिन और लग्जरी वस्तुओं पर 40 प्रतिशत टैक्स निर्धारित किया गया है। मंत्री पीयूष गोयल ने नई दिल्ली में कहा कि टैक्स कटौती का लाभ सीधे उपभोक्ताओं तक पहुंचाना जरूरी है, जिससे उद्योगों को भी दीर्घकालीन फायदा होगा। उन्होंने बताया कि ऑटोमोबाइल सेक्टर पहले ही कीमतों में कटौती कर ग्राहकों को फायदा पहुंचा रहा है। सरकार व्यापार सुगमता और विनिर्माण को बढ़ावा देने के लिए कई कदम उठा रही है, जिनमें नई लॉजिस्टिक्स नीति, नए औद्योगिक शहरों का विकास, छोटे विवादों को अपराधमुक्त करना और उद्योगों पर अनुपालन बोझ कम करना शामिल है। केंद्रीय अप्रत्यक्ष कर और सीमा शुल्क बोर्ड (सीबीआईसी) ने उद्योग संघों और विभिन्न मंत्रालयों के साथ बैठकों के जरिए नए जीएसटी दरों के प्रभावी कार्यान्वयन को सुनिश्चित किया है।

विशेषज्ञों के अनुसार, टैक्स कटौती से उपभोक्ता टिकाऊ वस्तुओं की कीमतों में कम से कम 10 प्रतिशत और ऑटोमोबाइल की कीमतों में 12 से 15 प्रतिशत तक की कमी आएगी। इससे आम जनता को सस्ते दामों पर उत्पाद मिलेंगे और बाजार में मांग बढ़ेगी। इस प्रकार, नई जीएसटी व्यवस्था के लागू होने से उपभोक्ताओं को सीधे फायदा मिलने की उम्मीद है, जिसके लिए उद्योगों का सहयोग आवश्यक है।

एच-1बी वीजा फीस हाइक : केंद्र सरकार नैसकॉम के साथ स्थिति का कर रही आकलन

- अमेरिका ने एच-1बी वीजा पर 1 लाख डॉलर की सालाना फीस लगाने का प्रस्ताव दिया

नई दिल्ली ।

अमेरिका द्वारा एच-1बी वीजा पर सालाना 1 लाख डॉलर की फीस लगाने के प्रस्ताव से भारतीय आईटी सेक्टर में हलचल है। इस फैसले से विशेषकर अमेरिकी कंपनियों पर असर पड़ने की उम्मीद है, जो तकनीकी प्रतिभा के लिए भारतीय पेशेवरों पर निर्भर हैं। भारत सरकार और प्रमुख आईटी संस्था नैसकॉम इस निर्णय के संभावित प्रभाव का विश्लेषण कर रहे हैं। सरकारी सूत्रों के अनुसार, वाशिंगटन डीसी स्थित भारतीय दूतावास भी इस मुद्दे पर सक्रिय है। विशेषज्ञों का मानना है कि अमेरिका की इस नीति से भारत में ग्लोबल कैपेबिलिटी सेंटर्स (जीसीसीएस) के विस्तार को बल मिलेगा। वर्तमान में भारत में लगभग 1,700 जीसीसीएस हैं, और 2030 तक यह संख्या 2,100 पार करने का अनुमान है। वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण ने हाल ही में कहा कि भारत में दुनिया के लगभग 50 फीसदी जीसीसीएस मौजूद हैं, जो अब सिर्फ बैक ऑफिस नहीं, बल्कि इनोवेशन और आरएंडडी के हब बन चुके हैं। उन्होंने कहा कि यह सेक्टर विकसित भारत 2047 की दिशा में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगा। टेक महिंद्रा के पूर्व सीईओ सीपी गुरनानी ने बताया कि भारतीय आईटी कंपनियों ने एच-1बी वीजा पर निर्भरता कम कर दी है और अब स्थानीय प्रतिभा, ऑटोमेशन और ग्लोबल डिलीवरी मॉडल पर जोर दिया जा रहा है। कुल मिलाकर, जहां एक ओर अमेरिकी नीति से चुनौतियाँ हैं, वहीं भारत के लिए यह तकनीकी नेतृत्व स्थापित करने का अवसर भी है।

एनटीपीसी विदेशों में यूरेनियम संपत्तियों का अधिग्रहण करेगी

- स्वच्छ ऊर्जा की दिशा में बड़ा कदम, माही-बांसवाड़ा में 2,800 मेगावाट की परियोजना से होगी शुरुआत

नई दिल्ली ।

देश की सबसे बड़ी बिजली उत्पादक कंपनी एनटीपीसी लिमिटेड अब परमाणु ऊर्जा क्षेत्र में प्रवेश करने जा रही है। कंपनी अपनी भावी परियोजनाओं के लिए विदेशों में यूरेनियम संपत्तियों के अधिग्रहण की योजना बना रही है, जिससे परमाणु ईंधन की सुनिश्चित आपूर्ति हो सके। एनटीपीसी ने यूरेनियम कॉरपोरेशन ऑफ इंडिया लिमिटेड (यूसीआईएल) के साथ एक समझौता ज्ञापन (एमओयू) के मसौदे को मंजूरी दी है। इसके तहत विदेशों में यूरेनियम खनिजों की तकनीकी और वाणिज्यिक जांच की जाएगी। यूरेनियम एक प्राकृतिक धातु है, जिसका उपयोग परमाणु ऊर्जा संयंत्रों में ईंधन के रूप में होता है। एनटीपीसी, जिसकी कुल स्थापित क्षमता 83,026 मेगावाट है, अब कोयला, गैस, जल और सौर ऊर्जा के साथ परमाणु ऊर्जा को भी अपने ऊर्जा मिश्रण में शामिल कर रही है। परमाणु क्षेत्र में इसकी पहली परियोजना राजस्थान के माही-बांसवाड़ा में 2,800 मेगावाट की होगी, जिसे न्यूक्लियर पावर कॉरपोरेशन ऑफ इंडिया लिमिटेड (एनपीसीआईएल) के साथ संयुक्त उद्यम 'अणुशक्ति विद्युत निगम लिमिटेड के माध्यम से विकसित किया जाएगा। इसके अलावा, कंपनी ने जनवरी 2025 में अपनी सहायक इकाई एनटीपीसी न्यूक्लियर एनर्जी लिमिटेड की स्थापना भी की है। एनटीपीसी, अमेरिका की क्लीन कोर थोरियम एनर्जी जैसी कंपनियों के साथ सहयोग की संभावनाएं तलाश रही है। भारत सरकार का लक्ष्य है कि 2047 तक 100 गीगावाट परमाणु ऊर्जा क्षमता स्थापित की जाए। फिलहाल देश की कुल ऊर्जा क्षमता में परमाणु ऊर्जा का योगदान सिर्फ 2 फीसदी (8,180 मेगावाट) है। एनटीपीसी का यह कदम इस लक्ष्य को प्राप्त करने की दिशा में महत्वपूर्ण माना जा रहा है।

भारत समुद्री खाद्य निर्यात में ग्लोबल लीडर, 2030 तक 15 बिलियन डॉलर का लक्ष्य

नई दिल्ली ।

भारत वर्तमान में 132 देशों को समुद्री खाद्य निर्यात कर विश्व बाजार में अपनी मजबूत पहचान बना चुका है। 2024-25 में देश ने 16,98,170 टन सीफूड का निर्यात किया, जिसकी कीमत 62,408.45 करोड़ रुपए (7.45 बिलियन डॉलर) रही। यह पिछले वर्ष 2023-24 के 17,81,602 टन निर्यात और 60,523.89 करोड़ रुपए (7.38 बिलियन डॉलर) से मूल्य के हिसाब से बढ़त दर्शाता है। इस क्षेत्र की निरंतर बढ़ोतरी वैश्विक व्यापार में उतार-चढ़ाव के बावजूद उसकी मजबूती को दर्शाती है। मत्स्य पालन क्षेत्र करीब 3 करोड़ मछुआरों और फिश फार्मरों की आजीविका का सहारा है, जो देश की अर्थव्यवस्था में अहम भूमिका निभाता है। यह क्षेत्र न केवल निर्यात में बढ़ोतरी कर रहा है, बल्कि ग्रामीण विकास और रोजगार सृजन में भी योगदान दे रहा है। एशिया के सबसे बड़े सीफूड ट्रेड फेयर, इंडिया इंटरनेशनल सीफूड शो का 24वां संस्करण 25 से 28 सितंबर तक भारत मंडपम, दिल्ली में आयोजित होगा। यह आयोजन वर्ल्ड फूड इंडिया 2025 का हिस्सा है। एसईएआई के अध्यक्ष पवन कुमार ने कहा कि यह कार्यक्रम भारत के समुद्री खाद्य निर्यात क्षेत्र की वैश्विक स्थिति मजबूत करने और नए बाजारों में विस्तार के लिए महत्वपूर्ण मंच साबित होगा। एसईएआई के महासचिव के.एन. राघवन ने कहा कि उनका आदर्श वाक्य 'सतत तरीके से प्राप्त, मानवीय तरीके से सोर्सिंग' इस क्षेत्र की जिम्मेदार और नैतिक प्रथाओं को दर्शाता है। आईआईएसएस 2025 में 260 से अधिक स्टॉल, तकनीकी सत्र, और 15 से अधिक देशों के प्रतिभागी मौजूद रहेंगे, जिनमें अमेरिका, यूरोपियन यूनियन, जापान और चीन प्रमुख हैं। भारत का समुद्री खाद्य निर्यात क्षेत्र तेजी से बढ़ते वैश्विक बाजार में अपनी मजबूती और स्थिरता को कायम रखे हुए है।

चांदी ने इस साल अब तक दिया 49 फीसदी का रिटर्न, सोना और शेयर बाजार पीछे

- ईवी और सौर ऊर्जा सेक्टर की मांग, वैश्विक अनिश्चितता और कमजोर डॉलर ने चांदी पहुंची उच्च स्तर पर

नई दिल्ली ।

इस वर्ष चांदी ने निवेशकों को जबरदस्त रिटर्न देकर सोना और शेयर बाजार को पीछे छोड़ दिया है। मल्टी कमोडिटी एक्सचेंज (एमसीएक्स) पर चांदी की कीमत 19 सितंबर 2025 तक 49.14 फीसदी बढ़कर 1,30,099 रुपए प्रति किलोग्राम तक पहुंच गई, जो पिछले वर्ष 87,233 रुपए प्रति किलोग्राम थी। विशेषज्ञों का मानना है कि यह तेजी वैश्विक आर्थिक अनिश्चितता, अमेरिकी डॉलर की कमजोरी, और फेडरल रिजर्व द्वारा ब्याज दरों में संभावित कटौती की उम्मीदों से आई है। इसके साथ ही इलेक्ट्रिक वाहनों, सौर ऊर्जा और स्वच्छ तकनीक क्षेत्रों से औद्योगिक मांग में तेज वृद्धि भी चांदी की कीमतों को बढ़ावा देने वाला मुख्य कारक रही। बाजार के जानकारों ने कहा कि भू-राजनीतिक तनावों के बीच सुरक्षित निवेश की तलाश ने भी चांदी को समर्थन दिया। इसके अलावा कमजोर रुपये ने घरेलू कीमतों को और ऊपर पहुंचाया। एक बाजार विश्लेषक ने बताया कि चांदी एकमात्र ऐसी धातु है जिसमें बहुमूल्य और औद्योगिक दोनों गुण मौजूद हैं।

उन्होंने बताया कि चांदी कॉमेक्स पर 2012 के बाद पहली बार 40 डॉलर प्रति औंस तक पहुंच गई। तुलनात्मक रूप से देखा जाए तो सोना इस साल अब तक 43.2 फीसदी बढ़ा है, जबकि बीएसई सेंसेक्स और एनएसई निफ्टी में क्रमशः 5.74 और 7.1 फीसदी की वृद्धि हुई है। विशेषज्ञों का सुझाव है कि जोखिम क्षमता के अनुसार चांदी में निवेश अभी भी एक बेहतर विकल्प हो सकता है।

एच-1बी वीजा फीस सिर्फ नए आवेदकों पर लागू

- 21 सितंबर से पहले दाखिल पिटीशनों पर नहीं पड़ेगा असर

मुंबई । अमेरिका में एच-1बी वीजा को लेकर मची हलचल के बीच व्हाइट हाउस ने बड़ा स्पष्टीकरण जारी किया है। नए नियम के तहत लागू की गई 1,00,000 डॉलर (लगभग 83 लाख रुपए) की भारी फीस केवल नए एच-1बी आवेदकों पर लागू होगी, मौजूदा वीज़ा धारकों पर नहीं। अमेरिकी नागरिकता और इमिग्रेशन सेवा (यूएससीआईएस) ने साफ किया है कि यह फीस केवल 21 सितंबर के बाद दायर होने वाले नए पिटीशनों पर लागू होगी। यूएससीआईएस निदेशक जोसेफ़ एडलो के अनुसार यह नियम राष्ट्रपति ट्रंप के एक आदेश का हिस्सा है। इसका उद्देश्य अमेरिका में विदेशी श्रमिकों की एंट्री को नियंत्रित करना और अमेरिकी नागरिकों को नौकरी में प्राथमिकता देना है। व्हाइट हाउस की प्रवक्ता टेलर रोजर्स ने कहा कि यह एकमुश्त शुल्क है, न कि कोई सालाना फीस। वहीं प्रेस सेक्रेटरी ने सोशल मीडिया पर लिखा कि मौजूदा वीज़ा धारकों या उनके नवीनीकरण पर इसका कोई असर नहीं पड़ेगा। हालांकि शुरू में इस आदेश से भारतीय एच-1बी वीज़ा धारकों में काफी भ्रम और डर फैल गया था। कई लोगों ने भारत लौटने की योजना टाल दी, जबकि कुछ की अमेरिका वापसी की फ्लाइट्स प्रभावित हुईं। अब इस स्पष्टीकरण से हजारों भारतीय प्रोफेशनल्स को राहत मिली है।

हीरो मोटोकॉर्प को उम्मीद, त्योहारों में होगी रिकॉर्ड बिक्री

- दोपहिया बाजार में बरकरार रहेगा शीर्ष स्थान

नई दिल्ली । हीरो मोटोकॉर्प को उम्मीद है कि इस साल त्योहारों का मौसम कंपनी के लिए अब तक का सबसे अच्छा साबित होगा। जीएसटी में कटौती के बाद मांग में तेजी आने की संभावना है, जिससे बिक्री के आंकड़े मजबूत होंगे। कंपनी के एक वे रिष्ठ अे धिकारी ने बताया` कि पहले पांच महीनों में बिक्री लगभग स्थिर रही, लेकिन नवरात्र और त्योहारों के दौरान अच्छी बुकिंग देखी जा रही है। हीरो मोटोकॉर्प इस बार 12 नए उत्पाद पहली बार त्योहारों के मौके पर बाजार में ला रही है, जिससे कंपनी को दोहरा फायदा होने की उम्मीद है। मौजूदा उत्पादों के साथ-साथ नई पेशकशों की वजह से कंपनी उद्योग से बेहतर प्रदर्शन करने की उम्मीद कर रही है। उन्होंने कहा` कि यह सकारात्मक माहौल कंपनी के लिए उत्साहजनक है और इसे बढ़ावा देगा। वित्त वर्ष 2024-25 में हीरो मोटोकॉर्प ने दोपहिया वाहन बिक्री में 54,45,251 इकाइयों के साथ शीर्ष स्थान कायम रखा है। मुख्य प्रतिस्पर्धी होंडा मोटरसाइकिल एंड स्कूटर इंडिया की बिक्री 47,89,283 रही। अगस्त तक के आंकड़ों के अनुसार, हीरो लगभग दो लाख इकाइयों की बढ़त बनाए हुए है। हीरो मोटोकॉर्प 100 सीसी, 125 सीसी, स्कूटर और प्रीमियम सेगमेंट में विस्तार की योजना बना रही है। इलेक्ट्रिक वाहनों की उपलब्धता बढ़ाने और हार्ले-डेविडसन के साथ साझेदारी जारी रखने की भी रणनीति है। साथ ही, प्रीमियम बिक्री आउटलेट (प्रेमिया स्टोर) की संख्या बढ़ाई जाएगी। वर्मा ने भरोसा जताया कि कंपनी 2025 में भी इस क्षेत्र में सबसे आगे रहेगी।

दोपहिया वाहनों के बीमा दावों में 15 फीसदी की बढ़ोतरी

- इलेक्ट्रिक बाइकों से सबसे ज्यादा खतरा

मुंबई । पॉलिसी बाजार की ताज़ा रिपोर्ट में दोपहिया वाहनों के इंश्योरेंस क्लेम को लेकर कई अहम खुलासे हुए हैं। रिपोर्ट के मुताबिक वित्त वर्ष 2024-25 में ऐसे दावों में 15 फीसदी की बढ़ोतरी दर्ज की गई है, जो हाल के वर्षों में सबसे अधिक है। अगले वर्ष इसमें 10-12 फीसदी और इजाफा होने की संभावना जताई गई है। रिपोर्ट बताती है कि 150 सीसी से 350 सीसी की मिड-रेंज मोटरसाइकिलों से जुड़े दावे सबसे ज्यादा बढ़े हैं, जबकि कम्यूटर बाइकों और स्कूटरों से जुड़े क्लेम स्थिर रहे। शहरों में इन तेज और पावरफुल बाइकों की मांग दुर्घटनाओं के जोखिम को बढ़ा रही है। इलेक्ट्रिक दोपहिया वाहनों से जुड़े बीमा क्लेम पेट्रोल बाइकों की तुलना में 18-20 फीसदी अधिक हैं। इसकी प्रमुख वजह बैटरी से जुड़ी समस्याएं और महंगे पुर्जों की मरम्मत है, जिसका खर्च 30-35 फीसदी तक ज्यादा आता है। भौगोलिक दृष्टि से देखें तो महाराष्ट्र, दिल्ली और उत्तर प्रदेश जैसे राज्यों से कुल दावों का लगभग आधा हिस्सा आता है। गाजियाबाद, जयपुर और मेरठ जैसे शहर अब बाइक चोरी के हॉटस्पॉट बन गए हैं। रिपोर्ट के अनुसार, 70-75 फीसदी दावे मामूली दुर्घटनाओं और प्राकृतिक आपदाओं से संबंधित हैं, जबकि 20-25 फीसदी चोरी और पूरी तरह के नुकसान के मामले हैं। थर्ड-पार्टी क्लेम कम होते हैं लेकिन इनका खर्च ज्यादा होता है। पॉ लिसी बाजार के विशेषज्ञों ने बदलते ट्रैफिक और तकनीकी रुझानों के बीच व्यापक बीमा को आवश्यक बताया है, खासकर इलेक्ट्रिक वाहनों के लिए।

एच-1बी वीजा शुल्क बढ़ोतरी और जीएसटी में कटौती से बाजार की दिशा तय होगी

- आईटी कंपनियों पर अमेरिका का नया शुल्क बनेगा दबाव का कारण

मुंबई ।

अमेरिका द्वारा एच-1बी वीजा शुल्क को 100,000 डॉलर तक बढ़ाने के फैसले का असर इस सप्ताह भारतीय शेयर बाजार पर दिख सकता है। इस कदम से भारत की आईटी कंपनियों जैसे टाटा कंसल्टेंसी सर्विसेज (टीसीएस, इंफोसिस और विप्रो की लागत बढ़ सकती है, जिससे उनकी आय पर नकारात्मक प्रभाव पड़ेगा। विशेषज्ञों का मानना है कि यह फैसला उन कंपनियों के लिए चिंता का विषय है जो अमेरिका में ऑनशोर प्रोजेक्ट्स पर निर्भर हैं। गौरतलब है कि एच-1बी वीजा धारकों में 70 फीसदी से अधिक भारतीय पेशेवर हैं। बाजार` विशेषज्ञों के अनुसार यह निर्णय ऐसे समय में आया है जब वैश्विक व्यापार वार्ताएं चल रही हैं, और इससे आईटी सेवा निर्यातकों पर अतिरिक्त दबाव बढ़ेगा। यह कदम अमेरिकी ग्राहकों की लागत बढ़ाएगा और भारतीय टैलेंट की मांग को प्रभावित करेगा। हालांकि घरेलू मोर्चे पर राहत की खबर है। जीएसटी परिषद ने 375 वस्तुओं पर कर दरों में कटौती की घोषणा की है, जो 22 सितंबर से लागू होगी। इससे रसोई का सामान, इलेक्ट्रॉनिक्स, दवाइयां और वाहन सस्ते होंगे।

यह त्योहारी सीजन में उपभोक्ता मांग को प्रोत्साहित कर सकता है। वाणिज्य मंत्री पीयूष गोयल 22 सितंबर को अमेरिका में व्यापार समझौते पर वार्ता के लिए जाएंगे, जिससे व्यापारिक दृष्टिकोण से सकारात्मक संकेत मिल सकते हैं। विदेशी निवेशकों की गतिविधियां और कच्चे तेल की कीमतें भी बाजार की दिशा निर्धारित करेंगी।

पिछले सप्ताह सेंसेक्स में 721 अंक और निफ्टी में 213 अंकों की बढ़त देखी गई। अब निवेशकों की नजर अमेरिका के आर्थिक आंकड़ों और फेडरल रिजर्व की नीतियों पर भी बनी रहेगी।

भारत-ओमान जल्द करेंगे सीईपीए समझौते पर हस्ताक्षर

नई दिल्ली । भारत और ओमान के बीच व्यापक आर्थिक भागीदारी समझौते (सीईपीए) पर जल्द ही हस्ताक्षर होने की उम्मीद है। भारत में ओमान के राजदूत इसा सालेह अब्दुल्ला अलशिबानी ने बताया कि बातचीत पूरी हो चुकी है और अब कानूनी प्रक्रियाएं चल रही हैं। यह समझौता व्यापार को ऊर्जा क्षेत्र से आगे बढ़ाकर विविध वस्तुओं और सेवाओं तक विस्तारित करेगा। भारत, ओमान से मुख्य रूप से पेट्रोलियम उत्पाद और यूरिया का आयात करता है। 2024-25 में दोनों देशों के बीच व्यापार 10.61 अरब डॉलर रहा। ओमान में 6,000 से अधिक भारत-ओमान संयुक्त उद्यम कार्यरत हैं। सीईपीए से सीमा शुल्क में कटौती, सेवाओं के व्यापार में वृद्धि और निवेश को प्रोत्साहन मिलेगा। यह समझौता भारत और खाड़ी देशों के बीच मजबूत आर्थिक साझेदारी की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम माना जा रहा है।

सेंसेक्स की प्रमुख सात कंपनियों का बाजार पूंजीकरण 1.18 लाख करोड़ बढ़ा

- शीर्ष 10 कंपनियों की सूची में रिलायंस पहले स्थान पर बनी रही

मुंबई ।

पिछले सप्ताह भारतीय शेयर बाजार में सकारात्मक रुख देखने को मिला, जिससे शीर्ष 10 सबसे मूल्यवान कंपनियों में से सात के बाजार पूंजीकरण (मार्केट कैप) में सामूहिक रूप से 1,18,328.29 करोड़ रुपए की बढ़त दर्ज की गई। इस दौरान भारतीय स्टेट बैंक और भारती एयरटेल को सबसे अधिक लाभ हुआ। बीएसई सेंसेक्स सप्ताह भर में 721.53 अंक चढ़कर बंद हुआ। इस बढ़त का सीधा असर प्रमुख कंपनियों के मार्केट कैप पर पड़ा। एसबीआई का बाजार मूल्यांकन 35,953.25 करोड़ रुपए बढ़कर 7,95,910 करोड़ रुपए हो गया, जबकि भारती एयरटेल की बाजार हैसियत 33,214.77 करोड़ रुपए बढ़कर 11,18,952.64 करोड़ पहुंच गई। रिलायंस इंडस्ट्रीज का मार्केट कैप 17,389.23 करोड़ रुपए की बढ़त के साथ 19,04,898.51 करोड़ रुपए रहा। इसके अलावा टीसीएस (12,952.75 करोड़ रुपए), एलआईसी (12,460.25 करोड़ रुपए), इन्फोसिस (6,127.73 करोड़ रुपए) और एचडीएफसी बैंक (230.31 करोड़ रुपए) के मूल्यांकन में भी वृद्धि दर्ज की गई। वहीं दूसरी ओर आईसीआईसीआई बैंक, बजाज फाइनेंस और हिंदुस्तान यूनिलीवर की बाजार हैसियत में गिरावट आई। आईसीआईसीआई बैंक का मार्केट कैप 10,707.87 करोड़ रुपए घटकर 10,01,654.46 करोड़ रह गया।

बजाज फाइनेंस और एचयूएल में क्रमशः 6,346.93 करोड़ रुपए और 5,039.87 करोड़ रुपए की गिरावट हुई। शीर्ष 10 कंपनियों की सूची में रिलायंस पहले स्थान पर बनी रही, उसके बाद एचडीएफसी बैंक, टीसीएस, भारती एयरटेल, आईसीआईसीआई बैंक, एसबीआई, इन्फोसिस, बजाज फाइनेंस, एचयूएल और एलआईसी का क्रम रहा।

डिविडेंड का धमाका, अगले हफ्ते 111 कंपनियां बांटेंगी मुनाफा

- 22 से 26 सितंबर तक बजाज, महाराष्ट्र स्कूटर, मोंटे कार्लो जैसी कंपनियां देंगी मोटा डिविडेंड

मुंबई । अगला हफ्ता शेयर बाजार में निवेशकों के लिए खास होने जा रहा है। 22 से 26 सितंबर के बीच कुल 111 कंपनियां अपने निवेशकों को डिविडेंड बाटेंगी। सबसे बड़ा डिविडेंड महाराष्ट्र स्कूटर लिमिटेड की ओर से 160 प्रति शेयर का घोषित किया गया है।

वहीं, बजाज होल्डिंग्स 65 रुपए और मोंटे कार्लो 20 रुपए प्रति शेयर डिविडेंड देगी। अकेले 22 सितंबर को ही 60 से ज्यादा कंपनियां लाभांश बांटेंगी। 23 सितंबर को इंडिया ग्लाइकोल्स 10 रुपए और जिंदल पॉली फिल्म्स 5.90 रुपए का डिविडेंड देगी। इसके अलावा कई छोटी-बड़ी कंपनियां इस हफ्ते मुनाफा बांटेंगी। निवेशकों के लिए यह हफ्ता निष्क्रिय आय कमाने का बेहतरीन अवसर हो सकता है। ध्यान दें कि डिविडेंड के लिए रिकॉर्ड डेट और एक्स-डिविडेंड डेट का पालन जरूरी है।

अमूल और मदर डेयरी ने सस्ते किए दूध और दुग्ध उत्पाद

- जीएसटी में कटौती के बाद दोनों कंपनियों ने 22 सितंबर से लागू की नई कीमतें

नई दिल्ली। गुजरात कोऑपरेटिव मिल्क मार्केटिंग फेडरेशन (जीसीएमएमएफ) जो अमूल ब्रांड नाम से उत्पाद बेचता है, ने अपने 700 से अधिक उत्पादों के दाम घटाने का ऐलान किया है। यह फैसला सरकार द्वारा दूध और संबंधित उत्पादों पर जीएसटी दरों में कटौती के बाद लिया गया है। अमूल का कहना है कि वह इसका पूरा लाभ ग्राहकों तक पहुंचाना चाहती है। नई कीमतें 22 सितंबर से लागू होंगी। इसके तहत 100 ग्राम मक्खन की कीमत 62 रुपए से घटकर 58 रुपए, एक लीटर घी 650 रुपए से घटकर 610 रुपए और 1 किलो चीज ब्लॉक 575 रुपए से घटकर 545 रुपए हो गया है। 200 ग्राम फ्रोजन पनीर अब 95 रुपए में मिलेगा, जो पहले 99 रुपए था। अमूल का मानना है कि कीमतों में कमी से दूध उत्पादों की मांग बढ़ेगी, जिससे किसानों को भी सीधा लाभ मिलेगा। जीसीएमएमएफ के 36 लाख से अधिक किसान सदस्य हैं। उधर, मदर डेयरी ने भी अपने उत्पादों के दाम घटाए हैं। यूएचटी दूध (टेट्रा पैक) की कीमत 77 रुपए से घटकर 75 रुपए कर दी गई है। मक्खन, चीज और घी पर भी क्रमशः 20 रुपए, 35 रुपए और 30 रुपए तक की कटौती की गई है। पनीर 3 रुपए से 6 रुपए प्रति किलो सस्ता हुआ है।

रोहिणी यादव को मिला भाई तेज प्रताप यादव का साथ

कहाः मेरी बहन पर किसी ने ऊंगली उठाई तो चलेगा सुदर्शन चक्र

पटना। लालू परिवार में सबकुछ ठीक नहीं चल रहा है। राष्ट्रीय जनता दल के सुप्रीमो लालू प्रसाद यादव की बेटी रोहिणी आचार्य की ओर से पिछले दो दिनो में किए गए सोशल मीडिया से साफ हो गया। अब रोहिणी को उनके बड़े भाई व पूर्व मंत्री तेज प्रताप यादव का साथ मिल चुका है। तेज प्रताप यादव ने कहा कि रोहिणी आचार्य ने अपने माता-पिता के लिए जो बलिदान दिया है, वह इतिहास में स्वर्ण अक्षरों में दर्ज होगा। तेज प्रताप ने यहां तक कह दिया कि अगर उनकी बहन पर किसी ने उंगली उठाई तो उनका 'सुदर्शन चक्र' चलेगा।

इधर, अपने छोटे भाई तेजस्वी यादव से नाराज रोहिणी आचार्य ने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म पर अपने अकाउंट को प्राइवेट कर लिया है। फिलहाल उनका अकांउट भी सर्च नहीं हो पा रहा है। वहीं फेसबुक पर उनका अकाउंट प्रोफेसनल मोड में अब नहीं रहा है। हालांकि, ब्लूटिक अभी भी बरकरार है। इधर, सोशल मीडिया पर रोहिणी आचार्य के समर्थक ने दावा किया कि रोहिणी ने अपने परिवार के सभी सदस्यों को अनफॉलो कर दिया है। 18 सितंबर को रोहिणी आचार्य ने कहा था कि वह लालू-तेजस्वी की जगह लेने की कोशिश करने वालों को देखना पसंद नहीं करती हैं। उन्होंने सोशल मीडिया पर आलोक कुमार के पोस्ट को शेयर किया था।

इसके बाद संजय यादव के खिलाफ लोगों ने जमकर प्रतिक्रिया दी है। रोहिणी आचार्य ने जो शेयर किया है, उसमें लिखा है कि- "फ्रंट सीट सदैव शीर्ष के नेता - नेतृत्वकर्त्ता के लिए चिन्हित होती है और उनकी अनुपस्थिति में भी किसी को उस सीट पर नहीं बैठना चाहिए .. वैसे अगर "कोई" अपने आप को शीर्ष नेतृत्व से भी ऊपर समझ रहा है, तो अलग बात है। 19 सितंबर को रोहिणी आचार्य ने अपने पिता लालू प्रसाद यादव को जीवनदान देने वाला फोटो-वीडियो शेयर करते हुए लिखा कि "जो जान हथेली पर रखते हुए बड़ी से बड़ी कुबार्नी देने का जज्बा रखते हैं, बेखौफी-बेबाकी-खुद्दारी तो उनके लहू में बहती है.."। इधर, इस पोस्ट के कुछ ही घंटे बाद रोहिणी ने एक और पोस्ट किया। उसमें उन्होंने लिखा कि "मैंने एक बेटी व बहन के तौर पर अपना कर्त्तव्य एवं धर्म निभाया है और आगे भी निभाती रहूंगी। मुझे किसी पद की लालसा नहीं है, न मेरी कोई राजनीतिक महत्वाकांक्षा है। मेरे लिए मेरा आत्म-सम्मान सर्वोपरि है।" रोहिणी की यह पोस्ट सोशल मीडिया पर वायरल हुए।

8 घंटे तक लॉक रहा रोहिणी का अकाउंट, अनलॉक होने के बाद पोस्ट हुआ गायब

पटना। तेजस्वी यादव के करीबी राज्यसभा सदस्य संजय यादव को लेकर उनकी बहन रोहिणी आचार्य का पोस्ट दूसरे दिन भी प्रसारित रहा। रोहिणी ने शुक्रवार की रात प्लेटफॉर्म सोशल मीडिया एक्स पर दो पोस्ट साझा कर अपनी नाराजगी जाहिर की। हालांकि, शनिवार की सुबह 8:00 बजे तक उन्होंने अपना अकाउंट प्राइवेट कर लिया, जिस कारण सभी यूजर को उनका पोस्ट नहीं दिख रहा था। उन्हें कोई टैग भी नहीं कर पा रहा था। इससे पहले ट्रोलर सक्रिय थे। शनिवार की शाम वह अपना अकाउंट अनलॉक कर दिया, जिसके बाद भी पोस्ट नहीं दिख रहा है।शुक्रवार को पहले पोस्ट में प्रचार रथ का हवाला देते हुए संजय यादव को निशाने पर लिया और लिखी कि पहली सीट नेता के लिए होती है। रोहिणी ने फेसबुक पर राजद समर्थक आलोक कुमार का पोस्ट शेयर की है। आलोक कुमार ने पोस्ट में तेजस्वी यादव के रथ पर आगे बैठे संजय यादव की तस्वीर डालते हुए लिखा है, फ्रंट सीट सदैव शीर्ष के नेता-नेतृत्वकर्त्ता के लिए चिह्नित होती है और

उनकी अनुपस्थिति में भी किसी को उस सीट पर नहीं बैठना चाहिए ... वैसे अगल कोई अपने आप को शीर्ष नेतृत्व से भी ऊपर समझ रहा है, तो अलग बात है। रोहिणी के इस पोस्ट को शेयर करने के बाद उन्हें सोशल मीडिया पर ट्रोल किया जाने लगा। शुक्रवार को ही रोहिणी ने लिखा, "मैंने एक बेटी और बहन के रूप में अपने कर्तव्य और धर्म को निभाया है और आगे भी निभाती रहूंगी। मेरी कोई पद की इच्छा नहीं है, न ही मेरे पास कोई राजनीतिक महत्वाकांक्षा है। मेरे लिए मेरा आत्म-सम्मान सर्वोपरि है।" इससे पूर्व उन्होंने एक पोस्ट में पिता लालू प्रसाद की तस्वीर के साथ लिखा, "जो जान हथेली पर रखते हैं, बेखौफी-बेबाकी उनके लहू में बहती है।" उन्होंने खुद को जिम्मेदार बेटी और बहन बताया।

नवरात्रि की तैयारियां हुईं शुरू

मूर्ति कलाकार देवी मां की प्रतिमाओं को अंतिम रूप देने में जुटे

पटना। नवरात्रि का पर्व 22 सितंबर, सोमवार से शुरू होने जा रहा है। इस अवसर पर मूर्ति कलाकार देवी मां की प्रतिमाओं को अंतिम स्वरूप देने में पूरी तरह लगे हैं। बाजार में नवरात्रि के उत्साह और रंग-रूप की झलक अब साफ दिखाई देने लगी है। गांव से लेकर शहर तक के पंडालों में विराजमान होने वाली मां दुर्गा की प्रतिमाओं को कलाकार सुंदर आकार और नौ रूपों में ढाल रहे हैं। मूर्ति बनाने वाले कलाकार रामबचन राम ने बताया कि हर साल की तरह इस वर्ष भी वे मां की प्रतिमा को अंतिम रूप दे रहे हैं। उन्होंने कहा कि महंगाई और GST बढ़ने के कारण कपड़े और श्रृंगार के सामान महंगे दामों में खरीदने पड़ते हैं। रोजी-रोटी के लिए मेहनत करनी पड़ती है और सरकार से हमें कोई मदद नहीं मिलती। यदि सरकार हमलोगों पर ध्यान देती तो हम और बेहतर काम कर सकते। इस बार उनके पास 28 से 30 प्रतिमाओं का आर्डर है। कलाकार दो माह पहले से ही मूर्ति बनाने में जुट जाते हैं। रामबचन राम ने बताया कि कल्याणपुर नुआंव, दुर्गावती से लेकर उत्तर प्रदेश के सैयदराजा और जमानियां के लोग प्रतिमाएं लेने आते हैं। मां की प्रतिमाओं पर की गई बारीकियों से लोग खासा प्रभावित होते हैं।

गंगा जल लेने गए दो युवक डूबकर लापता

पटना। नवरात्र की तैयारियों के बीच पटना के दीघा गंगा घाट पर रविवार सुबह दो युवक गंगा जल लेने के दौरान डूबकर लापता हो गए। दोनों युवक गंगा जल लेने के लिए मरीन ड्राइव स्थित घाट पर गए थे, जहां तेज धारा में बहकर वे पानी में लापता हो गए। जानकारी के अनुसार, 32 वर्षीय बंटी कुमार और 28 वर्षीय सुमित कुमार अपने एक दोस्त के साथ नवरात्रि के लिए गंगाजल लेने गए थे। तीनों घाट के नीचे उतरे, लेकिन तेज धारा के कारण बंटी और सुमित गहरे पानी में बह गए, जबकि उनका दोस्त सुरक्षित रहा और उसने तुरंत 112 डायल कर पुलिस को सूचना दी। सूचना मिलते ही पुलिस और एसडीआरएफ की टीम मौके पर पहुंच गई और दोनों युवक को खोजने के लिए गंगा नदी में सर्च अभियान शुरू किया।

संक्षिप्त डायरी

ट्रेन के गिरने से 14 साल का किशोर का हुई मौत, इलाके में मचा कोहराम

किशनगंज। जिले के ठाकुरगंज प्रखंड के भोगडावर हाउलड में शनिवार शाम एक बड़ा हादसा हो गया। अररिया-गलगलिया नई रेलवे लाइन पर सफर के दौरान 14 वर्षीय आजाद आलम सिलीगुड़ी-अररिया एक्सप्रेस ट्रेन से गिर गया। घटना की जानकारी मिलते ही पाठामारी थाना पुलिस और रेल पुलिस की टीम मौके पर पहुंची। स्थानीय लोगों की मदद से घायल आजाद को सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र ठाकुरगंज ले जाया गया। हादसे में उसके दोनों पैर गंभीर रूप से घायल हो गए थे। हालत नाजुक होने पर उसे हायर सेंटर रेफर किया गया, लेकिन इलाज के दौरान उसकी मौत हो गई।मृतक किशोर आजाद आलम दिघलबैंक प्रखंड के तुलसिया पंचायत के बांसबारी गांव का रहने वाला था। उसके पिता मरगुब आलम मजदूरी करते हैं। बेटे की मौत की खबर मिलते ही परिवार और पूरे इलाके में मातम छा गया। पाठामारी थाना अध्यक्ष सोना कुमार ने बताया कि घटना की जांच की जा रही है। उधर शनिवार रात करीब 9 बजे जब आजाद का शव घर पहुंचा तो उसे देखने के लिए ग्रामीणों की भारी भीड़ उमड़ पड़ी।

लोन मिलेगा कहकर जमा कराए पैसे, फिर झांसा देकर कटिहार-पूर्णिया में लूटी गाढ़ी कमाई, अब फरार

कटिहार। शहर में इन दिनों एक फाइनेंस कंपनी की ठगी का मामला चर्चा में है। सिरसा चौक स्थित किराए के मकान में खुले अनामिका कैपिटल फाइनेंस ने महज चार दिन में सैकड़ों लोगों को लोन का झांसा देकर लाखों रुपये वसूल लिए और फिर अचानक दफ्तर बंद कर फरार हो गई। कंपनी ने लोगों से कहा था कि हर किसी को 1.5 लाख रुपये तक का लोन मिलेगा। इसके लिए करंट अकाउंट खुलवाकर उसमें 5,000 रुपये मिनिमम बैलेंस रखना होगा। लालच में आकर सैकड़ों लोगों ने प्रोसेसिंग फीस और अकाउंट बैलेंस के नाम पर 5-5 हजार रुपये जमा कर दिए। एजेंटों ने पहले डोर-टू-डोर जाकर लोगों को रिझाया और फिर ऑफिस बुलाकर चेक से भुगतान करने का वादा किया। लेकिन जब लोन वितरण का दिन आया तो ऑफिस बंद मिला। कंपनी के अधिकारी और एजेंट सभी फरार हो चुके थे। पीड़ितों का आरोप है कि ठगों ने न सिर्फ कटिहार बल्कि पूर्णिया के लोगों से भी भारी रकम वसूली है। गुस्साए लोगों ने मौके पर पहुंचे मकान मालिक को भी कठघरे में खड़ा किया। हंगामा बढ़ता देख मुफस्सिल थाना पुलिस पहुंची और जांच शुरू कर दी। स्थानीय लोगों का कहना है कि यदि समय रहते प्रशासन ने ऐसी कंपनियों पर नजर रखी होती तो आम जनता की गाढ़ी कमाई लुटने से बच सकती थी। फिलहाल पीड़ित ठगी का शिकार होकर मायूस हैं और ठगों की जल्द गिरफ्तारी की मांग कर रहे हैं।

'सरकार बनी तो 100 भ्रष्ट नेताओं-अफसरों पर गिरेगी गाज

दरभंगा। जाले विधानसभा क्षेत्र के कमरौली स्थित फुटबॉल मैदान में जनसभा को संबोधित करते हुए जन सुधार के सूत्रधार प्रशांत किशोर ने बीजेपी और एनडीए पर बड़ा हमला बोला। उन्होंने कहा कि बिहार की जनता को यह सरकार लगातार लूट रही है, कभी राशन कार्ड के नाम पर, कभी जाति प्रमाण पत्र के नाम पर, तो कभी पुलिस प्रशासन की वसूली के जरिए। उन्होंने नगर विकास मंत्री जीवेश मिश्रा पर भी निशाना साधते हुए कहा कि उन पर तो राजस्थान की अदालत ने कार्रवाई की है, लेकिन दो महीने बाद होने वाले चुनाव में जाले की जनता उन्हें बेरोजगार बनाकर कार्रवाई करेगी। प्रशांत किशोर ने कहा कि राजद को लोग भ्रष्टाचार का प्रतीक मानते हैं, लेकिन भाजपा और एनडीए के नेता "कंबल ओढ़कर घी पीने" का काम कर रहे हैं। कई मामलों में ये राजद से भी ज्यादा भ्रष्ट हैं। उन्होंने दावा किया कि हाल ही में उन्होंने एनडीए के चार नेताओं के खिलाफ साक्ष्य पेश किए हैं, जिनका जवाब आज तक नहीं मिल पाया है। उन्होंने कहा कि हमारी सरकार बनते ही बिहार के सौ सबसे भ्रष्ट नेताओं और अफसरों के खिलाफ ऐसी कड़ी कार्रवाई होगी कि आने वाली सौ पीढ़ियां भी इसे याद रखेंगी। सभा में उन्होंने लोगों को संबोधित करते हुए यह भी कहा कि बिहार की बदहाली अब अधिक दिन नहीं चलेगी। प्रशांत किशोर ने कहा कि यह बिहार की बदहाली की आखिरी दिवाली और छठ होगी। इस वर्ष छठ के बाद बिहार के युवाओं को 10-12 हजार रुपये की नौकरी के लिए अन्य राज्यों में पलायन नहीं करना पड़ेगा।

पांच विदेशी नागरिकों को पुलिस ने पकड़ा, उर्दू में नोट्स और किताबें मिलीं

मोतिहारी। जिले के घोड़ासहन में शनिवार देर रात एसएसबी और पुलिस की संयुक्त कार्रवाई में पांच विदेशी संदिग्धों को हिरासत में लिया गया। इनमें चार सूडानी और एक बोलीविया का नागरिक हैं। इनके पास से उर्दू में लिखे नोट्स, कुछ पुस्तकें और दस्तावेज बरामद हुए हैं। मोतिहारी पुलिस ने मुख्यालय को भी इसकी सूचना दे दी है। पुलिस टीम मामले की जांच में जुट गई है। पुलिसया सूत्रों के अनुसार, शनिवार को रात करीब 9 बजे अठमोहन स्थित 71वीं वाहिनी एसएसबी के समवाय प्रभारी को इनपुट मिला कि पांच संदिग्ध अगरवा गांव से निकले हैं। इनमें चार लोग स्कॉर्पियो और एक व्यक्ति बाइक से सवार बस स्टैंड पहुंचा था। सभी विदेशी नागरिकों ने 'जय माता दी' नामक बस में पटना जाने के लिए पहले से ही किसी अन्य व्यक्ति के माध्यम से टिकट बुक करवा रखा था। सभी पटना आने की तैयारी में थे।। लेकिन, इसकी भनक एसएसपी को लग गई। इसके बाद तत्काल एसएसबी के कमांडेंट ने मोतिहारी के पुलिस अधीक्षक को मामले की जानकारी दी। एसपी ने फौरन घोड़ासहन के थानेदार को पांचों को हिरासत में लेने का निर्देश दिया।

इसके बाद थानेदार अपनी टीम के साथ छापेमारी करने निकले। इधर, पुलिस की टीम बस स्टैंड पहुंचकर चार संदिग्धों को दबोच लिया गया। इसके बाद एसएसबी की टीम भी मौके पर पहुंच गई। पांचवां संदिग्ध कुछ देर बाद खुद घोड़ासहन थाने पहुंच गया। बताया जा रहा है कि यह लोग रात 9 बजे रवाना होने वाली बस में सवार होने के लिए बस स्टैंड के पास अंधेरे में बैठे हुए थे, तभी उन्हें गिरफ्तार किया गया। एसएसबी अधिकारियों ने बताया कि ये सभी लोग नेपाल सीमा पार कर भारत में दाखिल हुए थे। छापेमारी के दौरान इनके पास से कई आपत्तिजनक सामान बरामद किए जाने की भी सूचना है। प्रारंभिक पूछताछ में विदेशियों नागरिकों ने पुलिस को अपनी पहचान बताई। सभी की उम्र 30 से 40 वर्ष के बीच बताई जा रही है। सूडानी युवकों का कहना है कि वह हैदराबाद में पढ़ाई करते हैं। हालांकि चारों ने नेपाल सीमा होते हुए भारत पहुंचने के बाद स्पष्ट कोई जानकारी नहीं दी। वहीं पुलिस ने मामले की गंभीरता को देखते हुए इंटेलिजेंस ब्यूरो को भी सूचना दे दी है।

जानिए, पांचों विदेश नागरिकों के नाम...

1. अब्दुल फि तह (44 वर्ष) - सूडान
2. रमा सिद्दीकी (38 वर्ष) - सूडान
3. अली अब्दुल गफ़्फार (27 वर्ष) - सूडान
4. अहमद डफआला (37 वर्ष) - सूडान
5. मिगुएल सोलानो चावेज (32 वर्ष)- बोलीविया

'पत्नी से लेकर बेटे तक..परिवारवाद में कैद है राजद की राजनीति', मंत्री विजेंद्र का लालू पर तंज

सुपौल। ऊर्जा मंत्री सह स्थानीय विधायक विजेंद्र प्रसाद यादव ने आरजेडी और लालू परिवार पर तीखा हमला बोला। उन्होंने कहा कि आरजेडी में योग्य और सीनियर नेताओं की अनदेखी कर केवल परिवारवाद को बढ़ावा दिया जा रहा है। लालू यादव ने पहले अपनी अनपढ़ पत्नी को मुख्यमंत्री बनाया और अब नौवीं फेल बेटे को सीएम बनाने की तैयारी कर रहे हैं। ऐसा हुआ तो बिहार की बदनामी पूरे देश में होगी। वह सुपौल में युवा जदयू द्वारा आयोजित उन्नति के 20 साल- युवा संवाद कार्यक्रम को संबोधित कर रहे थे। मंत्री ने कहा कि आरजेडी का मतलब एमवाय (मुस्लिम-यादव) कहा जाता है, लेकिन असल में वहां परिवार ही सर्वोपरि है। उन्होंने कहा कि 1990 में जब लालू यादव पहली बार मुख्यमंत्री बने, तो यह नीतीश कुमार और शरद यादव की कृपा से संभव हुआ। लेकिन बाद में चारा घोटाला और अलकतरा घोटाले में जेल जाने के बाद उन्होंने सीनियर और पढ़े-लिखे नेता अब्दुल बारी सिद्दीकी की जगह अपनी पत्नी को मुख्यमंत्री बना दिया। विधानसभा और परिषद में भी वरिष्ठ नेताओं की उपेक्षा कर पत्नी और बेटे को नेता प्रतिपक्ष बनाया। ऊर्जा मंत्री ने आरोप लगाया कि 1989 के भागलपुर दंगों में दोषियों को आरजेडी शासनकाल में संरक्षण और इनाम मिला। 2005 में नीतीश कुमार की सरकार आने के बाद ही दंगे की जांच हुई और पीड़ितों को न्याय व पुनर्वास मिला। मंत्री ने नीतीश सरकार के 20 वर्षों की उपलब्धियों का भी जिक्र किया। उन्होंने कहा कि बिना किसी भेदभाव के विकास कार्य हुए हैं और समाज के हर वर्ग तक योजनाओं का लाभ पहुंचा है। मौके पर युवा जदयू के प्रदेश अध्यक्ष नितीश पटेल ने युवाओं के उत्थान के लिए चलाई जा रही योजनाओं की चर्चा की। उन्होंने कहा कि मुख्यमंत्री स्वयं सहायता भत्ता योजना, स्टूडेंट क्रेडिट कार्ड, कुशल युवा कार्यक्रम, मुख्यमंत्री युवा उद्यमी योजना और प्रतिज्ञा योजना से लाखों युवाओं को आत्मनिर्भर बनाया जा रहा है। अब राज्य स्तरीय नौकरियों की परीक्षा शुल्क भी घटाकर 100 रुपए कर दिया गया है।

तेजस्वी के सामने पीएम की मां को गाली

तेजप्रपात बोले-अपशब्द कहने वाले को जेल हो, वरना महुआ में आंदोलन करेंगे, बीजेपी ने कहा-माफी मांगे लालू परिवार

पटना। नेता प्रतिपक्ष तेजस्वी यादव की बिहार अधिकार यात्रा के दौरान पीएम की मां को गाली देने का मामला तूल पकड़ता जा रहा है। इस विवाद में अब तेजस्वी के बड़े भाई और पूर्व मंत्री तेजप्रताप की एंट्री हो गई है। पटना में उन्होंने मीडिया से बात करते हुए कहा, 'जिन लोगों ने मां पर उंगली उठाने का काम किया और गाली देने का काम किया उनके ऊपर ऋक्षफ क्या उन्हें जेल होनी चाहिए। मैं बिहार और केंद्र की सरकार से मांग करता हूं कि मां शब्द का अपमान करने वाले को तुरंत से तुरंत जेल भेजे।' महुआ के विधायक मुकेश रौशन पर निशाना साधते हुए उन्होंने कहा, 'अगर आरोपी को जेल नहीं भेजा गया तो जनशक्ति जनता दल महुआ में आंदोलन करेगा।' पूरे मामले पर बीजेपी और ठऊअ के दल पहले से राजद पर हमलावर हैं। इस मामले पर डिप्टी उट सम्राट चौधरी ने कहा, 'मैं लालू यादव के परिवार को चेतावनी देता हूं कि माफी मांगे ले। ये लोग बिहार को कलंकित कर रहे हैं।' डिप्टी सीएम ने कहा, 'तेजस्वी यादव की मौजूदगी में उनके मंच से एक बार फिर प्रधानमंत्री मोदी की मां को गाली दी गई। जो दुर्भाग्यपूर्ण है और लोकतंत्र का घोर अपमान है।' सवाल करते हुए उन्होंने कहा, 'क्या यही है विपक्ष की राजनीति? क्या मां-बहनों को गाली देना ही उनका संस्कार और हथियार बन गया है? बिहार की जनता इस गंदी राजनीति को अच्छी तरह समझ रही है और लोकतांत्रिक तरीके से जवाब देगी।' बिहार अधिकार यात्रा के अंतिम दिन शनिवार को पीएम की मां को गाली देने का मामला सामने आया है। दरअसल, तेजस्वी वैशाली के महुआ के गांधी मैदान में रात करीब 9 बजे जनसभा को संबोधित कर रहे थे। इस दौरान आरजेडी समर्थक BJP-RSS के

खिलाफ नारेबाजी करने लगे। इस बीच तेजस्वी की मौजूदगी में पीएम मोदी की मां को गाली दी जाने लगी। काफी देर तक समर्थक अपशब्द कहते रहे। हालांकि तेजस्वी अपना भाषण देते रहे। घटना का वीडियो भी सामने आया है। इधर मामले को लेकर बिहार भाजपा के प्रदेश कार्य समिति के सदस्य कृष्ण सिंह कल्लू ने गांधी मैदान थाने में लिखित शिकायत दी है। तेजस्वी यादव और महुआ विधायक मुकेश रोशन के खिलाफ FIR दर्ज कराई है। बता दें कि इससे पहले राहुल गांधी की वोटर अधिकार यात्रा के दौरान दरभंगा में राहुल के लिए बनाए गए स्वागत मंच से प्रधानमंत्री की मां को गाली दी गई थी। इस मामले ने बहुत तूल पकड़ा था। बीजेपी ने पूरे बिहार में प्रोटेस्ट किया था और बंद का आह्वान किया था। चिराग पासवान ने पर लिखा- एक बार फिर राजद के राजनीतिक कार्यक्रम में पार्टी के शीर्ष नेताओं की मौजूदगी में प्रधानमंत्री जी के लिए अपशब्दों का प्रयोग किया गया, जो शर्मनाक है। लोकसभा चुनाव प्रचार के दौरान भी तेजस्वी यादव की उपस्थिति में ही मुझे और मेरी मां के लिए अपमानजनक शब्दों का इस्तेमाल किया था। माताओं-बहनों के लिए अपशब्द का इस्तेमाल राजद की पहचान रही ही है। चुनाव नजदीक है, सबका जवाब बिहार की जनता अवश्य देगी। केंद्रीय मंत्री गिरिराज सिंह ने पर लिखा- हम लालू जी का जंगल राज कहते हैं तो बुरा मान जाते हैं। हमारे प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जी को लालू के राजकुमार तेजस्वी यादव के मंच से गालियां दी जाती है। आप लोग सुधरने वाले नहीं है। बिहार की जनता आने वाले बिहार विधानसभा के चुनाव में जवाब देगी। नित्यानंद राय ने पर लिखा- 'गाली-गलौज में पीएचडी हासिल कर चुके तेजस्वी यादव और उनके गुर्गों का एक और शर्मनाक करतूत। यह गाली दुनिया के सर्वाधिक लोकप्रिय और देश के यशस्वी प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जी के खिलाफ हार की बौखलाहट में है।

वर्ष के चार नवरात्रों में चैत्र, आषाढ़, आश्विन और माघ की शुक्ल प्रतिपदा से नवमी तक नौ दिन के होते हैं, परंतु प्रसिद्धि में चैत्र और आश्विन के नवरात्र ही मुख्य माने जाते हैं। नवरात्र में देवी माँ के व्रत रखे जाते हैं। स्थान-स्थान पर देवी माँ की मूर्तियाँ बनाकर उनकी विशेष पूजा की जाती है। मान्यता है कि नवरात्र में महाशक्ति की पूजा कर श्रीराम ने अपनी खोई हुई शक्ति पाई, इसलिए इस समय आदिशक्ति की आराधना पर विशेष बल दिया गया है।

ऊर्जा का उत्सव नवरात्रि

नवरात्रि एक हिंदू पर्व है। नवरात्रि संस्कृत शब्द है, जिसका अर्थ होता है नौ रातें। यह पर्व साल में चार बार आता है। चैत्र, आषाढ, अश्विन, पोषप्रतिपदा से नवमी तक मनाया जाता है। नवरात्रि के नौ रातो में तीन देवियों - महाकाली, महालक्ष्मी और महासरस्वतीया सरस्वतीकि तथा दुर्गा के नौ स्वरुपों की पूजा होती है जिन्हे नवदुर्गा कहते हैं। नौ देवियाँ है - श्री शैलपुत्री, श्री ब्रह्मचारिणी, श्री चंद्रघंटा, श्री कुष्मांडा, श्री स्कंदमाता, श्री कात्यायनी, श्री कालरात्रि, श्री महागौरी, श्री सिद्धिदात्री।

शक्ति की उपासना का पर्व शारदेय नवरात्र प्रतिपदा से नवमी तक निश्चित नौ तिथि, नौ नक्षत्र, नौ शक्तियों की नवधा भक्ति के साथ सनातन काल से मनाया जा रहा है। सर्वप्रथम श्रीरामचंद्रजी ने इस शारदीय नवरात्रि पूजा का प्रारंभ समुद्र तट पर किया था और उसके बाद दसवें दिन लंका विजय के लिए प्रस्थान किया और विजय प्राप्त की । तब से असत्य, अधर्म पर सत्य, धर्म की जीत का पर्व दशहरा मनाया जाने लगा। आदिशक्ति के हर रूप की नवरात्र के नौ दिनों में क्रमशः अलग-अलग पूजा की जाती है। माँ दुर्गा की नौवीं शक्ति का नाम सिद्धिदात्री है। ये सभी प्रकार की सिद्धियाँ देने वाली हैं। इनका वाहन सिंह है और कमल पुष्प पर ही आसीन होती हैं । नवरात्रि के नौवें दिन इनकी उपासना की जाती है। नवदुर्गा और दस महाविधाओं में काली ही प्रथम प्रमुख हैं। भगवान शिव की शक्तियों में उग्र और सौम्य, दो रूपों में अनेक रूप धारण करने वाली दस महाविधाएँ अनंत सिद्धियाँ प्रदान करने में समर्थ हैं। दसवें स्थान पर कमला वैष्णवी शक्ति हैं, जो प्राकृतिक संपत्तियों की अधिष्ठात्री देवी लक्ष्मी हैं। देवता, मानव, दानव सभी इनकी कृपा के बिना पंगु हैं, इसलिए आगम-निगम दोनों में इनकी उपासना समान रूप से वर्णित है। सभी देवता, राक्षस, मनुष्य, गंधर्व इनकी कृपा-प्रसाद के लिए लालायित रहते हैं।

प्रमुख कथा

लंका-युद्ध में ब्रह्माजी ने श्रीराम से रावण वध के लिए चंडी देवी का पूजन कर देवी को प्रसन्न करने को कहा और बताए अनुसार चंडी पूजन और हवन हेतु दुर्लभ एक सौ आठ नीलकमल की व्यवस्था की गई। वहीं दूसरी ओर रावण ने भी अमरता के लोभ में विजय कामना से चंडी पाठ प्रारंभ किया। यह बात इंद्र देव ने पवन देव के माध्यम से श्रीराम के पास पहुँचाई और परामर्श दिया कि चंडी पाठ यथासभंव पूर्ण होने दिया जाए। इधर हवन सामग्री में पूजा स्थल से एक नीलकमल रावण की मायावी शक्ति से गायब हो गया और राम का संकल्प टूटता-सा नजर आने लगा। भय इस बात का था कि देवी माँ रुष्ट न हो जाएँ। दुर्लभ नीलकमल की व्यवस्था तत्काल असंभव थी, तब भगवान राम को सहज ही स्मरण हुआ कि मुझे लोग कमलनयन नवकंच लोचन कहते हैं, तो क्यों न संकल्प पूर्ति हेतु एक नेत्र अर्पित कर दिया जाए और प्रभु राम जैसे ही तूणीर से एक बाण निकालकर अपना नेत्र निकालने के लिए तैयार हुए, तब देवी ने प्रकट हो, हाथ पकड़कर कहा- राम मैं प्रसन्न हूँ और विजयश्री का आशीर्वाद दिया। वहीं रावण के चंडी पाठ में यज्ञ कर रहे ब्राह्मणों की सेवा में ब्राह्मण बालक का रूप धर कर हनुमानजी सेवा में जुट गए। नि:स्वार्थ सेवा देखकर ब्राह्मणों ने हनुमानजी से वर माँगने को कहा। इस पर हनुमान ने विनम्रतापूर्वक कहा- प्रभु, आप प्रसन्न हैं तो जिस मंत्र से यज्ञ कर रहे हैं, उसका एक अक्षर मेरे कहने से बदल दीजिए। ब्राह्मण इस रहस्य को समझ नहीं सके और तथास्तु कह दिया। मंत्र में जयादेवी... भूर्तिहरिणी में ह के स्थान पर क उच्चारित करें, यही मेरी इच्छा है। भूर्तिहरिणी यानी कि प्राणियों की पीड़ा हरने वाली और करिणी का अर्थ हो गया प्राणियों को पीड़ित करने वाली, जिससे देवी रुष्ट हो गई और रावण का सर्वनाश करवा दिया। हनुमानजी महाराज ने श्लोक में ह की जगह क करवाकर रावण के यज्ञ की दिशा ही बदल दी।

अन्य कथाएं

इस पर्व से जुड़ी एक अन्य कथा अनुसार देवी दुर्गा ने एक भैंस रूपी असुर अर्थात महिषासुर का वध किया था। पौराणिक कथाओं के अनुसार महिषासुर के एकाग्र ध्यान से बाध्य होकर देवताओं ने उसे अजय होने का वरदान दे दिया। उसको वरदान देने के बाद देवताओं को चिंता हुई कि वह अब अपनी शक्ति का गलत प्रयोग करेगा। और प्रत्याशित प्रतिफल स्वरूप महिषासुर ने नरक का विस्तार स्वर्ग के द्वार तक कर दिया और उसके इस कृत्य को देख देवता विस्मय की स्थिति में आ गए। महिषासुर ने सूर्य, इन्द्र, अग्नि, वायु, चन्द्रमा, यम, वरुण और अन्य देवताओं के सभी अधिकार छीन लिए हैं और स्वयं स्वर्गलोक का मालिक बन बैठा। देवताओं को महिषासुर के प्रकोप से पृथ्वी पर विचरण करना पड़ रहा है। तब महिषासुर के इस दुस्साहस से क्रोधित होकर देवताओं ने देवी दुर्गा की रचना की। ऐसा माना जाता है कि देवी दुर्गा के निर्माण में सारे देवताओं का एक समान बल लगाया गया था। महिषासुर का नाश करने के लिए सभी देवताओं ने अपने अपने अस्त्र देवी दुर्गा को दिए थे और कहा जाता है कि इन देवताओं के सम्मिलित प्रयास से देवी दुर्गा और बलवान हो गई थी। इन नौ दिन देवी-महिषासुर संग्राम हुआ और अन्ततः महिषासुर-वध कर महिषासुर मर्दिनी कहलायीं।

निर्माणाधीन मूर्तियां

चौमासे में जो कार्य स्थगित किए गए होते हैं, उनके आरंभ के लिए साधन इसी दिन से जुटाए जाते हैं। क्षत्रियों का यह बहुत बड़ा पर्व है। इस दिन ब्राह्मण सरस्वती-पूजन तथा क्षत्रिय शस्त्र-पूजन आरंभ करते हैं। विजयादशमी या दशहरा एक राष्ट्रीय पर्व है। अर्थात आश्विन शुक्ल दशमी को सायंकाल तारा उदय होने के समय विजयकाल रहता है। यह सभी कार्यों को सिद्ध करता है। आश्विन शुक्ल दशमी पूर्वविद्धा निषिद्ध, परविद्धा शुद्ध और श्रवण नक्षत्रयुक्त सूर्योदयव्यापिनी सर्वश्रेष्ठ होती है। अपराह्न काल, श्रवण नक्षत्र तथा दशमी का प्रारंभ विजय यात्रा का मुहूर्त माना गया है। दुर्गा-विसर्जन, अपराजिता पूजन, विजय-प्रयाग, शमी पूजन तथा नवरात्र-पारण इस पर्व के महान कर्म हैं। इस दिन संध्या के समय नीलकंठ पक्षी का दर्शन शुभ माना जाता है। क्षत्रिय/राजपूतों इस दिन प्रातः स्नानादि नित्य कर्म से निवृत्त होकर संकल्प मंत्र लेते हैं। इसके पश्चात देवताओं, गुरुजन, अस्त्र-शस्त्र, अश्व आदि के यथाविधि पूजन की परंपरा है।

कैसे करें घट स्थापना

आश्विन शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा से शारदीय नवरात्रि की धूम नौ दिनों तक रहेगी। इन दिनों मां भगवती के नौ रूपों का पूजन-अर्चन होगा। आइए जानते हैं घटस्थापना कैसे करें -

- घटस्थापना हमेशा शुभ मुहूर्त में करनी चाहिए।
- नित्य कर्म और स्नान के बाद ध्यान करें।
- इसके बाद पूजन स्थल से अलग एक पाटे पर लाल व सफेद कपड़ा बिछाएं।
- इस पर अक्षत से अष्टदल बनाकर इस पर जल से भरा कलश स्थापित करें।
- इस कलश में शतावरी जड़ी, हलकुंड, कमल गट्टे व रजत का सिक्का डालें।
- दीप प्रज्वलित कर इष्ट देव का ध्यान करें।
- तत्पश्चात देवी मंत्र का जाप करें।
- अब कलश के सामने गेहूं व जौ को मिट्टी के पात्र में रोंपें।
- इस ज्वारे को माताजी का स्वरूप मानकर पूजन करें।
- अंतिम दिन ज्वारे का विसर्जन करें।

नवरात्रि के चमत्कारिक दिव्य मंत्र

वर्तमान में मनुष्य ने अपने जीवन को इतनी आवश्यकताओं से घेर लिया है कि वह उनमें ही उलझा रहता है। ऐसे मनुष्यों के लिए समस्याओं को हल करने के लिए सरलतम मंत्र दे रहे हैं। जो नवरात्रि में करने से सफलता मिलती है एवं समस्या से छुटकारा मिलता है। ऐसे पावन नौ दिनों के लिए दिव्य मंत्र दिए जा रहे हैं, जिनके विधिवत परायण करने से स्वयं के नाना प्रकार के कार्य व सामूहिक रूप से दूसरों के कार्य पूर्ण होते हैं। इन मंत्रों को नौ दिनों में अवश्य जाप करें। इनसे यश, सुख, समृद्धि, पराक्रम, वैभव, बुद्धि, ज्ञान, सेहत, आयु, विद्या, धन, संपत्ति, ऐश्वर्य सभी की प्राप्ति होती है। विपत्तियों का नाश होगा।

विपत्ति-नाश के लिए

शरणागतदीनार्तपरित्राणपरायणे।
सर्वस्पापहरे देवि नारायणि नमोस्तुते।।

भय नाश के लिए

सर्वस्वरूपे सर्वेश सर्वशक्तिसमन्विते।
भयेभ्यस्त्राहि नो देवि, दुर्गे देवि नमोस्तुते।।

पाप नाश तथा भक्ति की प्राप्ति के लिए

नमेभ्य सर्वदा भक्त्या चण्डिके दुरितापहे।
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि।।

हर प्रकार के कल्याण के लिए

सर्वमंगल्यमांगल्ये शिवे सर्वार्थसाधिके।
शरण्ये त्र्यंबके गौरी नारायणि नमोस्तुते।।

धन, पुत्रादि प्राप्ति के लिए

सर्वबाधाविनिर्मुक्तो-धनधान्यसुतान्वित
मनुष्यों मत्प्रसादेन भविष्यति न संशय।।

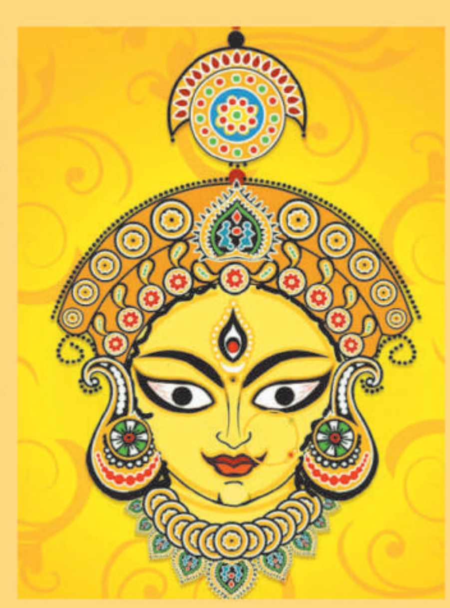

रक्षा पाने के लिए

शूलेन पाहि नो देवि पाहि खंडे न चाम्बिके।
घण्टास्वनेन न पाहि चापज्यानि स्वनेन च।।

मोक्ष की प्राप्ति के लिए

त्वं वैष्णवी शक्तिरन्तवीर्या।
विश्वस्य बीजं परमासि माया।
सम्मोहितं देवि समस्तमेत
त्वं वै प्रसन्ना भूवि मुक्ति हेतु।।

बाधा व शांति के लिए

सर्वबाधाप्रमशन त्रैलोक्याखिलेश्वरि।
एवमेव त्वया कार्यमस्यद्वैरिविनाशन्नम।।

सुलक्षणा पत्नी की प्राप्ति के लिए

पत्नी मनोरमां देहि मनोवृत्तानुसारिणीम
तारिणी दुर्गसंसारसागरस्य कुलोद्भवाम।।

नौ दिन कैसे करें कन्या-पूजन

नवरात्रि यानी सौन्दर्य के मुखरित होने का पर्व। नवरात्रि यानी उमंग से खिल-खिल जाने का पर्व। कहते हैं, नौ दिनों तक दैवीय शक्ति मनुष्य लोक के भ्रमण के लिए आती है। इन दिनों की गई उपासना-आराधना से देवी भक्तों पर प्रसन्न होती है। लेकिन पुराणों में वर्णित है कि मात्र श्लोक-मंत्र-उपवास और हवन से देवी को प्रसन्न नहीं किया जा सकता। इन दिनों 2 से लेकर 5 वर्ष तक की नन्ही कन्याओं के पूजन का विशेष महत्व है। नौ दिनों तक इन नन्ही कन्याओं को सुंदर गिफ्ट्स देकर इनका दिल जीता जा सकता है। इनके माध्यम से नवदुर्गा को भी प्रसन्न किया जा सकता है। पुराणों की दृष्टि से नौ दिनों तक कन्याओं को एक विशेष प्रकार की भेंट देना शुभ होता है।

- प्रथम दिन इन्हें फूल की भेंट देना शुभ होता है। साथ में कोई एक श्रृंगार सामग्री अवश्य दें। अगर आप मां सरस्वती को प्रसन्न करना चाहते है तो श्वेत फूल अर्पित करें। अगर आपके दिल में कोई भौतिक कामना है तो लाल पुष्प देकर इन्हें खुश करें। (उदाहरण के लिए - गुलाब, चंपा, मोगरा, गेंदा, गुड़हल)
- दूसरे दिन फल देकर इनका पूजन करें। यह फल भी सांसारिक कामना के लिए लाल अथवा पीला और वैराग्य की प्राप्ति के लिए केला या श्रीफल हो सकता है। याद रखें कि फल खट्टे ना हो।
- तीसरे दिन मिठाई का महत्व होता है। इस दिन अगर हाथ की बनी खीर, हलवा या केशरिया चावल बना कर खिलाए जाएं तो देवी प्रसन्न होती है।
- चौथे दिन इन्हें वस्त्र देने का महत्व है लेकिन सामर्थ्य अनुसार रूमाल या रंगबिरंगे रीबन दिए जा सकते हैं।
- पांचवे दिन देवी से सौभाग्य और संतान प्राप्ति की मनोकामना की जाती है। अतः कन्याओं को पांच प्रकार की श्रृंगार सामग्री देना अत्यंत शुभ होता है। इनमें बिंदिया, चूड़ी, मेहंदी, बालों के लिए क्लिप्स, सुगंधित साबुन, काजल, नेलपॉलिश, टैल्कम पावडर इत्यादि हो सकते हैं।
- छठे दिन बच्चियों को खेल-सामग्री देना चाहिए। आजकल बाजार में खेल सामग्री की अनेक वैरायटी उपलब्ध है। पहले यह रिवाज पांचे, रस्सी और छोटे-मोटे खिलौनों तक सीमित था। अब तो ढेर सारे विकल्प मौजूद है।
- सातवां दिन मां सरस्वती के आह्वान का होता है। अतः इस दिन कन्याओं को शिक्षण सामग्री दी जानी चाहिए। आजकल स्टेशनरी बाजार में विभिन्न प्रकार के पेन, स्केच पेन, पेंसिल, कॉपी, ड्रॉईंग बुक्स, कंपास, वाटर बॉटल, कलर बॉक्स, लंच बॉक्स उपलब्ध है।
- आठवां दिन नवरात्रि का सबसे पवित्र दिन माना जाता है। इस दिन अगर कन्या का अपने हाथों से श्रृंगार किया जाए तो देवी विशेष आशीर्वाद देती है। इस दिन कन्या के दूध से पैर पूजने चाहिए। पैरों पर अक्षत, फूल और कुंकुम लगाना चाहिए। इस दिन कन्या को भोजन कराना चाहिए और यथासामर्थ्य कोई भी भेंट देनी चाहिए। हर दिन कन्या-पूजन में दक्षिणा अवश्य दें।
- नौवें दिन खीर, ग्वारफली और दूध में गूंथी पूरियां कन्या को खिलानी चाहिए। उसके पैरों में महावर और हाथों में मेहंदी लगाने से देवी पूजा संपूर्ण होती है। अगर आपने घर पर हवन का अयोजन किया है तो उसके नन्हे हाथों से उसमें समिधा अवश्य डलवाएं। उसे इलायची और पान का सेवन कराएं।

दिल्ली के पूर्व क्रिकेटर मिथुन मन्हास बीसीसीआई अध्यक्ष बनने के लिए तैयार

मुंबई (एजेंसी)। दिल्ली के पूर्व कप्तान मिथुन मन्हास अगले BCCI अध्यक्ष बनने के लिए तैयार हैं। BCCI के विभिन्न पदों के लिए नामांकन दाखिल करने की समय सीमा समाप्त होने से एक दिन पहले, शनिवार तक, मन्हास अध्यक्ष पद की दौड़ में एकमात्र नाम थे, जो इस साल अगस्त में पूर्व भारतीय ऑलराउंडर रोजर बिन्नी के पद छोड़ने के बाद से खाली है। BCCI उपाध्यक्ष राजीव शुक्ला तब से अंतरिम रूप से इस पद पर कार्यरत थे।

BCCI पदाधिकारियों में एक और क्रिकेटर के शामिल होने की संभावना है, कर्नाटक और भारत के पूर्व स्पिनर रघुराम भट कोषाध्यक्ष का पदभार संभालेंगे। भट वर्तमान में कर्नाटक राज्य क्रिकेट संघ के अध्यक्ष हैं। मन्हास, जो अक्टूबर में 46 वर्ष के हो जाएंगे, जम्मू और कश्मीर क्रिकेट संघ के संचालन के लिए BCCI द्वारा नियुक्त उप-समिति का हिस्सा हैं।

जम्मू में जन्मे मन्हास 2015 में दिल्ली से जम्मू और कश्मीर चले गए थे और उसके अगले वर्ष सेवानिवृत्त हो गए। तब से उन्होंने विभिन्न टीमों के साथ कोच के रूप में काम किया है, जिसमें बांग्लादेश पुरुष अंडर-19 टीम के बल्लेबाजी सलाहकार के साथ-साथ आईपीएल टीमों किंग्स इलेवन पंजाब (अब पंजाब किंग्स), रॉयल चैलेंजर्स बेंगलुरु और गुजरात टाइटन्स के लिए भी काम किया है। भारतीय घरेलू क्रिकेट के दिग्गज मन्हास ने 1997-98 से 2016-17 तक 157 प्रथम श्रेणी मैच खेले, जहां उन्होंने 9714 रन बनाए; 130 लिस्ट ए मैचों में 4126 रन बनाए; और 91 टी20 मैचों में 1170 रन बनाए।

मन्हास का नाम शनिवार को दिल्ली में हुई एक अनौपचारिक बैठक में सामने आया, जिसमें BCCI के कुछ प्रमुख पूर्व और वर्तमान सदस्य शामिल हुए, जिनमें वर्तमान ICC अध्यक्ष जय शाह, शुक्ला, BCCI सचिव देवजीत सैकिया, दिल्ली एवं जिला क्रिकेट संघ के अध्यक्ष रोहन जेटली और पूर्व बोर्ड सचिव निरंजन शाह शामिल थे। विभिन्न पदाधिकारियों के लिए चुनाव 28 सितंबर को मुंबई में होने वाली बीसीसीआई की वार्षिक आम बैठक में होने वाले हैं। हालांकि, रविवार के अंत तक नए नामांकन दाखिल नहीं किए जाते, तो दिल्ली बैठक में चर्चा किए गए नामों के अंतिम होने की उम्मीद है।

माना जा रहा है कि सैकिया, जिन्होंने इसी जनवरी में जय की जगह BCCI सचिव का पद संभाला था, इस पद पर बने रहेंगे, जबकि शुक्ला भी उपाध्यक्ष पद पर बने रहेंगे। छत्तीसगढ़ राज्य क्रिकेट संघ के प्रभतेज भाटिया, जिन्हें जनवरी में कोषाध्यक्ष चुना

गया था, गोवा क्रिकेट संघ के पूर्व सचिव रोहन देसाई की जगह संयुक्त सचिव का पद संभालेंगे। सौराष्ट्र के पूर्व कप्तान जयदेव शाह को BCCI की शीर्ष परिषद में शामिल किए जाने की संभावना है और वह मिजोरम के खैरुल जमाल मजूमदार की जगह लेंगे, जिनके आईपीएल गवर्निंग काउंसिल में शामिल होने की संभावना है।

सुपर-4 में हार के बावजूद श्रीलंका कप्तान ने की टीम की सराहना, कहा- ड्रेसिंग रूम इस बात से खुश

स्पोर्ट्स डेस्क। श्रीलंका के कप्तान चरित असलांका ने दुबई इंटरनेशनल स्टेडियम में एशिया कप 2025 के सुपर 4 के अपने पहले मैच में बांग्लादेश से चार विकेट से मिली हार के बावजूद अपनी टीम के प्रदर्शन की जमकर तारीफ की। श्रीलंका ने ग्रुप चरण में अफगानिस्तान के कड़े मुकाबले में जीत हासिल कर सुपर 4 में अपनी जगह पक्की की थी। बांग्लादेश के खिलाफ पहले बल्लेबाजी करते हुए श्रीलंका ने दासुन शनाका की दमदार पारी की बदौलत 20 ओवरों में 168 रन बनाए। मैच के बाद बोलते हुए असलांका ने स्वीकार किया कि टीम ने अच्छा संघर्ष दिखाया लेकिन वे अपनी पारी को और बेहतर तरीके से समाप्त कर सकते थे। असलांका ने मैच के बाद प्रेस कॉन्फ्रेंस में कहा, 'यह एक शानदार मैच था। हमने अंत तक संयम बनाए रखा लेकिन यह काफी नहीं था। अपनी बल्लेबाजी से थोड़ा खुश हूं, हम आखिरी 2 ओवरों में बेहतर प्रदर्शन कर सकते थे। हम 10-15 रन कम बना पाए। दासुन शनाका ने पांचवें नंबर पर बल्लेबाजी करते हुए वाकई अच्छी बल्लेबाजी की। उन्होंने एक लंबा छक्का लगाया और ड्रेसिंग रूम लगभग 170 के स्कोर से खुश था।'

श्रीलंका बनाम बांग्लादेश मैच रिपोर्ट

सैफ हसन और तौहीद हृदॉय के शानदार अर्धशतकों और अपने गेंदबाजों की धारदार गेंदबाजी की बदौलत बांग्लादेश ने एशिया कप सुपर-4 मैच में श्रीलंका को चार विकेट से हरा दिया। श्रीलंका ने दासुन शनाका के 37 गेंदों में 64 रनों की बदौलत सात विकेट पर 168 रन बनाए, लेकिन बांग्लादेश ने सैफ (45 गेंदों में 61 रन) और हृदॉय (37 गेंदों में 58 रन) की शानदार पारियों की बदौलत 19.5 ओवर में 6 विकेट पर 169 रन बनाकर मैच जीत लिया।

वैभव सूर्यवंशी ने फिर दिखाई अपनी पावर-हिटिंग, ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ लगाए चौके-छक्के

स्पोर्ट्स डेस्क (एजेंसी)। ऑस्ट्रेलिया अंडर-19 के खिलाफ पहले यूथ वनडे में भारत के 225 रनों के लक्ष्य का पीछा करते हुए 14 वर्षीय सलामी बल्लेबाज वैभव सूर्यवंशी ने एक बार फिर अपनी पावर-हिटिंग दिखाते हुए सहजता से चौके जड़ने का जलवा दिखाया। ओपनिंग करने उतरे सूर्यवंशी ने शुरुआत से ही ऑस्ट्रेलियाई गेंदबाजी आक्रमण पर हमला बोला औरचौके जड़े। उन्होंने सिर्फ 22 गेंदों पर 7 चौकों और एक गगनचुंबी छक्के की मदद से 38 रनों की पारी खेली। इस किशोर खिलाड़ी ने हेडन शिलर और चार्ल्स लैचमंड का डटकर सामना किया, जो शुरुआती ओवरों में दबाव में थे।

भारत को जीत के लिए 225 रनों की जरूरत थी, और सूर्यवंशी और कप्तान आयुष म्हात्रे ने शानदार शुरुआत दिलाई। सूर्यवंशी के आउट होने के बाद म्हात्रे (6) और विहान मल्होत्रा (9) सस्ते में आउट हो गए, यानी भारत ने 100 रन का आंकड़ा पार करने से पहले ही 3 विकेट गंवा दिए। ऑस्ट्रेलिया की पारी जॉन जेम्स की नाबाद 77 रनों की पारी के दम पर आगे बढ़ी, जिन्होंने शुरुआती विकेट गिरने के बाद निचले क्रम को संभाले रखा। हेनिल पटेल (3/38) और किशन कुमार (2/59) ने भारत की ओर से गेंदबाजी का नेतृत्व किया जबकि कनिष्क चौहान ने भी दो विकेट लिए।

मेजबान टीम 50 ओवर में 9 विकेट पर 225 रन ही बना सकी। सूर्यवंशी गेंदबाजों पर हावी होने की अपनी क्षमता से एक बार फिर मुकाबले में आकर्षण का केंद्र बन गए। उनकी पारी के वायरल वीडियो सोशल मीडिया पर तेजी से फैल गए और प्रशंसक क्रीज पर इस युवा खिलाड़ी के कौशल का जश्न मना रहे थे। भारत का लक्ष्य अब मध्य क्रम के बल्लेबाज़ों पर है, लेकिन शुरुआती बढ़त सूर्यवंशी के नाम रही।

यशस्वी जायसवाल ने एशिया कप स्क्वॉड से नजरअंदाज किए जाने पर तोड़ी चुप्पी

दुबई (एजेंसी)। भारतीय टीम का एशिया कप 2025 में प्रदर्शन शानदार रहा है। टीम ने लीग स्टेज के सभी मुकाबले जीतकर सुपर-4 में प्रवेश किया है, जहां उसका पहला मुकाबला पड़ोसी देश पाकिस्तान से होगा। भारतीय स्क्वॉड में अधिकांश खिलाड़ियों ने बेहतरीन प्रदर्शन किया, लेकिन कुछ खिलाड़ियों को मेन स्क्वॉड में जगह नहीं मिली, जिनमें यशस्वी जायसवाल का नाम भी शामिल है। इस बीच, जायसवाल ने एशिया कप स्क्वॉड से नजरअंदाज किए जाने पर अपनी चुप्पी तोड़ी और कहा कि खिलाड़ियों का चयन चयनकर्ताओं के हाथ में होता है। उन्होंने स्पष्ट किया कि वह सिर्फ अपनी कड़ी मेहनत और प्रदर्शन पर ध्यान दे रहे हैं।

यशस्वी ने टेस्ट और आईपीएल में शानदार प्रदर्शन किया है, लेकिन टी20 जैसे छोटे प्रारूप में भारतीय टीम में जगह बनाने के लिए उन्हें अभी भी संघर्ष करना पड़ रहा है। एशिया कप के लिए टीम चयन के समय यशस्वी का नाम शामिल न होने से कई सवाल उठे थे। गौतम गंभीर के मुख्य कोच बनने और विराट कोहली तथा रोहित शर्मा के वरिष्ठ खिलाड़ियों के जाने के बाद टीम के ऊपरी क्रम में अभिषेक शर्मा और संजू सैमसन ने जिम्मेदारी संभाली। इसके अलावा, उपकप्तान के रूप में शुभमन गिल की एंट्री के बाद जायसवाल को भारतीय टीम में आने के लिए और लंबा इंतजार करना पड़ सकता है।

यशस्वी ने कहा, ये सब चयनकर्ताओं के हाथ में होता है। वे इसे टीम संयोजन के नजरिए से देखते हैं। मैं मेहनत जारी रखूंगा और मुझे पता है मेरा समय आएगा। तब तक, मैं खुद पर काम करता रहूंगा और बेहतर करता रहूंगा। 23 टी20 मैचों में यशस्वी ने 723 रन बनाए हैं, जिसमें उनका स्ट्राइक रेट 164.31 का रहा। इस दौरान उन्होंने एक शतक और पांच अर्धशतक लगाए हैं। उनकी बल्लेबाजी की निरंतरता भारतीय टीम के लिए भविष्य में बड़ी ताकत साबित हो सकती है।

भारत ने शुक्रवार को ओमान को 21 रन से हराकर एशिया कप के ग्रुप लीग चरण का अंत जीत की हैट्रिक के साथ किया। अब भारतीय टीम 48 घंटे से भी कम समय में दुबई में सुपर 4 मुकाबले में पाकिस्तान से भिड़ेगी। इस मुकाबले में टीम का पूरा ध्यान जीत पर होगा, जबकि युवा खिलाड़ियों जैसे यशस्वी को अपने खेल को और निखारने का मौका मिलने का इंतजार रहेगा। यशस्वी की प्रतिक्रिया से साफ है कि वह निराश नहीं हुए हैं और अपने समय के इंतजार में मेहनत जारी रखेंगे, जिससे भविष्य में भारतीय टीम में उनकी वापसी निश्चित ही देखने को मिल सकती है।

संजू सैमसन ने सूर्यकुमार यादव और गौतम गंभीर की टीम संस्कृति पर की बात, बताया कैसा है माहौल

नई दिल्ली। भारत के पसंदीदा विकेटकीपर-बल्लेबाज संजू सैमसन ने टी20 अंतरराष्ट्रीय टीम में समानता और स्वतंत्रता का माहौल बनाने के लिए कप्तान सूर्यकुमार यादव और मुख्य कोच गौतम गंभीर के नेतृत्व को श्रेय दिया। बीसीसीआई द्वारा साझा किए गए एक वीडियो में सैमसन ने बताया कि कैसे टीम संस्कृति ने

खिलाड़ियों को खुद को और अधिक स्वतंत्र रूप से व्यक्त करने में मदद की है। सैमसन ने कहा, 'मैं अपने टीम लीडर सूर्यकुमार और गौतम भाई (गौतम गंभीर) को इस बात का बहुत श्रेय देना चाहता हूं कि वे इस माहौल को कैसे बनाए रखते हैं। यह बहुत ही शांत वातावरण है। यह एक समान वातावरण है। सभी के साथ समान व्यवहार किया जाता है और टीम में सभी को समान महत्व दिया जाता है। मुझे लगता है कि इससे आपका सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन सामने आता है और इस प्रारूप में यही जरूरी है। पूरी तरह स्वतंत्र और जिम्मेदार होना। मुझे लगता है कि आप टीम को, टीम के साथी को आजादी कैसे देते हैं।' ओमान के खिलाफ सैमसन को बल्लेबाजी क्रम में तीसरे नंबर पर भेजा गया, जहां उन्होंने संयमित अर्धशतक लगाकर भारत की पारी को संभाला। वह क्रीज पर समय बिताने के मौके के लिए आभारी थे। उन्होंने कहा, 'सच कहूं तो, मुझे लगता है कि क्रीज पर कुछ समय बिताने के लिए मैं वाकई आभारी हूं। मुझे लगता है कि मैं घर पर कुछ मैच खेल रहा हूं, लेकिन देश के लिए, एशिया कप के लिए, क्रीज पर कुछ समय बिताने से मुझे वाकई मदद मिली।'

अश्विन ने मैच रैफरी को निशाना बनाने के लिए पीसीबी को आड़े हाथों लिया

मुम्बई। भारतीय क्रिकेट टीम के दिग्गज स्पिनर रहे आर अश्विन ने मैच रैफरी एंडी पाइक्रॉफ्ट को हटाने की मांग करने के लिए पाकिस्तान क्रिकेट बोर्ड (पीसीबी) की कड़ी आलोचना की है। पीसीबी ने मैच रेफरी एंडी पाइक्रॉफ्ट पर भारतीय टीम का साथ देने को आरोप लगाया था। भारतीय खिलाड़ियों के हाथ नहीं मिलाने के लिए पाइक्रॉफ्ट को जिम्मेदार बताने पर भी अश्विन ने हैरानी जतायी है। इसके अलावा यूएई मैच से पहले पाइक्रॉफ्ट की पाकिस्तानी कप्तान सलमान आगा से मुलाकात को जिस प्रकार से रिकार्ड किया गया उसे भी अश्विन ने गलत बताया है। अश्विन ने कहा कि पीबीसी बेकार की नाटकबाजी कर रही है। अश्विन ने कहा, पाइक्रॉफ्ट ने सबको ऐसा बेकार का ड्रामा देखने से बचा लिया।

पीठ में दर्द की समस्या से जूझ रहे पैट कमिंस एशेज में सभी टेस्ट मैंच खेलने की उम्मीद

सिडनी। पीठ में दर्द की समस्या से जूझ रहे ऑस्ट्रेलिया के अनुभवी तेज गेंदबाज पैट कमिंस एशेज के सभी पांच टेस्ट मैचों में खेलना चाहते है। कमिंस ने एक कार्यक्रम के दौरान यह बात कही। कमिंस ने स्वीकार किया कि एशेज से पहले वे पूरी तरह से प्रतीक्षा करने और देखने की स्थिति है। कमिंस ने कहा, लक्ष्य पांच टेस्ट मैच है। हर गर्मियों में आप पांच टेस्ट मैच खेलने का लक्ष्य रखते हैं। यह मैच थोड़ा अलग हो सकता है क्योंकि आप बाकी मैचों से थोड़े अलग अंदाज में आ रहे हैं। लेकिन शुरुआती लक्ष्य पांच विकेट लेना है। एक बार जब हम करीब पहुंच जाएंगे, तब हम शायद अधिक यथार्थवादी परिस्थितियों पर बात करूंगा। सच कहूं तब

यह कहना अभी बहुत दूर की बात है, लेकिन फिलहाल हमारा लक्ष्य इन सबके लिए तैयार रहने का प्रयास करना है। कमिंस ने इशारा किया कि पहले तीन टेस्ट मैचों के कार्यक्रम में आठ दिनों का स्पष्ट अंतराल रखा गया था, इसलिए बैकअप लेना कोई समस्या नहीं हो सकती। लेकिन उन्होंने स्वीकार किया कि यह संभावना नहीं है कि ऑस्ट्रेलिया पूरी गर्मियों में एक अपरिवर्तित आक्रमण के साथ टिकेगा। उन्होंने कहा, ज्यादातर सालों में, कम से कम एक गेंदबाज तब खेल ही जाता है। जॉश हेजलवुड पिछले साल आखिरी हाफ में नहीं खेल पाए थे। जाहिर है, परिस्थितियां बदलती हैं, लेकिन मुझे लगता है कि आपको बस एक नए गेंदबाज की जरूरत है, जो आकर टेस्ट मैच में बिना पलक झपकाए 40 ओवर गेंदबाजी कर सके। उल्लेखनीय है कि इस हफ्ते ऑस्ट्रेलियाई कोच एंड्रयू मैकडॉनाल्ड ने कहा कि कमिंस इस सीरीज में 'हिस्सा लेने वाले है। इस टेस्ट सीरीज का पहला मैच 21 नवंबर से पर्थ में इंग्लैंड के खिलाफ शुरू होगा। मैकडॉनाल्ड ने कहा कि कमिंस एशेज में' महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगे। लेकिन उन्होंने संकेत दिया कि 5 टेस्ट मैचों की योजना कभी भी तेज गेंदबाजी के लिए नहीं थी। हालांकि कमिंस अभी भी आशान्वित हैं। पैट कमिंस पांचों एशेज टेस्ट खेलने का लक्ष्य बना रहे हैं, लेकिन ऑस्ट्रेलिया के अनुभवी तेज गेंदबाज को श्रृंखला के करीब आने पर ही पता चलेगा कि वह एक व्यावहारिक विकल्प है या नहीं। हालांकि कमिंस इस लेकर आशांवित है।

सात्विक और चिराग चीन मास्टर्स के फाइनल में कड़े मुकाबले में हारे

शेनझेन (एजेंसी)। सात्विकसाईराज रंकीरेड्डी और चिराग शेट्टी की भारत की शीर्ष पुरुष युगल जोड़ी को एक बार फिर दिल तोड़ने वाली हार का सामना करना पड़ा जब वे रविवार को यहां चीन मास्टर्स सुपर 750 बैडमिंटन टूर्नामेंट के फाइनल में किम वोन हो और सियो सेयुंग जेइ की कोरिया की दुनिया की नंबर एक जोड़ी के खिलाफ सीधे गेम में हार गए।

एशियाई खेलों की चैंपियन भारतीय जोड़ी को फाइनल में अपने खिताबी सूखे को खत्म करने की उम्मीद थी लेकिन पहले गेम में 14-7 की मजबूत बढ़त बनाने बावजूद उन्हें मुकाबले में 45 मिनट में सीधे गेम में 19-21, 15-21 से हार का सामना करना पड़ा। सात्विक और चिराग की जोड़ी लगातार दूसरे फाइनल में लय में दिखी। विश्व चैंपियनशिप में दूसरा कांस्य पदक जीतने और हांगकांग ओपन में उपविजेता रहने के बाद पूरे हफ्ते भारतीय जोड़ी ने एक भी गेम नहीं गंवाया। लेकिन उन्हें मजबूत स्थिति में होने के बावजूद पहला गेम गवाने का मलाल जरूर रहेगा।

किम और सियो अन्य जोड़ीदारों के साथ प्रयोग करने के बाद मौजूद सत्र में फिर से साथ आए हैं। यह जोड़ी 2025 के अपने नौवें फाइनल में खेल रही थी और पहले ही छह खिताब जीत चुकी थी जिसमें पेरिस में विश्व चैंपियनशिप का स्वर्ण और ऑल इंग्लैंड तथा इंडोनेशिया ओपन सुपर 1000 का खिताब भी शामिल है। इस मुकाबले को दुनिया के सर्वश्रेष्ठ आक्रमण और सर्वश्रेष्ठ डिफेंस के बीच की लड़ाई माना जा रहा था और किम तथा सियो ने बेहतर धैर्य और तकनीकी कौशल का प्रदर्शन करते हुए जीत हासिल की।

कोरियाई टीम ने अच्छी शुरुआत करते हुए पहले गेम में 3-0 की बढ़त बनाई लेकिन भारतीय जोडी ने लगातार दमदार स्मैश के साथ वापसी की और स्कोर 6-6 कर दिया। चिराग के नेट पर सटीक शॉट ने भारतीय जोड़ी को ब्रेक तक 11-7 की बढ़त दिला दी और जल्द ही उन्होंने इसे 14-8 कर दिया। हालांकि कुछ गलतियां हुईं। एक वीडियो चैलेंज के असफल होने से सात्विक और चिराग की लय टूटी और कोरियाई जोड़ी ने अगले नौ में से आठ अंक जीतकर स्कोर 15-15 से बराबर कर दिया।

नेट पर चिराग की गलती ने कोरियाई जोड़ी को 19-17 की बढ़त दिला दी लेकिन भारतीय जोड़ी ने वापसी करते हुए सियो की गलती से स्कोर 19-19 कर दिया। बाएं हाथ के किम ने एक तेज विनर शॉट के साथ गेम प्वाइंट हासिल किया और चिराग ने इसके बाद शॉट बाहर मार दिया जिससे कोरियाई टीम ने पहला गेम जीत लिया। दूसरे गेम में भारतीय जोड़ी ने 3-2 की बढ़त बनाई और फिर स्कोर 8-6 कर दिया। कोरियाई जोड़ी ने 9-9 पर बराबरी हासिल की और ब्रेक तक एक अंक की बढ़त बनाने में सफल रही।

खेल फिर से शुरू होने पर सियो ने नेट पर सर्विस मार दी लेकिन अगले ही प्वाइंट पर सात्विक की कमजोर सर्विस पर अंक जुटाया। चिराग के एक बार फिर शॉट बाहर मारने से कोरियाई जोड़ी ने 15-11 के स्कोर पर चार अंक की बढ़त हासिल की। सियो ने अगले ही प्वाइंट पर फ्लैट शॉट लगाया लेकिन चिराग फिर से चूक गए और कोरियाई टीम 17-14 से आगे हो गई। एक बेहतरीन ड्रॉप शॉट ने कोरियाई टीम की बढ़त को 18-15 कर दिया। चिराग के दो बार शॉट बाहर मारने से कोरियाई जोड़ी ने पांच मैच प्वाइंट हासिल किए जिसके बाद सात्विक ने बाहर शॉट मारकर खिताब कोरियाई टीम की झोली में डाल दिया।

हमें फाइनल में पहुंचने का पूरा भरोसा : बांग्लादेशी सलामी बल्लेबाज सैफ हसन

स्पोर्ट्स डेस्क। बांग्लादेश ने टी20 एशिया कप 2025 के सुपर-4 मुकाबले में श्रीलंका को एक गेंद शेष रहते चार विकेट से हरा दिया। 169 रनों के लक्ष्य का पीछा करते हुए, युवा सलामी बल्लेबाज सैफ हसन ने 45 गेंदों में 61 रनों की मैच जिताऊ पारी खेली। बांग्लादेश ने श्रीलंकाई टीम को चौंका दिया, हसन ने कहा कि टीम यूएई यह मानकर पहुंची थी कि वे फाइनल में पहुंचेंगे। मैच के बाद प्रेस कॉन्फ्रेंस में सैफ ने कहा, 'हां, बिल्कुल, हमें फाइनल में पहुंचने का पूरा भरोसा है, यहा आने से पहले, सभी को यकीन था कि हम फाइनल खेलेंगे।' 'हम एक कदम आगे हैं और अभी हमारे लिए दो मैच और बाकी हैं, और हमारा अगला ध्यान सिर्फ अगले मैच पर है।' 'जरूर, सपने देखने चाहिए और बड़े सपने देखने चाहिए, लेकिन हमें कदम दर कदम आगे बढ़ना चाहिए। हमारा अगला ध्यान पूरी तरह से भारत के खिलाफ मैच पर होगा और उसके बाद के मैच का फैसला बाद में होगा।' मैच में पहले ओवर में विकेट गिरने के बाद, हसन ने नुवान तुषारा का सामना किया। उन्होंने पावरप्ले के ओवरों में कुल तीन छक्के लगाए। कप्तान लिटन दास ने उनका अच्छा साथ दिया। 6 ओवर के बाद बांग्लादेश का स्कोर 59/1 था। हसन ने खुलासा किया कि उनके पास कोई खास योजना नहीं थी, लेकिन उन्होंने मैदान पर पाबंदी के दौरान जवाबी हमला करने का फैसला किया। बांग्लादेश का अगला मैच 24 सितंबर को दुबई में भारत के खिलाफ होगा। सुपर-4 में वे एकमात्र टीम हैं जो लगातार दो दिन मैच खेलेगी। उनका आखिरी सुपर-4 मैच 25 सितंबर को पाकिस्तान के खिलाफ होगा।

जतिंदर सिंह ने भारतीय टीम से एनसीए में प्रशिक्षण की गुहार लगाई

अबु धाबी (एजेंसी)। जतिंदर सिंह की कप्तानी में ओमान टीम को एशिया कप 2025 में भारत के खिलाफ 21 रनों से हार का सामना करना पड़ा। हालांकि, हार के बावजूद ओमान के बल्लेबाजों ने दर्शकों का दिल जीत लिया। 189 रनों के लक्ष्य का पीछा करते हुए ओमान ने 20 ओवर में चार विकेट खोकर 167 रन बनाए। आमिर कलीम ने 64 रन, हम्माद मिर्जा ने 51 और कप्तान जतिंदर ने 32 रन का योगदान दिया। मैच के बाद जतिंदर ने भारतीय क्रिकेट बोर्ड (बीसीसीआई) से गुहार लगाई कि उनकी टीम को नेशनल क्रिकेट एकेडमी (एनसीए) में प्रशिक्षण की अनुमति दी जाए। उन्होंने कहा कि इससे खिलाड़ियों की तकनीक, मानसिक तैयारी और फिटनेस में सुधार होगा और एसोसिएट देशों और टेस्ट खेलने वाले देशों के बीच की खाई पाटने में मदद मिलेगी।

जतिंदर ने मैच के बाद प्रेस कॉन्फ्रेंस में कहा, मुझे लगता है कि अगर हम भारत को अपना दूसरा घर बना सकें, एनसीए में ट्रेनिंग ले सकें, टी20 मैच खेल सकें और क्लब तथा रणजी टीमों के साथ अभ्यास कर सकें, तो हमारे लिए यह बहुत फायदेमंद होगा। हम एक एसोसिएट नेशन हैं और हमें टेस्ट खेलने वाले देशों के साथ खेलने के मौके नहीं मिलते। ओमान की टीम पहली बार एशिया कप में खेली थी और ग्रुप ए के सभी मैच हारने के बावजूद जतिंदर ने अपने खिलाड़ियों की जमकर तारीफ की। उन्होंने कहा कि उन्हें खिलाड़ियों पर गर्व है और

जिस तरह उन्होंने हालात का सामना किया, वह काबिले तारीफ है।

भारतीय धरती पर तेज गेंदबाजों से सीरीज पलटने की उम्मीद है सैमी को

अहमदाबाद। वेस्टइंडीज क्रिकेट टीम के मुख्य कोच डैरेन सैमी ने भारतीय सरजमीं पर अपनी टीम के तेज गेंदबाजों की ताकत पर भरोसा जताया है। उन्होंने कहा कि उनकी टीम का तेज गेंदबाजी आक्रमण इतना मजबूत और विविधता से भरा है कि किसी भी परिस्थिति में मैच का रुख पलट सकता है। भारत और वेस्टइंडीज के बीच दो टेस्ट मैचों की सीरीज का पहला मुकाबला 2 अक्टूबर से अहमदाबाद में और दूसरा 10 अक्टूबर को दिल्ली में खेला जाएगा। मीडिया से बातचीत में सैमी ने कहा, टीम में चार अलग-अलग तरह के तेज गेंदबाज हैं, जिनकी अपनी खासियतें हैं और यही हमारी असली ताकत है। शमर जोसेफ, जेडन सील्स, अल्जारी जोसेफ और एंडरसन फिलिप

सभी विभिन्न परिस्थितियों में विकेट निकालने में सक्षम हैं। इसके साथ ऑलराउंडर जस्टिन ग्रीव्स भी विकल्प के रूप में मौजूद हैं। उन्होंने विशेष रूप से शमर को कुशल, जेडन सील्स को गेंद को दोनों तरफ स्विंग कराने में माहिर और अल्जारी जोसेफ को अपने कद, गति और उछाल के कारण खतरनाक बताया। सैमी ने उम्मीद जताई कि उनका तेज गेंदबाजी संयोजन भारतीय हालात में भी बल्लेबाजों के लिए चुनौतीपूर्ण साबित होगा और टेस्ट मैच में 20 विकेट लेने की क्षमता रखता है। कोच ने न्यूजीलैंड की भारत में पिछली साल की सफलता से भी प्रेरणा लेने की बात कही। उन्होंने कहा, पिछले साल कीवी टीम ने भारत में 3-0 से जीतकर इतिहास रचा। हमें उनसे सीखना चाहिए कि किन परिस्थितियों में उन्होंने कौन-सी रणनीति अपनाई। उम्मीद है कि हमारे खिलाड़ी भी परिस्थितियों को समझकर प्रदर्शन करेंगे। भारतीय हालात में पारंपरिक तौर पर स्पिन गेंदबाजों का दबदबा रहता है, लेकिन सैमी का मानना है कि उनकी तेज गेंदबाजी यूनिट इस बार असर दिखाएगी। उन्होंने कहा, टीम का यह संयोजन किसी भी विपक्षी बल्लेबाजी क्रम को चुनौती देने में सक्षम है। अब यह देखना बाकी है कि अहमदाबाद और दिल्ली में इंडीज के तेज गेंदबाज सैमी की उम्मीदों पर कितना खरे उतरते हैं।

इरफान चाहते हैं इस गेंदबाज को टीम में शामिल करना, कहा- भारत को दूसरे तेज गेंदबाज की जरूरत

नई दिल्ली (एजेंसी)। पूर्व भारतीय क्रिकेटर इरफान पठान का मानना है कि एशिया कप में पाकिस्तान के खिलाफ होने वाले मुकाबले में भारतीय टीम को अर्शदीप सिंह की जरूरत पड़ सकती है। उन्होंने बताया कि जसप्रीत बुमराह के अलावा अर्शदीप ही एकमात्र भारतीय गेंदबाज हैं जो लगातार यॉर्कर फेंक सकते हैं और विरोधी बल्लेबाजों के लिए रन बनाना मुश्किल बना सकते हैं।

पठान ने सोनी स्पोर्ट्स पर कहा, 'मैं अपनी बात पर कायम रहूंगा, जो मैंने एशिया कप शुरू होने से पहले कही थी। मैं अर्शदीप को बुमराह के साथ खेलते देखना चाहूंगा क्योंकि ऐसी स्थिति आ सकती है जहां आपको दूसरे तेज गेंदबाज की जरूरत पड़ सकती है।'

उन्होंने आगे कहा, 'जब गेंद गीली हो जाती है और आप दबाव में होते हैं तो क्या हार्दिक की ताकत छह यॉर्कर फेंकना है, या शिवम दुबे लगातार यॉर्कर फेंक सकते हैं।'

पठान ने यह भी स्वीकार किया कि भारतीय टीम वर्तमान में जीत की लय में है, इसलिए टीम प्रबंधन अंतिम एकादश में बदलाव नहीं करेगा और उसी गेंदबाजी संयोजन के साथ आगे बढ़ेगा जो उन्होंने टूर्नामेंट में पाकिस्तान के खिलाफ अपने पिछले मैच में इस्तेमाल किया था।

अर्शदीप ओमान के खिलाफ मैच में खेले

अर्शदीप को एशिया कप के पहले दो मैचों में भारत की प्लेइंग इलेवन में जगह नहीं मिली थी, लेकिन ओमान के खिलाफ टीम के अंतिम ग्रुप चरण के मैच में वह शामिल थे। बाएं हाथ के इस तेज गेंदबाज ने अपने 4 ओवर के स्पेल में 37 रन देकर 1 विकेट हासिल किया और टी20 के इस प्रारूप में 100 विकेट लेने वाले पहले भारतीय गेंदबाज बने।

चुनाव आयोग एक्शन में, बीजेपी और डीएमके के सहयोगी दलों समेत 42 तमिल पार्टियों के रजिस्ट्रेशन किए रद्द

चेन्नई (एजेंसी)। चुनाव आयोग निष्क्रिय राजनीतिक दलों के खिलाफ सख्त हो गया हैं। आयोग ने अगले साल होने वाले तमिलनाडु विधानसभा चुनाव से पहले राज्य की 42 पार्टियों का रजिस्ट्रेनश रद्द कर दिया है, इनमें सत्ताधारी डीएमके और बीजेपी के सहयोगी दल भी शामिल हैं। आयोग ने लगातार 6 साल तक चुनाव न लड़ने पर देशभर में 474 राजनीतिक दलों को सूची से हटा दिया है। चुनाव आयोग के इस सफाई अभियान की जद में अकेले तमिलनाडु की 42 पार्टियां आई हैं।

तमिलनाडु में पिछले तीन वित्तीय सालों (2021-22, 2022-23, 2023-24) में अपना सालाना ऑडिट अकाउंट जमा नहीं करने वाले 39 और राजनीतिक दलों की पहचान की गई है। ये ऐसे दल हैं जिन्होंने चुनाव तो लड़ा, लेकिन चुनाव खर्च की रिपोर्ट दाखिल नहीं की। राजनीतिक दलों के रजिस्ट्रेशन के लिए बनाई गई गाइडलाइन में कहा है कि अगर कोई पार्टी लगातार छह साल तक चुनाव नहीं लड़ती है, तो उसे पंजीकृत दलों की सूची से बाहर कर दिया जाएगा। इस नियम के तहत 42 तमिल पार्टियों पर एक्शन लिया गया है।

आयोग ने जिन तमिल पार्टियों पर एक्शन लिया है उनमें, पापनासम के विधायक एमएच जवाहिरुल्ला के नेतृत्व में मनिथानेया मक्कल काची (एमएमके), थिरुचेंगोडे के विधायक ईआर ईश्वरन के नेतृत्व में कोंगुनाडु मक्कल देसिया काची (केएमडीके) और जॉन पांडियन के नेतृत्व में तमिलागा मक्कल मुनेत्र कड़गम शामिल हैं। एमएमके, जिसके दो विधायक हैं और केएमडीके, जिसका एक विधायक और एक सांसद है, उन्होंने पिछला विधानसभा और लोकसभा चुनाव डीएमके के टिकट पर लड़ा था। चुनाव आयोग का यह फैसला इसलिए भी अहम है क्योंकि एमएमके और केएमडीके दोनों ही सत्तारूढ़ डीएमके की सहयोगी हैं।

बीजेपी की सहयोगी जॉन पांडियन की टीएमएमके ने पिछला लोकसभा चुनाव तेनकासी में कमल के निशान पर लड़ा था, लेकिन उन्हें हार का सामना करना पड़ा था, जबकि तमीमुन अंसारी की एमजेके, जिसने 2016 का विधानसभा चुनाव एआईएडीएमके के चुनाव चिन्ह पर लड़ा था, इसके बाद के पार्टी चुनावों से दूर रही। इस तरह सूची से हटाई गई अन्य पार्टियों में थमिमुन अंसारी के नेतृत्व वाली मणिथानेया जननायगा काची शामिल है, जिसने नागपट्टिनम सीट से चुनाव लड़ा था। एनआर धनपालन के नेतृत्व वाली पेरुंथलाइवर मक्कल काची, जिसने पेरम्बूर सीट से चुनाव लड़ा, लेकिन सफलता नहीं मिली, दोनों ही 2016 और 2021 के विधानसभा चुनावों में एआईएडीएमके के टिकट पर चुनाव लड़े थे।

मीडिया रिपोर्ट के मुताबिक आयोग का कहना है कि चुनावी प्रणाली को साफ-सुथरा बनाने की व्यापक और सतत रणनीति के तहत पिछले छह साल में चुनाव नहीं लड़ने और बाकी मानदंडों का उल्लंघन करने की वजह से कुल 474 पंजीकृत लेकिन गैर-मान्यता प्राप्त राजनीतिक दलों को सूची से हटा दिया गया है। आयोग की तरफ से राजनीतिक पार्टियों की लिस्ट को ज्यादा पादर्शी बनाने के लिए बड़े पैमाने पर यह कैपेन चलाया जा रहा है। पिछले दो महीने में कुल 808 राजनीतिक दलों को सूची से बाहर किया जा चुका है। साथ ही आयोग ने 359 अन्य गैर-मान्यता प्राप्त सियासी दलों को सूची से हटाने की प्रक्रिया भी शुरू कर दी है। अगर ये सियासी दल जरूरी दस्तावेज और शर्तें पूरी नहीं करते हैं तो जल्द ही आयोग इन पार्टियों को भी अपनी सूची से हटा सकता है, जिससे बाद पंजीकृत पार्टियों की लिस्ट से हटाए जाने वाले दलों की कुल संख्या 833 हो जाएगी।

चुनाव आयोग के जन प्रतिनिधित्व अधिनियम के तहत राष्ट्रीय और राज्य स्तरीय रजिस्टर्ड गैर-मान्यता प्राप्त सियासी दलों को आयोग में रजिस्टर्ड किया जाता है। रजिस्ट्रेशन के बाद इन पार्टियों को चुनाव चिन्ह, टैक्स छूट जैसे विशेष अधिकार हासिल होते हैं, लेकिन नियमों के मुताबिक अगर कोई राजनीतिक दल लगातार छह साल तक कोई चुनाव नहीं लड़ता है, तो उसे रजिस्टर्ड पार्टियों की सूची से हटा दिया जाता है।

लालू की बेटी रोहिणी ने बनाई पार्टी से दूरी, आरजेडी नेताओं को किया अनफॉलो

- माता-पिता और भाई तेजस्वी के साथ लगी फोटो हटाकर अपनी फोटो लगाई

नई दिल्ली (एजेंसी)। लालू यादव की बेटी और राजद नेता रोहिणी आचार्य अब पार्टी से दूरी बनाती नजर आ रही हैं। संजय यादव को लेकर किए पोस्ट के बाद रोहिणी ने काफी समय तक अपने सोशल मीडिया अकाउंट को निजी करके रखा था। वहीं अब उनका अकाउंट सार्वजनिक हो गया है तो उसमें कई सारे बदलाव हुए हैं। रोहिणी ने आरजेडी के तमाम नेताओं को अनफॉलो कर दिया है। इसके अलावा उन्होंने लालू, राबड़ी और तेजस्वी के साथ लगी फोटो भी हटा दी है। उन्होंने अब अपनी अकेले फोटो लगाई है। बता दें संजय यादव को लेकर सोशल मीडिया पर पोस्ट किए जाने के बाद विवाद काफी बढ़ गया है। रोहिणी ने पोस्ट को डिलीट कर दिया है। रोहिणी ने सोशल मीडिया पर भी परिवार और पार्टी से दूरी बना ली है। इसके अलावा रोहिणी ने अपने एक्स अकाउंट से आरजेडी समेत सभी 58 राजनेताओं को अनफॉलो कर दिया है। पहले वह 61 प्रोफाइल को फॉलो करती थीं, लेकिन अब यह सिर्फ 3 रह गई है। ये तीनों लोग भी राजनीति से हटकर हैं। बता दें इससे पहले रोहिणी ने शनिवार को दिन भर सोशल मीडिया अकाउंट को प्राइवेट भी कर दिया था। हालांकि शाम तक उन्होंने अकाउंट फिर खोल दिया। बता दें रोहिणी से जुड़ा हालिया विवाद एक्स पर की गई एक पोस्ट से शुरू हुआ। 18 सितंबर को रोहिणी ने एक पोस्ट की थी, जो आरजेडी के आंतरिक कलह को उजागर कर रही थी। यह पोस्ट मुख्य रूप से तेजस्वी यादव के करीबी राज्यसभा सांसद संजय यादव पर निशाना साधते हुए की गई थी, जिन्हें रोहिणी ने सबस्टैंडर्ड व्यक्ति बताया था। हालांकि रोहिणी ने बाद में यह पोस्ट हटा दी थी।

मुख्तार अंसारी के छोटे बेटे उमर की पुलिस ने खोली हिस्ट्रीशीट, बढ़ेंगी मुश्किलें

गाजीपुर (एजेंसी)। नेता मुख्तार अंसारी के छोटे बेटे उमर अंसारी की मुश्किलें बढ़ सकती हैं, दरअसल मुहम्मदाबाद पुलिस ने उनकी हिस्ट्रीशीट खोली है। उमर को पहले लखनऊ आवास से फर्जी हस्ताक्षर मामले में गिरफ्तार किया गया था, जिसमें फरार मुख्तार अंसारी की पत्नी आफ्सा अंसारी के नाम से फर्जी दस्तावेज तैयार किए गए थे। यहां बताते चलें कि दो दिन पहले ही इलाहाबाद हाईकोर्ट ने उमर अंसारी को जमानत दी थी, लेकिन जेल से बाहर आने से पहले पुलिस ने उसकी हिस्ट्रीशीट खोलकर नया पेंच फंसा दिया। पुलिस के मुताबिक, उमर अंसारी आईएस-191 गैंग का सक्रिय सदस्य है और वह धोखाधड़ी के जरिए सार्वजनिक जमीनों पर कब्जा करता है। इसके अलावा, वह चुनावी भड़काऊ भाषण देने और विवादों में शामिल होने के आरोपों में भी नामजद है। गाजीपुर, मऊ और लखनऊ में उसके खिलाफ धोखाधड़ी, जालसाजी, सरकारी संपत्ति क्षति निवारण अधिनियम, चुनावी अपराध और लोक प्रतिनिधित्व अधिनियम जैसी धाराओं के तहत कई मामले दर्ज हैं। पुलिस सूत्रों के अनुसार, हिस्ट्रीशीट खुलने के बाद उमर अंसारी की गतिविधियों पर कड़ी निगरानी रखी जाएगी और खुफिया एजेंसियां भी उसकी हर हरकत पर अलर्ट हैं। जानकार मानते हैं कि मुख्तार परिवार की लगातार निगरानी और कानूनी दबाव बढ़ाना पुलिस-प्रशासन की रणनीति का हिस्सा है। गाजीपुर पुलिस अधीक्षक डॉ ई राजा ने बताया कि उमर अंसारी के ऊपर सात मुकदमे दर्ज हैं, जो गाजीपुर समेत कई जनपदों में विचाराधीन हैं।

कानपुर-दिल्ली फ्लाइट में दिखा चूहा मची हड़कंप, यात्रियों को किया डी-बोर्ड

कानपुर (एजेंसी)। कानपुर एयरपोर्ट पर एक विमान में अचानक चूहे के दिखाई देने से हड़कंप मच गया। रविवार को दिल्ली के लिए उड़ान भरने वाली इस फ्लाइट में चूहे के केबिन में घूमते होने की सूचना मिलने पर सुरक्षा को ध्यान में रखते हुए सभी यात्रियों को डी-बोर्ड कर दिया गया। जानकारी के अनुसार, दिल्ली से कानपुर पहुंचने के बाद यह फ्लाइट दोपहर 2:50 बजे पुन: दिल्ली के लिए रवाना होने वाली थी। उड़ान भरने से कुछ समय पहले ही क्रू मेंबर ने केबिन में चूहे को देखा। इसके बाद एयरपोर्ट स्टाफ ने तुरंत सर्च ऑपरेशन शुरू किया। एयरलाइंस के टेक्निकल स्टाफ और ग्राउंड क्रू ने मिलकर विमान के हर हिस्से की गहन जांच की ताकि उड़ान के दौरान किसी तरह का खतरा न बने। इस दौरान यात्रियों को एयरपोर्ट लाउंज में सुरक्षित स्थान पर बैठाया गया। यात्रियों ने घटना को लेकर हल्की नाराजगी जताई, लेकिन अधिकांश ने एयरलाइन के फैसले को सुरक्षा की दृष्टि से उचित माना। इस घटना पर एयरपोर्ट अधिकारियों का कहना था कि जब तक चूहे का पता नहीं चल जाता और विमान पूरी तरह सुरक्षित घोषित नहीं होता, तब तक उड़ान नहीं भरेगी। इसी के साथ ही एयरलाइन प्रबंधन ने कहा कि यात्रियों को किसी भी तरह की असुविधा न हो, इसके लिए लगातार जानकारी दी जा रही है।

निर्माणाधीन पुल के पास खुदे गड्ढे में डूबने से तीन चचेरी बहनों की मौत

बहराइच (एजेंसी)। यूपी के बहराइच जिले के कोतवाली देहात थाना क्षेत्र के कोडरी गांव में बरसात के पानी से भरे गड्ढे में शनिवार को डूबने से तीन नाबालिग चचेरी बहनों की मौत हो गई। मीडिया रिपोर्ट के मुताबिक परिवार के एक सदस्य ने बताया कि चित्तौरा झील के पास निर्माणाधीन पुल के निकट जेसीबी से गहरा गड्ढा खोदा गया था और उसमें बारिश का पानी भर गया था वह तालाब जैसा लग रहा था। चित्तौरा मसीहाबाद गांव निवासी प्रियांशी, दिव्या और लक्ष्मी तीन की उम्र करीब छह-सात साल थी। घर से खेलने निकली थीं और गड्ढे के किनारे खेलते समय उसमें डूब गईं। उन्होंने बताया कि गोताखोरों की मदद से बच्चियों को बाहर निकालकर अस्पताल ले जाया गया, जहां चिकित्सकों ने उन्हें मृत घोषित कर दिया। सदर क्षेत्र की एसडीएम ने बताया कि तीनों बच्चियों के शवों का पोस्टमार्टम कराया जाएगा और उनके परिजनों को सरकारी सहायता दिलाई जाएगी। उन्होंने कहा कि मामले में कार्रवाई की जा रही है।

चर्चाओं में नीता अंबानी का 50 करोड का नेकलेस

मुंबई (एजेंसी)। शाहरुख खान के बेटे आयरन खान ने वेब सीरीज द बेड्स ऑफ बॉलीवुड वेब सीरीज का डेब्यू किया। इसमें शाहरुख खान ने बेटे को निदेशक के रूप में लॉन्च किया है। इस लॉन्चिंग में नीता अंबानी विशेष अतिथि के रूप में शामिल हुई थी। उन्होंने एक दुर्लभ नेकलेस जिसकी कीमत लगभग 50 करोड रुपए बताई जा रही है। उसको पहनकर कार्यक्रम में शामिल हुई थी। इस नेकलेस में पाराइबा और हार्ट शेप डायमंड जड़े हुए हैं। इस नेकलेस की कीमत वर्तमान में 50 करोड रुपए की बताई जा रही है।

डिप्टी सीएम शिंदे का एक्स अकाउंट हैक कर पाकिस्तान और तुर्की के झंडों वाले पोस्ट किए, मचा हड़कंप

मुंबई (एजेंसी)। महाराष्ट्र के उप-मुख्यमंत्री एकनाथ शिंदे के आधिकारिक 'एक्स' (पूर्व ट्विटर) अकाउंट को सुबह-सुबह हैक कर लिया गया। हैकर्स ने अकाउंट पर पाकिस्तान और तुर्की के राष्ट्रीय झंडों वाली पोस्ट साझा कीं, जिनमें से कुछ को तुरंत ही हटाया गया। शिंदे के कार्यालय ने बताया कि तकनीकी टीम ने तुरंत कार्रवाई कर अकाउंट को 30 से 45 मिनट के भीतर रिकवर कर लिया और अकाउंट अब सामान्य रूप से सक्रिय है।

घटना की जानकारी मिलने के बाद संबंधित टीम ने साइबर क्राइम सेल को सूचित किया और जांच शुरू कर दी गई है। मीडिया रिपोर्टों के अनुसार हैकिंग के समय यह गतिविधि उस दिन हुई जब भारत-पाकिस्तान के बीच एशिया कप का मुकाबला भी खेला जाना था, जिससे सोशल मीडिया पर तेज प्रतिक्रिया और चिंता देखी गई। विपक्ष और सोशल मीडिया उपयोगकर्ताओं ने राजनीतिक अकाउंट्स की संवेदनशीलता पर सवाल उठाए हैं। शिंदे कार्यालय की ओर से कहा गया है, कि सोशल मीडिया टीम ने तत्काल पासवर्ड बदलकर और प्लेटफॉर्म से दो-स्तरीय प्रमाणीकरण (2एफए) लागू कर अकाउंट सुरक्षित कर लिया। फिलहाल मामले की तकनीकी और फोरेंसिक जांच जारी है ताकि यह पता लगाया जा सके कि हैकिंग किस स्रोत या ग्रुप द्वारा की गई और क्या इसका राजनीतिक या साइबर-क्रिमिनल मकसद था।

इस संबंध में विषय विशेषज्ञों का कहना है कि राजनेताओं और सार्वजनिक हस्तियों के सोशल मीडिया अकाउंट सुरक्षा की दृष्टि से प्रमुख लक्ष्य बन गए हैं। पिछले कुछ वर्षों में भारत में उच्च-प्रोफाइल हैकिंग और डेटा लीक की घटनाओं में वृद्धि देखी गई है, जिससे टेलीकॉम, वित्तीय सेवा तथा सरकार की सूचनात्मक प्रणालियों की सुरक्षा पर सवाल उठ रहे हैं। एक्सपर्ट्स का सुझाव है कि सार्वजनिक खाता संचालक नियमित रूप से अकाउंट ऑडिट, मजबूत पासवर्ड नीति और मल्टी-फैक्टर ऑथेंटिकेशन अपनाए जाने चालिए।

चुनाव लड़ने की उम्र घटाने की सिफारिश से चुनाव आयोग नहीं रखता इत्तेफाक

-कहा- इस अवस्था में परिपक्वता नहीं आती कि युवा अहम जिम्मेदारी संभाल सकें

नई दिल्ली (एजेंसी)। चुनाव लड़ने की उम्र 21 साल करने को लेकर संसद की स्थायी समिति की सिफारिश से चुनाव आयोग इत्तेफाक नहीं रखता। चुनाव आयोग को इस बाबत समिति के सुझाव वाली रिपोर्ट मिली तो उसने सहज प्रतिक्रिया राय समिति को भेजी कि वह चुनाव लड़ने की उम्र घटाने के पक्ष में नहीं है, क्योंकि 18 साल की उम्र में अगर एक वोट दे भी दिया तो इस अवस्था में इतनी परिपक्वता नहीं आती कि युवा संसद या विधान मंडल जैसे अहम पद की जिम्मेदारियों को संभालने और समझने की गंभीरता हासिल कर ले।

संसद की स्थायी समिति की अगुआई बीजेपी सांसद बृजलाल कर रहे हैं। समिति की रिपोर्ट में कहा गया है कि विकसित और नए जमाने की सोच वाले युवाओं को लोकतांत्रिक प्रक्रियाओं से रूबरू कराने देश को चुनाव लड़ने की न्यूनतम उम्र 25 साल से घटाकर 21 साल करने पर फिर से विचार करना चाहिए। हालांकि विशेषज्ञों का मानना है कि इस बदलाव को गति देने के बाद देशभर में कम से कम आठ करोड़ और युवा चुनाव लड़ने की योग्यता पूरी करने लायक हो जाएंगे।

स्थायी समिति ने विधि और न्याय मंत्रालय को मशविरा देने के लिए भेजी रिपोर्ट के साथ उम्मीद जताई कि कई विभागों के बीच इस प्रस्ताव पर व्यापक चर्चा होनी चाहिए। इससे युवा संगठनों, संविधान विशेषज्ञों, सामाजिक और नागरिक संगठनों के हितधारकों को शामिल कर उनकी राय ली जाए। बता दें चुनाव लड़ने की उम्र घटाने की एक सिफारिश 2023 में भी गई थी, तब चुनाव लड़ने की उम्र 25 साल से घटाकर 18 साल करने की सिफारिश की गई थी। अगस्त 2023 में संसद की स्थायी समिति ने विधानसभा और लोकसभा चुनाव लड़ने की न्यूनतम आयु 25 से घटाकर 18 साल करने की सिफारिश की थी।

समिति ने पश्चिमी देशों मसलन कनाडा, ब्रिटेन, ऑस्ट्रेलिया और न्यूजीलैंड जैसे देशों की नकल में यह सिफारिश की थी। इन देशों में मतदान करने और चुनाव लड़ने की उम्र एक समान है। भारत में फिलहाल कुल मतदाता एक अरब के आसपास हैं यानी कुल 99 करोड़ से ज्यादा। उनमें से 20 से 29 साल के औसत वाले 19 करोड़ 74 लाख मतदाता हैं, जबकि इनमें भी 21 से 25 साल की उम्र के बीच 8 करोड़ मतदाता हैं। देशभर में 18 से 19 साल के मतदाता 1 करोड़ 84 लाख हैं।

जांच में खुलासा : सुपारी देकर कराई गई दिशा पाटनी के घर फायरिंग

लखनऊ (एजेंसी)। उत्तर प्रदेश के बरेली में अभिनेत्री दिशा पाटनी के घर पर हुई फायरिंग मामले में पुलिस जांच के बाद बड़ा खुलासा हुआ है। इस वारदात को सुपारी देकर अंजाम दिलाया गया है। जांच में सामने आया है कि फायरिंग की जिम्मेदारी संभालने वाले रविंद्र और उसका साथी अरुण, एसटीएफ मुठभेड़ में ढेर हो चुके हैं। वहीं, रेकी के लिए ऐसे बदमाशों को मोहरा बनाया गया जिनकी कोई क्रिमिनल हिस्ट्री नहीं थी। दिल्ली स्पेशल सेल ने रेकी करने वाले बागपत के दो नाबालिगों को गिरफ्तार किया है। अब बरेली पुलिस भी इन नाबालिगों से जल्द पूछताछ करेगी, ताकि इस वारदात की पूरी साजिश का खुलासा हो सके। दिशा के घर फायरिंग के बाद पड़ोसियों को भारी दिक्कतों का सामना करना पड़ा रहा है। पूरी गली की किलेबंदी कर दी गई है, लेकिन पड़ोसियों के दिलों दिमाग पर आज भी घटना वाली रात की तस्वीर ताजा है। पड़ोसियों की माने तो आज तक इस गली में कभी भी कोई विवाद तक नहीं हुआ था। मगर, दुश्मनी पाटनी जी की और दहशत हम लोगों को मिली है। जब से दिशा पाटनी के घर पर फायरिंग की वारदात हुई है तब से लेकर अब तक इस गली में आने जाने वाले हर एक इंसान कि पहले सघन तलाशी ली जाती है। उसके बाद उसे आगे भेजा जाता है। पड़ोसियों का साफ तौर पर कहना है कि पाटनी के घर पर फायरिंग के बाद उनकी स्वतंत्रता छीन गई है।

दिल्ली में मौसम हुआ साफ तो गर्मी ने दिखाए तेवर, उत्तराखंड-बिहार में हो सकती है बारिश

नई दिल्ली (एजेंसी)। दिल्ली में मौसम साफ है। यहां आने वाले दिनों में भी इसी तरह का मौसम बने रहने की उम्मीद है। इस तरह से यूपी के भी ज्यादातर जिलों में बारिश की संभावना नहीं है। हालांकि बिहार और उत्तरांखड के कई जिलों में बारिश होने की आशंका जताई जा रही है। बीते दिनों बारिश की वजह से हिमाचल प्रदेश, उत्तराखंड और पंजाब में बाढ़ जैसे हालात हो गए थे। फिलहाल इन राज्यों में बारिश का मिला-जुला असर है।

मीडिया रिपोर्ट के मुताबिक दिल्ली-एनसीआर में पिछले कई दिनों से मौसम साफ है। मौसम विभाग की मानें तो आज भी बारिश होने की उम्मीद नहीं है। वहीं लगातार तेज धूप की वजह से दिल्ली-एनसीआर के तापमान में बढ़ोतरी देखी गई। मौसम विभाग के मुताबिक आज भी दिल्ली-एनसीआर के इलाके में बादलों की आवाजाही जारी रहेगी, लेकिन बारिश की उम्मीद नहीं है।

यूपी के ज्यादातर जिलों में बारिश नहीं होने की उम्मीद जताई जा रही है। हालांकि यहां कुछ जिलों में बारिश हो भी सकती है। मौसम विभाग की मानें तो यूपी में भी अगले कई दिनों तक बारिश की संभावना नहीं है। इसके अलावा बिहार के कई जिलों में बारिश हो सकती है। मौसम विभाग का कहना है कि बिहार के कई जिलों में अगले चार-पांच दिनों तक हल्की बारिश हो सकती है। इसका तापमान पर खास असर नहीं होगा, लेकिन बारिश की वजह से लोगों को गर्मी से राहत मिलेगी।

वहीं मध्य प्रदेश में भी अगले कुछ दिनों तक बारिश होने की संभावना है। मौसम विभाग ने अगले 24 घंटों के लिए कई जिलों में अलर्ट जारी किया है। मप्र के बड़वानी, अलीराजपुर और धार जिलों में भारी बारिश हो सकती है। इस दौरान आंधी और बिजली गिरने को लेकर भी अलर्ट जारी किया है। मौसम विभाग ने भोपाल, विदिशा, रायसेन, इंदौर, रतलाम, उज्जैन, ग्वालियर और भिंड समेत 27 जिलों में भी गरज-चमक के साथ बारिश होने का अनुमान जताया है।पहाड़ी राज्यों की बात करें तो उत्तराखंड में फिलहाल बारिश से राहत के आसार जताए जा रहे हैं। हालांकि कुछ पहाड़ी जिलों में आज भी हल्की बारिश हो सकती है। इसके अलावा 24 सितंबर के बाद उत्तराखंड के कई जिलों में बारिश होने की संभावना है। इसी तरह से हिमाचल प्रदेश में भी मौसम फिलहाल साफ रहेगा। इस दौरान प्रशासन की ओर से सड़कों को फिर से खोलने की कवायद की जा रही है। पिछले दिनों हुए भूस्खलन की वजह से हिमाचल प्रदेश में कई सड़कें बंद कर दी गई थीं।

गरबा आयोजनों को लेकर विहिप ने जारी की एडवाइजरी, केवल हिंदुओं को प्रवेश की अनुमति

-एंट्री गेट पर जांच के साथ हो पूजा करने का प्रावधान, विवाद शुरु

नागपुर (एजेंसी)। महाराष्ट्र में नवरात्रि से पहले गरबा आयोजनों को लेकर विवाद छिड़ गया है। दरअसल विश्व हिंदू परिषद (विहिप) ने शनिवार को एक एडवाइजरी जारी करते हुए कहा है, कि राज्य के गरबा-डांडिया कार्यक्रमों में केवल हिंदुओं को ही प्रवेश की अनुमति दी जाए। विहिप ने आयोजकों से कहा कि एंट्री गेट पर आधार कार्ड की जांच की जाए और प्रवेश से पहले प्रतिभागियों को तिलक लगाया जाए, हाथों में रक्षा सूत्र बांधा जाए तथा किसी हिंदू देवी-देवता की पूजा की जाए।

विहिप के राष्ट्रीय प्रवक्ता श्रीराज नायर ने कहा कि गरबा सिर्फ नृत्य नहीं, बल्कि देवी को प्रसन्न करने की एक पूजा पद्धति है। इसलिए केवल वे लोग इसमें भाग लें, जिनकी आस्था देवी-देवताओं में है। उन्होंने यह भी दावा किया कि इस तरह के कदम लव जिहाद जैसे मामलों को रोकने के लिए जरूरी हैं। विहिप की इस एडवाइजरी पर राज्य की राजनीति गरमा गई है। महाराष्ट्र के मंत्री और भाजपा नेता चंद्रशेखर बावनकुले ने कहा कि आयोजकों को यह अधिकार है कि वे अपने कार्यक्रमों में नियम तय करें। उन्होंने कहा कि यदि आयोजकों को पुलिस से अनुमति है, तो उन्हें किसी भी नियम को लागू करने में दिक्कत नहीं होनी चाहिए। भाजपा के प्रदेश पदाधिकारियों ने भी गरबा को हिंदू आयोजन बताते हुए गैर-हिंदुओं की भागीदारी का विरोध किया है।

विपक्ष बोला- सांप्रदायिक सौहार्द्र बिगाड़ने की हो रही कोशिश

विपक्षी दलों ने विहिप और भाजपा पर समाज में सांप्रदायिक सौहार्द्र बिगाड़ने का आरोप लगाया है। शिवसेना (उद्धव बालासाहेब ठाकरे) के नेता संजय राउत ने कहा कि देश में सांप्रदायिक जहर फैलाने की कोशिश की जा रही है, जो महाराष्ट्र और देश दोनों के लिए घातक है। कांग्रेस नेता विजय वडेट्टीवार ने इसे समाज को धर्म के नाम पर बांटने की साजिश बताते हुए भाजपा पर हमला बोला। बता दें कि इस साल नवरात्रि 22 सितंबर से 1 अक्टूबर तक मनाई जाएगी।

क्या बिहार में लालू यादव के मुस्लिम-यादव समीकरण में सेंधमारी कर देगा मोदी मैजिक

-इस बार कहीं यादव वोटर तेजस्वी को झटका नहीं दे दें

नई दिल्ली (एजेंसी)। बिहार की राजनीति के केंद्र में हमेशा से ही जाति रही है। प्रदेश की आबादी में यादव समुदाय करीब 14 प्रतिशत है। जो प्रदेश में अन्य किसी भी जाति से अधिक है। जाहिर है कि बिहार की राजनीति इसी जाति के इर्द गिर्द घूमती है। 2020 के विधानसभा चुनावों में यादवों के बल पर ही आरजेडी प्रदेश की सबसे बड़ी पार्टी बनी थी। ये बात अलग है कि बीजेपी और जेडीयू ने तेजस्वी यादव के मुख्यमंत्री बनने पर ग्रहण लगा दिया।

हालांकि 2 साल बाद ही नीतीश बीजेपी से नाता तोड़कर आरजेडी के साथ आ गए। तेजस्वी डिप्टी सीएम बने और तेजप्रताप को भी मलाईदार मंत्रालय मिला। लेकिन फिर लालू परिवार के दबाव से परेशान होकर मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने फिर पलटी मारी और एनडीए के साथ आ गए। तब से अब तक नीतीश एनडीए के साथ हैं और बिहार की सीएम कुर्सी पर विराजमान हैं। 2025 में फिर आरजेडी को उम्मीद है कि यादव और मुस्लिम मतदाता उनके साथ हैं। पर लोकसभा चुनावों में आरजेडी को मिली मात से ऐसा लगता है कि यादव वोटर्स का आशीर्वाद लालू परिवार को उस तरह से नहीं मिल रहा है जिस तरह से मिला करता था। जाहिर है कि अगर ऐसा विधानसभा चुनाव में होता है, तब आरजेडी एक बार सत्ता से बहुत दूर रह जाएगी।

राष्ट्रीय जनता दल (राजद) के संस्थापक लालू प्रसाद यादव ने 1990 के दशक से यादवों को सामाजिक न्याय, पिछड़े वर्गों की आवाज और एमवाय (मुस्लिम-यादव) गठजोड़ के नाम पर एकजुट किया। तब से यादव वोट लालू परिवार (लालू, राबड़ी देवी, तेज प्रताप और तेजस्वी यादव) की विरासत बन गया। लेकिन 2025 विधानसभा चुनावों से पहले इसके दरकने के संकेत मिलने लगे हैं। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का मोदी मैजिक विकास, कल्याण योजनाओं और हिंदुत्व के मिश्रण ने यादव वोटों में सेंध लगाई है। अगर 2024 लोकसभा चुनावों जितना भी यादव आरजेडी से दूर हुए तब पार्टी का बैंड बजना तय है।

राजद का वोट बैंक एमवाय समीकरण पर टिका है, जो बिहार में करीब 32 प्रतिशत बनता है। राजद ने महागठबंधन (राजद-कांग्रेस-वामपंथी) के साथ 144 सीटों पर चुनाव लड़ा और 75 सीटें जीतीं और राज्य में सबसे बड़ी पार्टी बनी। यादव-बहुल क्षेत्रों जैसे सारण, मधेपुरा, सुपौल और झंझारपुर में राजद का जलवा दिखा। सारण जिले (यादव बहुल) में महागठबंधन ने 10 में से 7 विधानसभा सीटें जीतीं। कुल वोट शेयर 23.11 प्रतिशत था, जिसमें यादव वोटों का बड़ा हिस्सा (70-80 प्रतिशत) लालू की पार्टी को मिला। जाहिर है कि आरजेडी अपनी इस सफलता को दुहराना चाहेगी।

लेकिन 2024 के लोकसभा चुनाव आते आते बिहार में राजद ने 23 सीटों पर चुनाव लड़ा और 4 सीटें ही जीत सकी। पाटलीपुत्र (मीसा भारती), जहानाबाद (सुरेंद्र प्रसाद यादव), औरंगाबाद (अभय कुशवाहा), और बक्सर (सुधाकर सिंह) ही अपनी सीट जीत सके। राजद ने 8 यादव उम्मीदवार उतारे, जिसमें से 2 (मीसा भारती और सुरेंद्र प्रसाद यादव) को विजय मिली। अन्य यादव उम्मीदवार जैसे रोहिणी आचार्य (सारण), ललित कुमार यादव (दरभंगा), और जय प्रकाश नारायण यादव (बांका) चुनाव हार गए। मोदी का मैजिक 2014 से यादवों पर असर दिखा रहा है। एनडीए ने विकास (इंफ्रास्ट्रक्चर, कल्याण) और हिंदुत्व को मिलाकर राजद के जातिगत नैरेटिव को चुनौती दी। 2025 चुनावों में यह और तेज हुई है, क्योंकि बिहार में बेरोजगारी (7.6 प्रतिशत, सीएमआईई 2025) और प्रवासन जैसे मुद्दों पर एनडीए ने ठोस कदम उठाए हैं। एनडीए सरकार ने बिहार को केंद्र से 9.23 लाख करोड़ का पैकेज दिया (कांग्रेस के 2.80 लाख करोड़ के मुकाबले) कहीं अधिक था। पीएम किसान (10,000 रुपये सालाना), उज्ज्वला (फ्री गैस), फ्री राशन और पीएमएवाय ने यादव किसानों/मजदूरों को लुभाया है।

राम मंदिर, अयोध्या यात्रा और विकास राज बनाम जंगल राज नैरेटिव ने यादवों को जोड़ा है। बीजेपी ने यादव उम्मीदवार उतारे, जैसे दरभंगा में गोपाल जी ठाकुर। 2025 में मोदी की मोतिहारी-सीवान रैलियों में हजारों करोड़ के प्रोजेक्ट मिले। जाहिर है कि यादव इलाकों में मोदी सरकार लेकर उत्साह है। दरअसल यूपी-बिहार का वोटिंग पैटर्न रहा है कि जहां यादव वोट जाते रहे हैं वहां अति पिछड़ों का वोट नहीं जाता है। 2024 में उत्तर प्रदेश में अखिलेश यादव ने इस पहली बार समझा। उन्होंने केवल 5 यादवों को टिकट दिया,

जबकि 2019 में उन्होंने 10 यादवों को टिकट दिया था। गैर यादव ओबीसी और ईबीसी (अति पिछड़ों) को 2019 में जहां समाजवादी पार्टी ने केवल 6 सीट दिया था वहीं 2024 में 23 सीट दिया। इसका फायदा हुआ। प्रदेश में समाजवादी पार्टी ने बीजेपी से बढ़त हासिल कर ली। जाहिर है कि यही प्रवृत्ति बिहार में भी दिख रही है। इसलिए आरजेडी भी इसी नीति पर चल सकती है। पर आरजेडी की दुविधा यह है कि 2020 के चुनावों में यादव कैंडिडेट्स की जीत की स्ट्राइक सबसे शानदार रही।

नवबिहार मीडिया प्रा. लि. के लिए मुद्रक एवं प्रकाशक डॉ. रामाज्ञा तिवारी द्वारा विश्वेश्वरा पब्लिकेशनंस एलएलपी की ओर से शिवासाईं पब्लिकेशन प्राइवेट लिमिटेड, नियर टेंडर बागीचा पेट्रोल पंप, रातू, रांची (झारखंड)- 835222 से मुद्रित एवं उद्योग भवन मार्ग, 19 A कोकर औद्योगिक क्षेत्र रांची- 834001 (झारखंड) से प्रकाशित।
संपादक- डॉ. रामाज्ञा तिवारी, कार्यकारी संपादक- भीष्म सिंह, प्रबंध संपादक- पंकज कु. सिंह*, प्रधान संपादक- देवेंद्र सिंह (*पीआरबी एक्ट के तहत खबरों के चयन के लिए जिम्मेदार), **प्रबंधक- नरेंद्र कुमार सिंह**. 9334331934, 7903538992, 9570107019, **RNI Regn.: JHAHIN/2011/40902**